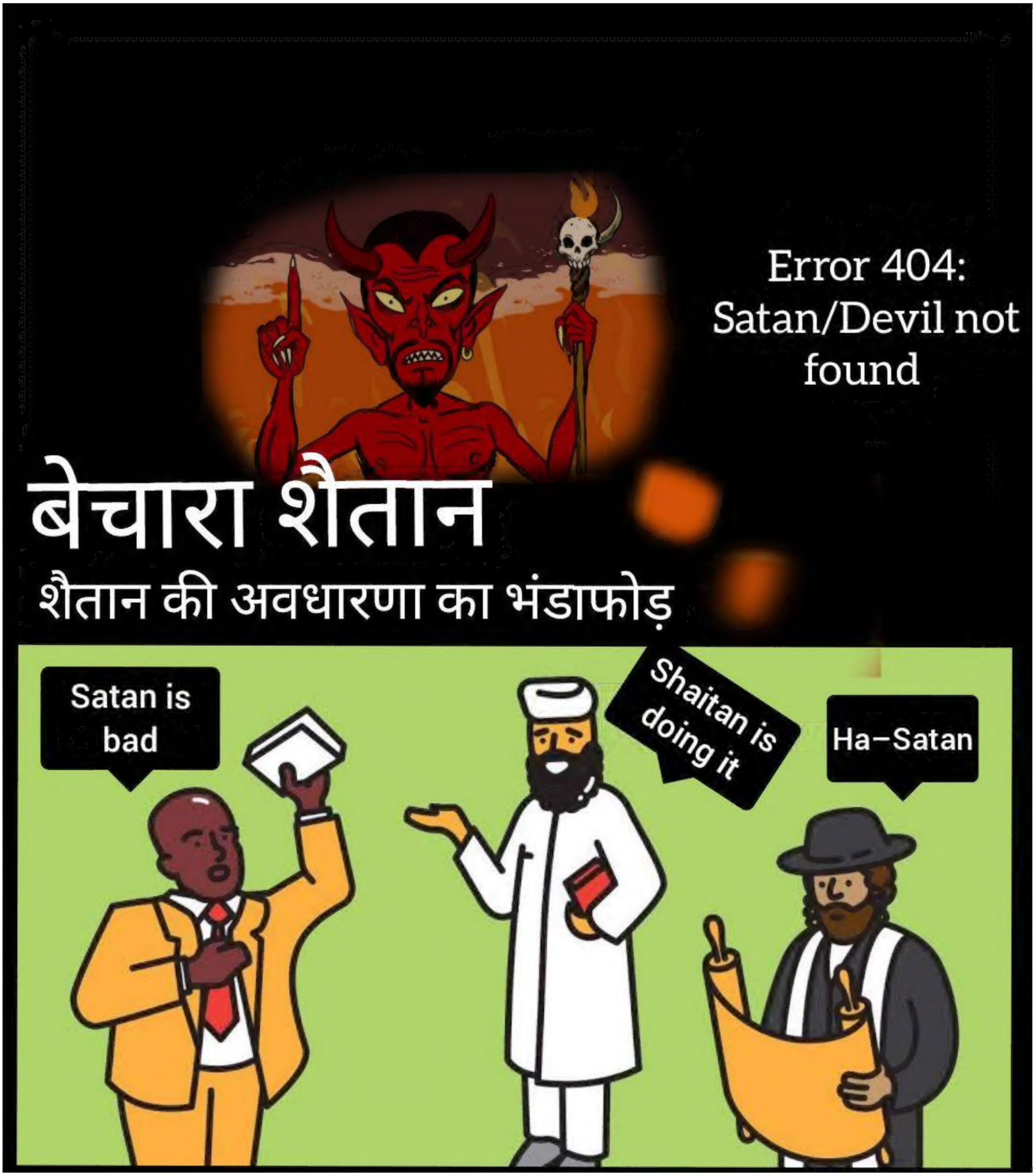


Error 404:
Satan/Devil not
found
बेचारा शैतान
शैतान की अवधारणा का भंडाफोड़
Satan is bad
Shaitan is doing it
Ha–Satan

भूमिका

यह पुस्तक एक बहुचर्चित प्रोपगंडा का भंडाफोड़ करने के लिए लिखी जा रही है, जिसमे इस्लामिक , कम्युनिस्ट और ईसाई मजहब के लोग हिंदू धर्म या गैर इब्राहीमी धर्म के देवी देवताओं को शैतान बोलकर या शैतान के साथी होने का आरोप मढ़कर, उनमें बुराई ढूंढते और दिखाते है। ऐसे तो सामने से यह मजहबी लोग भाईचारे की बाते करके हिन्दुओं को लुभाते है लेकिन असल में इनके इरादे सिर्फ आपको मूर्ख बनाकर अपने मजहब में लाना ही रहता है।

हमारा उद्देश्य शैतान नाम के किसी भी काल्पनिक किरदार में आपका विश्वास दिलवाना नही है और न ही हिंदू धर्मावलम्बी इसके साथ कोई भी सरोकार रखते है। इस पुस्तक में शैतान नाम के किरदार के जरिए हमने खुद शैतान के असली इतिहास और उसके नाम से दूसरे धर्मो और जातियों के लोगो पर किए जाने वाले अपराधो को उजागर किया है, जिससे आप समझेंगे की शैतान का सहारा लेकर अब्राहिमिक कल्ट कितने कितने गुनाह अभी तक कर चुका है?

हमारा मानना यही है, की मानव अपने मन के अंदर ही सद्गुणों और दुर्गुणों दोनो को समेटे हुए है और वह चाहे तो अपनी इच्छाशक्ति से अपनी बुराइयों का दमन कर सकता है।

लेखक : मूक योद्धा

भाग 1 : रूपरेखा

मिस्टर शैतान एक बड़ा ही रहस्यमई किरदार है, जिसका वर्णन तकरीबन तकरीबन हर अब्राहमिक मजहब (यहूदियत, ईसाइयत और इस्लाम) में मिलता है। शैतान don फिल्म के अमिताभ जैसे हो गया है जिसे 3 मजहब के लोग ढूंढ रहे है लेकिन उसे पकड़ पाना मुमकिन ही नहीं नामुमकिन है, क्योंकि उसका कोई अस्तित्व नही मिलता है।
शैतान हर बार अब्राहमिक कल्ट द्वारा अपने दुश्मनों को फसाने के बड़े काम आया है लेकिन फिर भी यह उससे चिड़ते है और उसी को अपना दुश्मन मानते है।
शैतान को कभी मर्द बना दिया गया, कभी औरत, कभी बकरा बना दिया गया और न जाने क्या क्या?? कभी वह इब्रहिमिक कल्ट के भगवान यहोवाह का नौकर बन जाता है और कभी तो उसके समकक्ष बन जाता है।
शैतान की सबसे बड़ी दुविधा ये है की उसने आजतक खुद किसी को अपने एजेंट होने या अपने से जुड़े होने का सर्टिफिकेट नहीं दिया लेकिन इब्रहिमिक कल्ट वाले हर गैर मजहब वाले को शैतान के एजेंट या सहायक बना देते है।
सवाल है क्यो??

इसके उत्तर के लिए हमे शैतान नाम के इस चरित्र को पूरा समझना पड़ेगा।

मिस्टर शैतान का इतिहास भी बड़ा रोचक है जिसे हम शुरुआती दौर से समझेंगे की आखिर मिस्टर शैतान का माजरा शुरू किधर से होता है जिसमे हम यहूदी , ईसाई और इस्लामी मजहब के इतिहास से शुरू करके, शैतान की अवधारणा के आधुनिक युग में फैलने और शैतान के नाम पर अनेकों मासूम लोगों के शिकार होने तक की बात को देखेंगे।

भाग 2: शैतान का यहूदी विवरण

इब्राहिमिक मजहबो ने हमेशा से ही शैतान की अवधारणा को एक हथियार की तरह इस्तेमाल किया है, और इसकी शुरुआत इब्राहिम के मजहब यहूदियत से ही होती है।



आज दुनिया के नक्शे में जिधर इजराइल है, यहाँ पर 500 ईसा पूर्व (आज से करीब करीब 2500 साल पहले) यहां पर यहूदा और इजराइल नाम के शहरों के निर्माण हुआ जिधर अब्राहमिक परंपरा के लोगों यानी यहूदी लोगों का प्रभुत्व बनना शुरू हुआ था। शुरू में इन शहरों में मूर्तिपूजक लोग भी रहते थे लेकिन समय के अंतराल में यहूदी लोगों ने उन्हें समाप्त करके अपना आधिपत्य कर लिया।

यह मूर्तिपूजक लोग बाल नाम के एक देवता की पूजा करते थे जिसे बाद में शैतान और इसके पूजा करने वालों को शैतानी घोषित किया गया था।



आज के समय के मिडिल ईस्ट के देश सीरिया, फिलिस्तीन, लेबनान, इराक़ में मेसोपोटामियन मूर्तिपूजक और गैर इब्रहिमिक मत संप्रदाय और सभ्यता विकसित हुई, उसी समय में एक अलग गैर मूर्तिपूजक और इब्रहिमिक मत की भी स्थापना यहूदियत के रूप में इजराइल के आसपास के क्षेत्रों में हुई। जिधर मूर्तिपूजक सभ्यता में अनेको देवी देवताओ का जमावड़ा था जिनकी वह मूर्तियां बनाकर पूजा करते थे, इब्रहिमिक कल्ट जिसकी शुरुआत मिथिहासिक इब्राहिम के साथ जुड़ा है जो की अपने एक खुदा EL को मानता था।
इब्राहिम का मजहब अपने एक खुदा El या यहोवाह के अलावा और किसी की इबादत को सख्ती से मना करता था जो की उस कबीलाई दौर में बहुत आम बात थी। ये कबीले आपस में लड़ाई भी लड़ते थे क्यूंकि यह मानते थे की दूसरे कबीले का खुदा या देवी देवता झूठा है और उनका अपना खुदा ही सच्चा है। !

एक बहुत ही विचित्र लेकिन रोचक बात है कि ऐसे तो अब्राहमिक मजहब ही शैतान की सबसे ज्यादा बाते करते है लेकिन पुरानी यहूदी किताब तोरह में शैतान नाम के किसी भी चरित्र का कोई जिक्र नही मिलता है। इससे यह बात आप समझ सकते है की शैतान नाम का चरित्र पुराने यहूदी लोगों की अवधारणा या मानसिकता का हिस्सा नहीं था। फिर यह शैतान नाम का किरदार आया किधर से????

यहूदी लोगो का इतिहास के अनुसार बेबीलोनियन और अश्शूरियों कबीलो के जमाने में यहूदी इन कबीलो के द्वारा पराजित होकर गुलाम के तौर पर ईरान के इलाको में रहे थे!!
बेबीलोन के राजा नब्बूकन्नाजर द्वितीय (Nebuchadnezzar II) ने साल 587 ईसा पूर्व के आसपास यरूशलेम नाम के यहूदी शहर के ऊपर चढ़ाई कर दी थी और यरूशलेम में बने सोलोमन के बनाये पुराने मंदिर को नष्ट करके उसमें लूटपाट की थी। इसके बाद बहुत से यहूदी इन बेबीलोन के मूर्ति पूजक समाज के लोगों के अधीन गुलाम रहे थे।

लेकिन फारस के राजा कुरुष (Cyrus) ने कुछ समय के बाद ही बेबीलोनियन और अश्शूरियों के इलाकों पर अपना अधिपत्य कर लिया था।
इसके बाद यहूदी फारसी लोगो के अधीनस्त रहने लगे थे लेकिन फारसी बादशाह जैसे कुरुष महान (Cyrus the great) ने यहूदियो के साथ एक हमदर्दी भरा रवैया रखा था और यहूदी लोगो को जेरुसलम लौटने और उनके पवित्र मंदिर को दुबारा बनवाने के लिए सहायता भी दी थी..जिसे कुछ यहूदियो ने सहर्ष स्वीकार कर लिया था... लेकिन कुछ यहूदी फारसी लोगो के अच्छे रवैये से और ईरान के मोह के कारण, फारस छोड़ कर नही गए और उधर ही रह गये थे।

यहूदी लोग जब फारसी लोगो के साथ रहते थे, तो फारसी मत यानी की जरथुस्ट्रवाद की छाप इन लोगो पर भी पड़ी।
जरथुस्ट्रवाद, फ़ारसी पैगम्बर जरथुस्त्र (zoroaster) के द्वारा चलाया गया एक मत था जिसके ईश्वर को वह अहुरा मजदा या ओहरमज़द कहते है। अहुरा माजदा जहां पर विश्व में सभी अच्छी चीजो के रचयता और सृजन कर्ता है वही उनका परम शत्रु है आंगरा मैन्यू या आहरीमान जो की सभी बुराई का कारण और विनाश से जुड़ा है। अहिरमान का जिक्र पारसी किताब अवेस्ता में कई बार आया है जिसमे की आहरीमान, बुरी शक्तियों का नेता है और उसका काम मानवता को अच्छाई से भटकाना है।



फ़ारसी बुराई का देव अहरीमान का चित्र

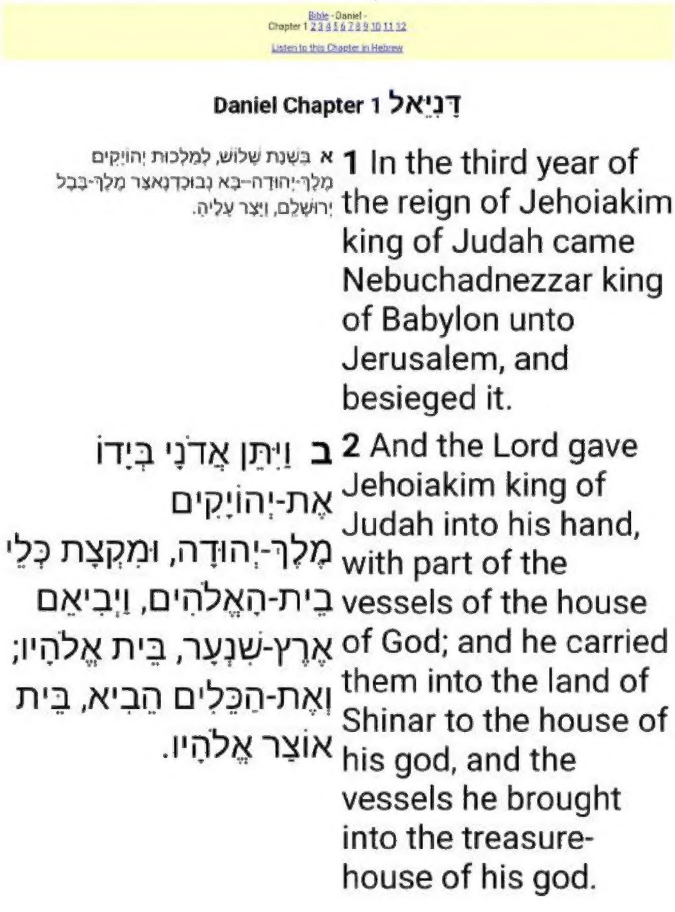
अब इस चीज के तो कई कारण बताये जाते है की यहूदियों ने क्यों अहरीमान जैसे मिलते जुलते एक किरदार को अपने मजहब का हिस्सा बनाया होगा लेकिन मेरे अनुसार और कई बुद्धिजीवियों के अनुसार यह निम्नलिखित कारण एक सबसे प्रमुख कारण रहा होगा। पुरातन समय में जब यहूदियों के मजहब के पुरोहित रब्बियों का जरथुस्त्रवादियो के साथ बातचीत या शास्त्रथ हुआ होगा तो यहूदी रब्बी के सामने एक समस्या आयी होगी जिसे हम आज बुराई की समस्या कहते है।

इस समस्या के अनुसार अगर किसी मत संप्रदाय में अगर ईश्वर ही संसार की बुराई और अच्छे के लिए अकेला जिम्मेदार होता है, तो इसमें यह तर्क ढूंढा जाता है की उस हालत में वह ईश्वर अच्छा और बुरा दोनों होता है। अतैव वह पूजने योग्य है की नही, इसमें प्रतिवादी लोगों को शक उत्पन्न हो सकता है क्योंकि इस प्रणाली में ईश्वर ही अच्छा और बुरा दोनों कर्म करने का काम मानवों के जीवन में कर रहा है।
इस समस्या का सामना ज्यादातर वह मजहब/रिलीजन के लोग करते है जिनके अंदर ईश्वर ही अच्छाई और बुराई के लिए इकलौता जिम्मेदार होता है, क्योंकि इन मजहबो में ईश्वर को ही सभी रचनाओं का आधार माना जाता है और सर्वशक्तिशाली दिखाया जाता है।

और क्योंकि यहूदी लोगो के रिवाजो में शुरुआत से ही ऐसा कोई किरदार नही रहा था जिसे वह दुनिया भर की सारी बुराइयों के लिए दोषी दे सके, अतएव जरथुस्त्रवादी यह कहकर बहस जीत जाते रहे होंगे की यहूदी ईश्वर यहोवाह ही यहूदी मजहब के हिसाब से अच्छाई और बुराई दोनो के लिए कसुरवार है, जो कि एक प्रकार का द्वंद आभास देता है की फिर तो यहूदी ईश्वर की पूजा

करने का कोई फायदा नही। दूसरी ओर जरथुस्त्रवादीओ के पास अहरिमान नाम का एक किरदार सदैव से ही रहा था जिसे वह सभी बुराइयों के लिए कसूरवार ठहरा कर अपने खुदा अहुरा माजदा को बचा लेते थे। इसीलिए यहूदी रब्बियों ने इस समस्या का समझदारी और चतुराई से इलाज खोज निकाला और यहां से यहूदी आहरीमान (जिसे उन्होंने नाम दिया हा-सतान) का जन्म हुआ। एक बहुत ही मजेदार बात भी आपको और सहायता करेगी कि शब्द शैतान का हिब्रू भाषा में शब्दिक अर्थ होता है विपक्ष या सहायक, जिससे यह साफ होता है कि शैतान, यहोवा के गले मे से बुराई का तमगा उतारने के लिए ही बनाया गया था।

शैतान जहां पर शुरुआती हिब्रू किताबो दिखाई नही देता, वही जब यहूदी लोग पहले बैबीलोनियाइ लोगों और फिर फारसी लोगों के यहां पर रहे, उस दौर में लिखी गयी 4 पुस्तके जैसे कि अयूब की किताब(Book of Job), दिवरे हयामिम(Chronicles), ज़ेक्रिय(Zechriah) में भरपूर दिखाई देता है।
इसके लिए प्रमाण के तौर पर हम दानियाल की किताब का पहला भाग देखते है जिसमे नाबूकैंनाज़ेर का इजराइल पर हमला करना और यहूदी मंदिर को तोड़ देना बताया गया है।


Bible - Daniel -
Chapter 1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12
Listen to this Chapter in Hebrew

Daniel Chapter 1 דָּנִיֵּאל

א בִּשְׁנַת שָׁלוֹשׁ, לְמַלְכוּת יְהוֹיָקִים מֶלֶךְ-יְהוּדָה--בָּא נְבוּכַדְנֶאצַּר מֶלֶךְ-בָּבֶל יְרוּשָׁלִַם, וַיָּצַר עָלֶיהָ.

1 In the third year of the reign of Jehoiakim king of Judah came Nebuchadnezzar king of Babylon unto Jerusalem, and besieged it.

ב וַיִּתֵּן אֲדֹנָי בְּיָדוֹ אֶת-יְהוֹיָקִים מֶלֶךְ-יְהוּדָה, וּמִקְצָת כְּלֵי בֵית-הָאֱלֹהִים, וַיְבִיאֵם אֶרֶץ-שִׁנְעָר, בֵּית אֱלֹהָיו; וְאֶת-הַכֵּלִים הֵבִיא, בֵּית אוֹצַר אֱלֹהָיו.

2 And the Lord gave Jehoiakim king of Judah into his hand, with part of the vessels of the house of God; and he carried them into the land of Shinar to the house of his god, and the vessels he brought into the treasure-house of his god.

यहां पर हिब्रू भाषा के इस हिस्से में नाबूकैंनाज़ेर को किसी भी तरह की बुराई से प्रभावित या किसी शैतान नाम के जीव का सेवक नही दिखाया गया है। ऐसा इसिलिए था क्योंकि दानियाल की पुस्तक बेबीलोन हमले से पहले की लगती है और किसी शैतान जैसे प्राणी का कोई अस्तित्व

यहूदी धारणा में उस समय नही था। यहूदी इस घटना को एलोहीम या यहोवाह की इच्छा ही समझते थे।

अब हम उन बाद यहूदी पुस्तको में से शैतान के बताए गये चरित्र और उसके पीछे की कहानियों को देखते है और समझते है कि की शुरुआती शैतान की कहानी में वह कैसा दर्शाया गया??

सबसे पहले हम अयूब की किताब (book of job) में झांकते है तो पाते है कि अयूब की किताब में शैतान यहोवाह का ही एक निजी सेवक की तरह दिखाई देता है। इस पुस्तक के भाग 2 की पंक्ति 1 से 6 में यहोवाह बार बार अपने एक भक्त अयूब की बात करते है और शैतान उसकी भक्ति की परीक्षा लेता है। इस पुस्तक में शैतान यहोवाह का दुश्मन नही बल्कि एक नौकर की तरह पेश आता है। शैतान यहोवाह की अनुमति से ही अयूब की परीक्षा लेता है, उस में भी यहोवा उसे शारीरिक या आर्थिक कष्ट देने को तो कहते है लेकिन शैतान को उसके प्राण लेने की अनुमति नहीं देते है।

शैतान द्वारा अय्यूब को फिर दु:ख देना

2 फिर एक दिन, यहोवा से मिलने के लिये स्वर्गदूत आये। शैतान भी उनके साथ था। शैतान यहोवा से मिलने आया था।
2 यहोवा ने शैतान से पूछा, "तू कहाँ रहा?"

शैतान ने उत्तर देते हुए यहोवा से कहा, "मैं धरती पर इधर–उधर घूमता रहा हूँ।"

3 इस पर यहोवा ने शैतान से पूछा, "क्या तू मेरे सेवक अय्यूब पर ध्यान देता रहा है? उसके जैसा विश्वासी धरती पर कोई नहीं है। सचमुच वह अच्छा और वह बहुत विश्वासी व्यक्ति है। वह परमेश्वर की उपासना करता है, बुरी बातें से दूर रहता है। वह अब भी आस्थावान है। यद्यपि तूने मुझे प्रेरित किया था कि मैं अकारण ही उसे नष्ट कर दूँ।"

4 शैतान ने उत्तर दिया, "खाल के बदले खाल! एक व्यक्ति जीवित रहने के लिये, जो कुछ उसके पास है, सब कुछ दे
डालता है। 5 सो यदि तू अपनी शक्ति का प्रयोग उसके शरीर को
हानि पहुँचाने में करे तो तेरे मुँह पर ही वह तुझे कोसने लगेगा!"

6 सो यहोवा ने शैतान से कहा, "अच्छा, मैंने अय्यूब को तुझे सौंपा, किन्तु तुझे उसे मार डालने की छूट नहीं है।"

अयूब की किताब में ही आपको एक प्रमाण मिलता है कि अयूब की किताब लिखने के समय तक यहोवाह को ही बुराई व अच्छाई का कर्ता माना जाता रहा था। अयूब की किताब के भाग 2 लाइन

9-10 में ही जब अयूब की पत्नी यहोवाह को उसके शरीर पर पड़े फफोले के लिए दोष देने को कहती है तो अयूब कहता है कि जब यहोवा हमारा भला करे तो हम स्वीकार करे और जब बुरा करे तो न स्वीकार करे, यह तो दोहरी बात है।

> **10** अय्यूब ने उत्तर देते हुए अपनी पत्नी से कहा, "तू तो एक मूर्ख स्त्री की तरह बातें करती है! देख, परमेश्वर जब उत्तम वस्तुएं देता है, हम उन्हें स्वीकार कर लेते हैं। सो हमें दु:ख को भी अपनाना चाहिये और शिकायत नहीं करनी चाहिये।" इस समूचे दु:ख में भी अय्यूब ने कोई पाप नहीं किया। परमेश्वर के विरोध में वह कुछ नहीं बोला।

इसके अलावा chronicle की किताब के 21वे चैप्टर में शैतान दाऊद को आकर बहकाता है ताकि वो इजराइल में जनगणना करवाकर यहूदी कबीलो में भेद भाव करे और उसका राज्य अराजकता को प्राप्त हो। जेक्रिया (zechriah) की किताब के तीसरे चैप्टर में शैतान यहोवाह के दायी और खड़ा दिखाई देता है ताकि वह लोगो पर इल्जाम लगा सके। यहाँ पर यहोवाह शैतान को एक सेवक की भांति फटकार लगाते है।

उपरोक्त सभी बातो से साबित होता है की पुरानी यहूदी किताबो में पहले तो शैतान नाम का करैक्टर था नहीं, लेकिन फारस व जरथुस्त्र मत के साथ हुई घटनाओं ने उन्हें मजबूर कर दिया की वह भी आहरीमान जैसा एक किरदार का ईजाद करे। हालांकि इस विचार को सम्पूर्णता से कभी भी अपनाया नहीं गया। बहुत से रब्बी शैतान को अभी भी महज एक तबके के लोगो की सोच मानते है लेकिन सत्य तो यह था शैतान की अवधारणा ने यहूदी मजहब में से ही जन्म ले लिया था।

यहूदी मत की किताबो में शैतान के शरीर या उसके दिखने के बारे में कोई विचार नहीं किया गया है। यानी की आप यहूदी किताबो के हिसाब से शैतान के रूप, उसका शरीर या उसके दिखने के ढंग को नहीं बता सकते है। इसकी वजह साफ़ है की यहूदी लोगो ने शैतान की कहानी को बुनते समय , उसके दिखने के अंदाज पर कभी ध्यान ही नहीं दिया, बस कहानियो में उसके रोल पर ध्यान दिया।

यहूदियत ने फारसी लोगो से मुक्ति cyrus के ज़माने में जरूर पा ली थी लेकिन यहूदी लोग फिर से कई बार गुलाम बने थे। इस बार मकदूनिया के सिकंदर ने जब फारसी Achmenid राजा डेरियस द्वितीय को हराया था तो यहूदी लोग फिर से यूनानी लोगों के गुलाम हो गए। काफी साल के बाद यूनानी लोगो के वंशज रोमन लोगो ने यहूदी लोगो को फिर से गुलाम कर लिया और

उनका राजा हेरोद को बनाया गया। हेरोद ने ही दूसरी बार अपने कुल के देवता यहोवाह के लिए एक नया मन्दिर जेरुसलेम में बनवाया था।

हेरेड के कई साल बाद यहूदी लोगो ने सन 70 ईसा पश्चात (AD) में रोमन साम्राज्य के खिलाफ एक बगावत कर दी थी। इस बात से गुस्सा होकर रोम के जनरल टाइटस के आधिपत्य में रोमन सेना ने जेरुसलेम पर हमला बोल दिया था, जिस में दूसरी बार यह मंदिर आग और तोड़ फाड़ का शिकार बना और छिन्न भिन्न हो गया।

बहुत से यहूदी इसके बाद से ही पूरी दुनिया में छितर कर अलग अलग रहने लगे जैसे कि यूनान, रोम, यूरोप, अरब, भारत इत्यादी और इस घटना को ही यहूदी डायस्पोरा या यहूदी विघटन कहते है।
जहां जहां पर यहूदी लोग गए अपने साथ अपने रिवाज और मान्यताओं को भी लेकर गए जिसकी वजह से शैतान की अवधारणा भी उनके साथ ही आगे अलग अलग जगहों में गई।

भाग 3: ईसाइयत में शैतान का विवरण

जैसे की हम पिछले भाग में हम ने यहूदी मजहब का एक संक्षिप्त इतिहास पढ़ा जिससे हमने जाना की कैसे यहूदी लोगों ने अपने फायदे के लिए शैतान नाम के नकली किरदार की रचना की और कैसे उसकी सहायता से काफी लम्बे समय तक अलग अलग मूर्तिपूजक समाज को उसके जरिये शिकार बनाया गया।

अपने पहले मन्दिर के टूटने और फारसी बादशाह सायरस के द्वारा अनुमति प्राप्त करके यहूदी लोगों ने अपने मंदिर का निर्माण तो करवा लिया लेकिन वह फ़ारसी गुलामी से आजाद होकर जल्द ही पहले यूनानी सिकन्दर के गुलाम हुए और उसके बाद रोमन राजाओ के गुलाम बन गए। इजराइल के उस दौर में वहां की भाषा अरमेक, कोइने यूनानी हुआ करती थी, और हिब्रू भी यहूदी कबीलों में चलती थी।

यहूदियो के नए स्वामी रोमन राजा अपने रोमनी देवी देवताओं की पूजा करने वाले समाज के लोग थे, जिनमे यूनानी सभ्यता से प्रेरित देवी देवताओं के रोमनी संस्करण वाले देवी देवताओं की पूजा होती थी। उनके लिए काफी बड़े अपने राज्य में अब्राहिमिक कल्ट्स को काबू करना एक चुनौती जैसा ही हो चला था क्योंकि यह मत के लोग मूर्तिपूजा और अन्य देवी देवता के विरोध के हमेशा ही खड़े रहते थे।

यीशु मसीह जिन्हे ईसाइयत का जन्मदाता माना जाता है, उनके असली जीवन के बारे में अब कोई भी ईसाई सहमत नही होता है क्योंकि अधिकतर ईसाई मिथिहासिक यीशु (जो की चमत्कारी थे और उनके अनुसार ईश्वर थे) में ही यकीन रखते है। लेकिन बुद्धिजीवी और इतिहासवादी एक अलग इतिहासिक यीशु में यकीन रखते है जो की चमत्कारी बातों से अलग थे। हम यहां पर इतिहासिक यीशु को सत्य का आधार मान कर बात कहेंगे क्योंकि यही सार्थक भी है।

ईसाइयत का जन्म इजराइल के रोम शाषित यहूदिया(Judea) में जन्मे एक यहूदी ईसा के साथ हुआ था। उनके पिता का जोसफ और माता का नाम मरियम था। उनके पिता और कई स्रोतों की माने तो वह भी, बढ़ई का काम करते थे।

उन्होंने 30 वर्ष की उम्र में जॉन बपतिस्मा देने वाले से यहूदी मजहब में बपतिस्मा लिया और उसके बाद वह दिव्य ज्ञान की चर्चा करने लगे। उनका जीवन अनेको घटनाओ के साथ गुजरा जिनमे ज्ञान चर्चा करना, यहूदी मन्दिर में जाकर व्यपारियो का विरोध करना, इत्यादि....उनका ज्यादातर जीवन गरीब या अनपढ़ यहूदी और गैर यहूदी वर्ग के लोगों के बीच ही गुजरा जिससे वह इस वर्ग के लोगों में बहुत ही मसहूर हुए।
साथ ही साथ उन्होंने यहूदी परंपरा में उद्धृत कई यहूदी रब्बियों और याजकों से भी चर्चा और बहस की जिसकी वजह से यहूदी रब्बी उनसे द्वेष रखने लगे लेकिन यहूदी धर्म के बारे में कम

जानने वाले गैर यहूदी लोग अब ईसा से जुड़ने लगे और उन्हें एक ज्ञानी और सज्जन पुरुष मानने लगे। इस बात से डाह रखकर यहूदी समाज के रब्बियों ने उनसे द्वेष रखकर उन्हें एक झूठे आरोपों में फ़सवा दिया और रोमन प्रभावित जुडिया के पोंटियस पिलातुस से बोलकर उन्हें सूली की सजा करवा दी।
क्योंकि यह कथन ईसाई मान्यताओं से ही प्रचलित है इसलिए इस कथन को ही सच मान लिया जाता है, लेकिन इस बात की सार्थकता पर आज भी उंगली उठती रहती है।



ईसा के सूली पर लटका दिए जाने के कई साल तक उनके समर्थक ईसाई, उनके वचनों और शब्दों की बात और प्रचार करते रहे। उन्होंने यह मानना शुरू कर दिया की यीशु के साथ जो हुआ, वह एक दिव्य घटना थी और ऐसा ईसाई ईश्वर चाहते और उनकी इच्छा से ऐसा काम हुआ था।
इस प्रकार से रोमन साम्राज्य में अंदर ही अंदर ईसाइयत फलने फूलने लगी। हालांकि शुरुआती रोमन सम्राट जैसे की नीरो ने ईसाई मत के लोगो को प्रताड़ित भी किया लेकिन ईसाइयों ने अपनी पहुंच रोमन शासकों में बना ली, जिससे प्रभावित होकर रोम के सम्राट कांस्टेनटाइन ने जब ईसाई मजहब को अपना लिया तो उसके साथ ही रोमन साम्राज्य में उनके अपने ही रोमनी धर्म का विलुप्तीकरण धीरे–धीरे शुरू हो गया और ईसाइयत अपने पैर पसारने लगा। ईसाईयो ने अपनी नीति और अपने रिवाजों को विधर्मियो पर थोपने शुरू किए और कई गैर ईसाईयो को इसके न होने पर सजाये भी दी जिसकी चर्चा हम आगामी भागों में करेंगे। अंत में अगर हम यह कहें की रोमन साम्राज्य और उसके राजाओं की अनुकम्पा से ही ईसाई मत यूरोप में सुदूरतम कोनों तक पहुंचा तो इसमें कोई संशय नहीं है। ईसाई उन राज्यों को जिनमे शासन व्यवस्था और न्याय

व्यवस्था ईसाई हिसाब से चलती है उन्हे क्रिस्टेंडम (Christendom) कहते थे और गैर ईसाई राज्यों को हीथनडोम (Heathendom) कहते थे, जो की मुस्लिमों के दार–उल–इस्लाम (इस्लाम की जमीन) और दार–उल–हर्ब (जंग की जमीन, काफिर जमीन) के ही बराबर है।

ईसायत की प्रमुख पुस्तक बाइबिल है जो की यहूदियो की ओल्ड टेस्टामेंट और ईसाइयो द्वारा रचित नई टेस्टामेंट का जोड़ है। क्योंकि इसमे पुस्तक के यहूदी इतिहास और साहित्य का अंश है इसीलिए इसमे पर-देववाद का प्रबल परन्तु गुप्त विरोध दिखाई दे जाता है। बाइबिल स्पष्ट तौर पर यहोवा के अलावा किसी भी और देवता या मूर्ति की पूजा को सबसे बड़ा अपराध मानते है और इसके लिए सीधे ईसाई नरक में उस व्यक्ति के स्थान का जिक्र है। इसके अलावा ईसाइयत यह स्पष्ट कर देती है की अगर आपने ईसा और यहोवा में श्रद्धा नही लाई तो आपका नरक जाना पक्का है, चाहे आप कितने ही भले या सभ्य व्यक्ति क्यों न हो। इसके अलावा जो यहोवा के अतिरिक्त किसी और की इबादत करते है, वह भी ईसाई नर्क जायेंगे यह भी उनका विश्वास है।

इन घटनाओं के अलावा हमे ईसाई समाज की उस बड़ी घटना की तरफ भी देखना पड़ेगा जो की महा बटवारा (Great Schism) के नाम से मशहूर है।

महा बटवारा ईसाई समाज की वह सबसे बड़ी घटना है जिसमें ईसाइयत को कई अलग अलग विचारधारा में पहली बार तोड़ा था। इस घटना की शुरुआत ईसा की मौत के बाद ही शुरू हो गया था जब नया नया ईसाई समाज त्रिदेववाद (Trinity) की एक अनोखी समस्या में पहली बार उलझा था। दरअसल शुरुआती ईसाई तीन विभिन्न विभूतियों में यकीन रखता था, जो की थे पिता, उसके पुत्र यीशु और पवित्र आत्मा । लेकिन समय के साथ साथ ईसाइयों में अलग अलग गुटों में एक वैचारिक मंथन शुरू हुआ जिसमे उनका विषय इन्ही तीनों विभूतियों पर टिका हुआ था??

ऐसे ही विचार में एक प्रबल विचार था कि यीशु यानी पुत्र समय के शुरू होने से पहले ही अस्तित्व में थे और पिता यानी यहोवा ने उन्हें दुनिया के पापों को अपने ऊपर लेने के लिए ही जमीन पर भेजा था। इसीलिए वह दुनिया में जुल्म सहते हुए मारे गए, जो की एक दिव्य नियति थी।

लेकिन डोसिस्ट (Docesist) नाम का एक ईसाई दल की अपनी एक अलग विचारधारा को सही मानता था जिसमे वह कहते थे कि यीशु कभी भी शरीर के साथ पैदा नही हुए बल्कि वह आम इंसानों को ऐसे शरीर के साथ सिर्फ प्रतीत हुए थे यानी की उनका शरीर एक छलावा था।

एक और दल डोनाटिस्ट (Donatist) नाम का दल भी अफ्रीका में सामने आया जिसका मानना था जिन ईसाइयों ने अपने प्रताड़ना के दिनों में ईसाई शास्त्रों को अकेला छोड़ दिया था ताकि उन्हें मृत्यु दण्ड न दिया जाए, वह डरपोक और भ्रष्ट लोग है और उन्हें ईसाइयत के अच्छे दिनों में किसी भी प्रकार से अच्छे ओहदे या सम्मान नही मिलना चाहिए। इस वजह से उन्होंने अपटूंगी के फेलिक्स को उन्होंने बिशप मानने से भी मना कर दिया था।

लेकिन एरियन (Arian) का विचार सबसे ज्यादा ज्वलंत रहा जो की सबसे ज्यादा पूर्वी ईसाइयत में मशहूर हुआ और धीरे धीरे इसने सम्पूर्ण ईसाई जगत को अपनी चपेट में ले लिया। दरअसल अलेक्जेंड्रिया के एक ईसाई प्रेसबाइटर एरियस का मानना था कि क्योंकि पिता से ही पुत्र का जन्म हुआ है अतैव पिता पुत्र से ज्यादा दिव्य हुआ और पूजन योग्य है।
यह बात ईसाइयत के उस दौर के मानने वालो को ऐसी नागवार गुजरी की ईसाई पादरियों ने एरियस का बहिष्कार करवा दिया और उसे भ्रष्ट घोषित कर दिया। लेकिन बात बहुत आगे बढ़ गई थी और जगह जगह पर इसकी चर्चा शुरू हो गई, खासकर वह ताजा यहूदी से ईसाई बने लोग जिनके अनुसार यहोवा ही सबसे बड़ा था, वह यीशु को एक भगवान मानने से झिझक रहे थे और एरियस का हवाला दे रहे थे।

325 AD में सम्राट कांस्टेंटाइन ने नाइसिया में एक सभा बुलवाई जिसमे एरियस के दावे पर शास्त्रार्थ करवाया। इसमें 318 ईसाई बिशप ने भाग लिया।



इस शास्त्रार्थ में कई दिनों तक एरियन दावे पर बहस चली और आखिर में यह कहकर एरियस के दावे को झूठा कहा गया की पिता और पुत्र दोनो विभूति एक समान है, तो किसी ने किसी को जन्म नही दिया और दोनों ही पूजन योग्य है। अतैव आखिर में सभी बिशप (जिनमें सिर्फ एरियस और अन्य दो ने नही किए) ने नाइसीन समझौते पर दस्तखत किए। एरियस के दावे को एक हेरेसी या विधर्मिता घोषित कर दिया गया।
लेकिन एरियस और उसके चेले इस दावे को मरणोपरांत तक सही मानते रहे। एरियन ईसाइयत ने ही बाद में गॉथ लोगों को ईसाइयत में बपतिस्मा दिलवाया था जिसकी चर्चा हम आगामी भाग में करेंगे।

एरियस के अलावा तीन अलग अलग विचारधारा भी ईसाई विचारधारा के बटवारे की वजह बनी। नेस्टोरियनिज्म कांस्टेंटओपल के एक आर्चबिशप नेस्टोरियस के द्वारा प्रतिपादित एक विचार था जिसमे उसका मानना था, पुत्र मानव और दिव्य दोनों प्रकार के गुणों से युक्त था; लेकिन काल्सेडोनियन (Chalcedonian) नाम के दल का मानना था कि पुत्र आधा मानव– आधा दिव्य था। इन दोनों को मोनोफिसिट नाम के दल ने चुनौती थी की दोनो गलत है और पुत्र दिव्य मानव था।

इस वजह से अलेक्जेंड्रिया के सिरिल ने नेस्टोरियन को विधर्मी घोषित करना चाहा, लेकिन नेस्टोरियन ने रोमन सम्राट थियोसोडियस की मदद से अपने ऊपर कोई मुकदमा होने नही दिया, जिस वजह से एक भयंकर विवाद खड़ा हुआ जिसने आगे चलकर कॉप्टिक, इथियोपियन, सीरियाक, मलंकारा चर्च को कैथोलिक और ऑर्थोडॉक्स चर्च से तोड़कर रख दिया और सभी खुद को श्रेष्ठ कहने लगे।
आज के दौर में वह इस महाबटवारे के लिए भी शैतान को दोष देते है की शैतान ने यीशु के विचार के मानने वालों को भ्रमित किया, लेकिन असल में ईसाइयत के मानने वालो को उन्ही के पादरी, बिशप की गलती ज्यादा थी जो उन्होंने मानवीय भावनाएं अहंकार ,सत्ता का लालच और जलन की वजह से अपने चर्च स्थापित करने चाहे।

अगर हम यह कहें कि ईसाईयत ने ही शैतानी अवधारणा को नए ऊंचाई के तल पर पहुंचाया तो यह अतिशयोक्ति नही कही जा सकती है। ईसाइयत ने शैतान को यहोवा के पारंपरिक नौकर से हटा कर उसे एक बगावती फ़रिश्ते का स्वरूप दिया और पहली बार उसे अपने संस्थापक ईसा के शत्रु की तरह स्थापित किया। इस बात के प्रमाण के लिए हम अब शैतान के ईसाई नामो की ओर देखते है, जिसकी मदद से आप ईसाइयत का असली इतिहास जान जाएंगे।

ईसाइयत में शैतान के नामों की भरमार है, लेकिन मजे की बात है कि यह सभी के सभी नाम चोरी किये हुए है।

हा-सतान नामक यहूदी नाम का किरदार जो कि यहूदी अहरिमान का कॉपी पेस्ट था, उसके कोइने यूनानी भाषा के अनुवाद के समय उसका नाम सतान (satan) कर दिया था। इसी नाम को ईसाइयत ने भी बिना किसी मेहनत के चोरी कर लिया।

शैतान के दूसरे मशहूर नाम Diablo, Devil भी यूनानी-ईसाई लोगों द्वारा ही दिए गए है जिसमे diablo यूनानी शब्द diabolus से लिया गया है, जिसके अर्थ होता है निंदक या दूसरे के बारे में झूठी बाते बोलने वाला और devil, पुरानी अंग्रेजी के शब्द deofolus से बना था जो की यूनानी शब्द diabolus से ही आया था। यह शब्द किसी यहूदी की ही देन थी जो की यूनानी-रोमन दौर में जुडिया में रहता रहा होगा और अपने हा-सतान को यूनानी भाषा में अनुवाद करते समय यह नाम दे बैठा।

ज्यादातर शैतान का एक ईसाई नाम बिलायल (Belial) भी बोला जाता है जो की आपको साबित करेगा की ईसाइयत ने कैसे पहले से एक प्रचलित शब्द को मरोड़ कर अपने मिथिक शैतान से जोड़ दिया। बिलायल शब्द यहूदी लोगो की भाषा हिब्रू के दो शब्द बेली (בְּלִי) जिसके अर्थ है बिना और याल (עַל मतलब) बनता है। कुल मिला कर बिलायल का अर्थ बनता है बिना किसी मतलब का , यानी फिजूल या बेकार।
यह शब्द यहूदी पुस्तक प्रोवर्ब्स (Proverbs) के भाग 6 के 12 पंक्ति में यह शब्द दिखता है जहाँ पर इसका इस्तेमाल एक ऐसे व्यक्ति की पहचान करने के लिए किया गया है जो की झूठा या

दुष्ट जुबान वाला है। ऐसे कुटिलता या चालाकी से बोलने वाला व्यक्ति दुष्ट या बिना किसी मतलब का होता है।

आप निचे दिए गए चित्र में इसका अनुवाद देख सकते है।

12 A naughty person, a wicked man, walketh with a froward mouth.

परन्तु बाद कि यहूदी पुस्तक देविरिम (Deuteronomy) के भाग 13 की 14 वी पंक्ति में इस शब्द का काफी बार इस्तेमाल हुआ है जहाँ पर इसका प्रयोग उन लोगों के लिए किया गया है जो कि यहोवा के अलावा किसी और की पूजा करते है यानी कि गैर यहूदी...

13:13 [Certain] men, y582 x376 the children 1121 of Bæliyya`al 1100 בְלִיַּעַל are gone out 3318 z8804 from among 7130 x4480 you, and have withdrawn 5080 z8686 x853 the inhabitants 3427 z8802 of their city, 5892 saying, 559 z8800 Let us go y3212 z8799 x1980 and serve 5647 z8799 other 312 'élöhîm 430 אֱלֹהִים which x834 ye have not x3808 known; 3045 z8804

इसके अलावा जजस (judges) नामक पुस्तक में यह शब्द बीलायल, जिबह (gibeah) नामक जगह के लोगो (बेंजामिन के कबीले वाले) के लिए इस्तेमाल हुआ है, जिन्होंने एक आदमी के साथ अनैतिक शारीरिक सम्बन्ध बनाने की कोशिश की थी। इस पुस्तक में शब्द था बेलायल के बच्चे या sons of Belial जो की अगर हम आसान शब्दों में समझे तो यह शब्द का मतलब निकम्मी औलाद बनेगा, जो की एक प्रकार का ताना ही है जो की उन्हें दिया जाता था जो की यहोवा और यहूदी रिवाजों और बातो को नही मानते है।

इन पुस्तको में उन लोगों को बेकार या बिना किसी मतलब का करार कर दिया जाता है जो कि यहोवा की उपासना नहीं करते है या उसके यहूदी मजहब के रिवाजो को नही मानते है। यह बात आपको यह समझा देती है की इब्रहिमिक कल्ट्स में दूसरे देवी देवताओं की उपासना करने वालों की क्या हैसियत होती है??

यही शब्द समुएल की 1 पुस्तक के 2 भाग के 12 पंक्ति में भी इसी तरह एली के बेटो को बेलायल की औलादे कहा गया, यानी की उन्हें निकम्मी औलादे कहा गया। वही जुबली (Jubilee) की किताब के भाग 15:32 में जिन इस्राइली लोगो ने खतना नहीं करवाया, उन्हें बिलायल की औलादे कहा गया।

इन सभी बातो से यह समझ में आता है की यहूदी लोग बिलाइल शब्द को किसी गैर धर्मी या गैर यहूदी को चिढ़ाने के लिए प्रयोग करते थे लेकिन ईसाइयत ने इस शब्द को बाद में इस तरह से बना दिया जैसे की बिलाइल एक शब्द न होकर कोई जीव हो। इस अनुसार अब बिलायल एक जीव था जो की यहोवा के उल्टा चलता था। अगर हम ध्यान दे तो समझेंगे इस प्रकार से एक ही जीव पहले से यहूदी और ईसाई प्रचलन में था, यानी कि शैतान। इस प्रकार से बिलाइल की औलाद होने का मतलब ईसाइयत में शैतान की औलादे बन गया जिससे गैर ईसाई या गैर यहूदी लोग, शैतान की औलादे या उसके अनुयायी साबित होते थे। इस प्रकार से अगर हम देखे तो मिस्टर शैतान को ईसाइयत ने बाप भी बना दिया।

शैतान का अन्य ईसाई नाम लूसिफ़र (Lucifer) भी दिया गया है जो की आजकल बहुत ज्यादा प्रचलित भी है लेकिन यह बात बहुत ही कम लोग जानते है की Lucifer नाम पहले रोम की देवी वीनस (Venus) को दिया गया एक नाम था।
Lucifer रोम की प्रधान भाषा लैटिन के दो शब्दों Lux (रोशनी) और ferre(लाने वाला) से बना शब्द जिसका मतलब होता है सुबह लाने वाला या रौशनी दाता। वीनस एक ग्रह है (हिंदी में शुक्र) जिसे पुरातन यूनानी और रोमन लोग दोनों जानते थे की वह ज्यादातर सुबह और शाम के समय में आकाश में सबसे ज्यादा चमकता दिखाई देता है और यह यूनानी देवी एफ्रोडाइट का ही रोमी रूपांतरण था। इसी वजह से वीनस को मोर्निंगस्टार(Morningstar) (सुबह का तारा) भी कहा गया। एफ्रोडाइट का यूनानी नाम होसोफोरोस (Hesphoros) यानी शाम की रौशनी और फॉस्फोरस (Phosphoros) यानि सुबह की रौशनी है।
रोम के महान कवि वर्जिल (Virgil) की कालजई पुस्तक एनीड (Aeneid) में लुसिफर शब्द का जिक्र आता है जहां पर इसे किसी शैतान नाम के प्राणी की तरह नही, बल्कि एक तारे की तरह संबोधित किया गया है।

वीनस सम्भोग, प्रेम, कामना और समृद्धि की देवी थी जिसे रोमन लोग Venus Felix यानी भाग्यशाली वीनस कहते थे। रोम में उसका और रोमा का मंदिर सबसे बड़े मंदिर थे जिससे समझा

जा सकता है की रोमी लोग में वीनस की अहमियत कितनी थी।



वीनस का नष्ट भ्रस्ट हालत का मंदिर

वीनस की इतनी इज्जत का एक बहुत बड़ा कारण यह है की वीनस को रोम के सबसे पहले पूर्वज Aeneas की माता माना जाता है जिस वजह से वीनस रोम की कुलदेवी का स्थान रखती थी।
अब प्रश्न यह उठता है की रोम की राज्यदेवी का नाम शैतान के नाम से कैसे जोड़ दिया गया तो इसका उत्तर बहुत ही स्पष्ट है की जैसे ही रोमन साम्राज्य में सम्राट कोंस्तांतिन (constantine) ने मरते समय ईसाइयत को अपनाया, ईसाई लोगो ने पूरे साम्राज्य को ईसाई साम्राज्य घोषित कर दिया था। इसके बाद धीरे धीरे उन्होंने मूर्ति पूजा और किसी अन्य की पूजा को (ईसाई त्रिदेव यानी ईसा,पिता और हॉली स्पिरिट के अलावा) अधर्म (heresy) करार कर दिया था।
इसी आधार से समस्त रोमनी देवी देवता को शैतान के दूत घोषित कर दिया गया और वीनस के नाम ल्युसिफर को भी शैतान का नाम करार कर दिया गया।
इस बात के लिए ईसाई लोगों ने यहूदी किताब यशायाह का सहारा लिया। यशायाह (Isaiah) की किताब के 14:12 में एक शब्द हेलेळ (הֵילֵל) का अनुवाद लूसिफ़ेर के नाम से कर दिया। इसके पीछे का कारण समझे बिना हम ईसाइयों की इस चालाकी को समझ न सकेंगे। दरअसल यहूदी कबीले और उनके शत्रु मूर्तिपूजक हमेशा से ही इजराइल के लिए एक संघर्ष की स्तिथि में रहे थे। यहां तक की जब बैबीलोनियाई राजा नाबूकैनज़्ज़र द्वितीय ने इजराइल पर कब्जा करके यहूदी लोगो को सायरस के रहमो करम पर छोड़ दिया था तो फारस में शरण पाए यहूदी लोगो ने एक उमीद और जोश जगाने के अंदाज में यशायाह की किताब लिखी थी जिसमे बेबीलोन के मूर्तिपूजक राजा को जमकर कोसा गया था। यशायाह की पुस्तक के 14:12 में बेबीलोन के राजा के राज को उसी वीनस ग्रह के डूबने से जोड़कर यहूदी लोग अपनी खीज को दिखाते थे और जताते थे की जिस प्रकार वीनस ग्रह चाहे सुबह कितना भी चमकता हो, शाम को वह डूब जाता है..उसी प्रकार एक दिन बैबीलोनिया राजा का राज्य भी एक दिन डूब जाएगा।

इस स्थान पर जो शब्द प्रयोग में लाया गया था वह पुरानी पुस्तक में चमकता तारा है, लेकिन बाद की पुस्तको में इसे उसी चमकते तारे के रोमनी भाषा लैटिन के अनुवादित शब्द यानी लूसिफ़ेर से जोड़ दिया गया।

Chabad.ORG

9 Gehinnom from beneath quaked for you, toward your arrival; it aroused for you the giants, all the chiefs of the earth; it caused all the kings of the nations to rise from their thrones.	ט שְׁאוֹל מִתַּחַת רָגְזָה לְךָ לִקְרַאת בּוֹאֶךָ עוֹרֵר לְךָ רְפָאִים כָּל־עַתּוּדֵי אָרֶץ הֵקִים מִכִּסְאוֹתָם כֹּל מַלְכֵי גוֹיִם:
10 All of them shall speak up and say to you, 'Have you too become weak like us? Have you become like us?'	י כֻּלָּם יַעֲנוּ וְיֹאמְרוּ אֵלֶיךָ גַּם־אַתָּה חֻלֵּיתָ כָמוֹנוּ אֵלֵינוּ נִמְשָׁלְתָּ:
11 Your pride has been lowered into Gehinnom, the stirring of your psalteries. Maggots are spread under you, and worms cover you.	יא הוּרַד שְׁאוֹל גְּאוֹנֶךָ הֶמְיַת נְבָלֶיךָ תַּחְתֶּיךָ יֻצַּע רִמָּה וּמְכַסֶּיךָ תּוֹלֵעָה:
12 How have you fallen from heaven, the morning star? You have been cut down to earth, You who cast lots on nations.	יב אֵיךְ נָפַלְתָּ מִשָּׁמַיִם הֵילֵל בֶּן־שָׁחַר נִגְדַּעְתָּ לָאָרֶץ חוֹלֵשׁ עַל־גּוֹיִם:
13 And you said to yourself, 'To the heavens will I ascend, above God's stars will I raise my throne, and I will sit on the mount of the assembly, in the	יג וְאַתָּה אָמַרְתָּ בִלְבָבְךָ הַשָּׁמַיִם אֶעֱלֶה מִמַּעַל לְכוֹכְבֵי־אֵל כִּסְאִי וְאֵשֵׁב

जब ईसाइयों ने यशायाह की पुस्तक का अनुवाद किया तो बड़ी ही चलाकी से उन्होंने लूसिफ़ेर के शैतान होने की मनघड़ंत कहानी को घड़ा और वीनस कुलदेवी को यहूदी किताब से शैतान घोषित कर दिया। इसके लिए उन्होंने एक मनघड़ंत कहानी जिसमे लूसिफ़ेर के ईसाई स्वर्ग में एक फ़रिश्ते होने और बाद में वहां से नीचे गिर जाने की बात थी लिखनी और बतानी शुरू कर दी। ईसाईयो ने बाद में वीनस के और बाकी देवताओं के मंदिरों में अस्पष्ट रूप से तोड़ फ़ोड़ और

लूटपाट करवाई और स्पष्ट रूप से उसके अवशेषों से ही अपने नए चर्च का निर्माण करवाया था। अंत में रोम की कुलदेवी शैतान बना दी गयी और मिस्टर शैतान का ईसाई लोगो ने लिंग परिवर्तन करके उसे लड़के से लड़की बना दिया।

शैतान के दूतों के नाम भी आपको bible में देखने को मिल जाते है, जैसे बीलजेबुब(Beelzebub), अज़्थोरात(Aztharot), अजाजेल (Azazel), अब्बाडॉन (Abbadon), स्माएल (Samael) इत्यादि, जो कि कई जगहों पर शैतान के दूत के बजाए शैतान के ही नाम भी मान लिए जाते है। लेकिन यह सभी नाम भी इब्राहीमी कल्ट्स की उसी परधर्म घृणा और कॉपी पेस्ट हरकतों को दिखाता है।
Beelzebub जिसे आज के समय में एक शैतान दूत माना जाता है, उसकी रूपरेखा एक भयानक जीव के रूप में की जाती है, जो कि मक्खियों के झुंड का सरदार माना जाता है और बीमारियों के होने की वजह माना जाता है।



"Beelzebub and them that are with him shoot arrows."

बिल्जेबब का ईसाई चित्रांकन

लेकिन beelzebub हमेशा से ऐसा नहीं था। ईसाई और यहूदी कल्ट्स से पहले आज के सीरिया के क्षेत्र में कन्नाति (cannanite) लोगो की बस्ती रहती थी जो कि बाल ज़बूल नाम के एक देवता की पूजा करती थी। किसी समय में बाल देवता की पूजा इजराइल यानी कि यहूदी लोगों के यहां भी शुरू हो गई थी जिसके लिए जेजेबेल नामक इसरायली रानी जिम्मेदार मानी जाती है। यहां तक कि मशहूर राजा के नाम भी बाल के नाम से जोड़ कर रखे जाने लगे थे जैसे कि जज

गिदिऑन का एक नाम था जेरुबाल(अर्थात प्रभु बाल संघर्ष करें) ; इजराइल के राजा साउल के बेटे का नाम था एशबाल(प्रभु बाल महान है) और दाऊद के बेटे नाम था बालियादा(प्रभु बाल जानते है)। हालांकि बहुत से इतिहासकार बाल के नाम को यहोवह से ही जोड़ कर इसके बालजबूल होने के दावे को झुठला देते है लेकिन यह बात सभी जानते है कि बाल नाम किसी भी इतिहासिक दृष्टि से यहोवह का सूचक नही रहा है क्यूंनकी यहोवह को एल,एलोहीम, अडोनाइ कहकर समोधित किया जाता है।
इसी बात का एक और सबूत यह भी है कि जब यहूदी रबियो और बाल के पुजारियों में विरोध बढ़ा और फैला तो उन्होंने पहले के नाम जिनमे बाल शब्द आता था, उसे बदल कर शब्द बोशेत यानी शर्म करना शुरू कर दिया। इस तरह जेरुबाल बना दिया गया जेरुबोशेत, एशबाल बना दिया गया एशबोशेत और मेफिबाल को मेफिबोशेत कर दिया गया था। यह बात साबित करती है कि यहूदी लोगो के अनुसार बाल यहोवह से अलग और शर्म के लायक चीज थी इसीलिए तो उन्होंने उसे बेईज्जत करने के लिए उसका नाम से मिलते शब्दो को शर्म वाले शब्द से बदल डाला।

बाल कन्नाति लोगो के यहां बिजली, समृद्धि और वर्षा का देवता माना जाता था और उसकी पूजा प्रधानता से की जाती रही थी। बाल की पूजा करने वाले पहले उत्तरी अफ्रीका, इजिप्ट और पुरातन मेसोपोटामिया के आस पास के इलाकों में भी थे।

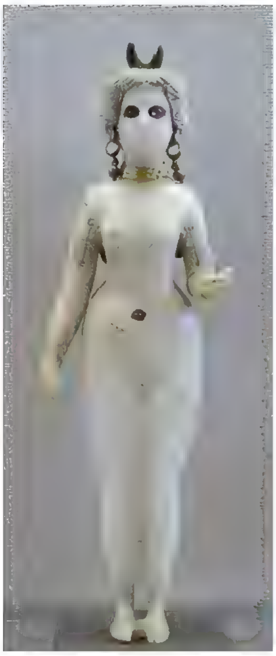


बाल कन्नती लोगो का देवता की धातु की मूर्ति

ईसाई मजहब की पुस्तक Kings जो कि उनके पुरातन नियम (Christian Old testament) का हिस्सा है, उसमें बाल के पुजारियों को एलिजाह नामक एक यहोवाह का भक्त चुनौती देता है कि वह अपनी मूर्तियों को यहोवाह की शक्ति से भिड़ा ले। इसके लिए दोनो लोग लकड़ियां इक्कठी करके बलि देंगे, लेकिन आग उनका इष्ट अपनी शक्ति से लगाएगा, जिससे तय होगा कि असली कौन है.... यह शर्त में तय हुआ था। इसमें बड़े आश्चर्य से बाल के पुजारी लोग अपनी शक्ति दिखाने में असमर्थ होते है लेकिन यहोवह का चेला एलिजाह पानी के गिलास (जिसे बहुत से लोग बोलते है कि पानी के बजाय उसमे जवालनशील पदार्थ था) डाल के भी आग लगा देने में कामयाब हो जाता है...इसके बाद जीतने के बाद एलिजाह बाल के पुजारियों की हत्या कर देता है या अगर सही बोले तो अपने समर्थकों की मदद से करवा देता है...
यह कथा इतिहासिक दृष्टि से सत्य हो या न हो, लेकिन यह बात साबित करती है कि अब्राहिमिक कल्ट की दृष्टि में दूसरे मत सम्प्रदाय के देवी देवताओं से नफरत शुरू से ही भरी जाती है और उन्हें जानबूझकर मिस्टर शैतान से जोड़ दिया जाता रहा है ताकि उन्हें बुराई का सूचक घोषित किया जा सके....

कुछ इतिहासकार तो यह भी मानते है कि उसके असली नाम बाल ज़बूल (यानी महान उत्तमता के देवता) को पहले यहूदी और फिर ईसाई लोगो ने बाल जेबुब (Beelzebub मखियों के देवता) कर दिया था ताकि बाल की उपमा गोबर और उसके पुजारियों की तुलना कीड़े मकोड़े से करके बाल की बेइज्जती हो सके और उसकी कीर्ति को बट्टा लगा के कन्नाति लोगो का मजहब बदला जाए।

अजथारोत (aztharot) भी आजकल शैतान के एजेंट या दूत के रूप में पहचान पा गया है लेकिन यह भी एक प्राचीन देवी अस्तर (astarte) का ही एक बिगड़ा हुआ रूप है। अस्तर यूनानी एफ्रोडाइट और रोमनी देवी वीनस कि ही तरह फोएनिसिया की देवी होती थी। बाद में ईसाइयत के उदय के साथ ही अस्तर को अजथारोत नामक एक दुष्ट जीव बना दिया गया। अस्तर को मेसोपोटामिया में इश्तर नाम से जाना जाता था। दोनो में ही एक बहुत खास बात यह रही थी कि इश्तर और अस्तर दोनो के सिर पर सींगो का एक मुकुट होता था।



अस्तर की पुरानी मूर्ति



मेसोपोटामियन देवी इश्तर का चित्र

फिर यहूदी और ईसाई दोनो ने एक देवी इश्तर और अस्तर को शैतान साबित करके उसकी पूजा को अवैध घोषित कर दिया और उसके रूप से चोरी करके सींग के निशान को शैतान की निशानी दे दिया।

शैतान का रूप एक बकरे जैसा क्यों है, इसके लिए हमे पैन और अजाजल की बात को समझना पड़ेगा।

अज़ाज़ल नामक एक शैतान का दूत का नाम भी आजकल बहुत धड़ले से लिया जाता है लेकिन यह बात बहुत ही कम लोग जानते है कि अज़ाज़ल कोई शैतान या उसका दूत नही बल्कि एक बहुत ही बड़ी गलती है जो कि इब्राहिमिक कल्ट की अनपढ़ता और कपटता को साबित करती है। यहूदी किताब लेविक्टस 16:8 में शब्द अज़ाज़ल दिखाई देता है जहाँ पर यहूदी भाषा में इस शब्द का अर्थ है बलि का बकरा। यहूदी रबी योम किप्पूर नाम के यहूदी त्यौहार को मनाते थे जिसमे एक बकरा यहोवाह को भेंट किया जाता था और दूसरा बकरे को यहूदी लोग, बलि के बकरे की तरह जंगलो में छोड़ दिया जाता था या पहाड़ी से धकेल दिया जाता था, जिसके पीछे का कारण यह समझा जाता है कि यह बकरा अपना ऊपर यहूदी लोगो के पाप भी साथ मे ही ले गया है। बाद के अन्य ईसाई अनुवादक लोगो ने इस चीज को इस प्रकार से लिया की जैसे यहोवाह के अलावा किसी और के लिए भी यहूदी लोग बलि देते थे। अज़ाज़ेल शब्द को उन्होंने किसी काल्पनिक शैतान से जोड़ कर बड़ी खूबसूरती से एक नया किरदार पैदा कर दिया। बड़ी ही हास्यास्पद बात है कि कुछ ईसाई, इस लिखापढ़ी की गलती को आज भी सच मान रहे है और अज़ाज़ेल को एक शैतान का दूत या शैतान मानते है।

Leviticus 16:8 — The New International Version (NIV)

8 He is to cast lots for the two goats—one lot for the LORD and the other for the scapegoat.

Leviticus 16:8 — King James Version (KJV 1900)

8 And Aaron shall cast lots upon the two goats; one lot for the LORD, and the other lot for the scapegoat.

Leviticus 16:8 — New Living Translation (NLT)

8 He is to cast sacred lots to determine which goat will be reserved as an offering to the LORD and which will carry the sins of the people to the wilderness of Azazel.

सींगो के पीछे का एक और पात्र यूनानी और रोमन देवता पैन या फ़ोनस के ऊपर भी आधारित है।



हालांकि रोम और यूनान में इस देवता के नाम मे अंतर था लेकिन इसके रूप गुण में ज्यादा अंतर नही था। पैन एक देहाती देवता था जो आधे बकरे और आधे मानव के रूप में दर्शाया जाता है क्योंकि चरवाहों का मुख्य काम बकरो और भेड़ो को चराने का ही होता था। यह अपने हाथ मे पैन बांसुरी (Pan flute) नाम का एक वाद्ययंत्र लिए दिखता है जो कि यूनानी चरवाहों का एक पसंदीदा वाद्ययंत्र हुआ करता था। पैन के कोई मन्दिर यूनान व रोम में नही थे क्योंकि वह एक देहाती देवता हुआ करता था लेकिन वह अन्य देवताओं की तरह ही प्रसिद्ध हुआ करता था क्योंकि चरवाहे और शिकारी अपनी जंगलो में अपनी सुरक्षा और सफलता के लिए उससे सहायता मांगा करते थे। यहां तक कि जब रोमन शहरों में ईसाइयत फैल चुकी थी और रोमनी देवताओ की पूजा अवैध घोषित की जाने लगी थी, तब भी 4th शताब्दी तक पैन की पूजा गांव देहातों में चल रही थी। इस बात से ही खीज कर ईसाई पोप क्लेमेंट प्रथम ने बड़ी चालाकी से एक चाल चली। क्योंकि ईसाइयत और यहूदियत समलैंगिकता को एक पाप और बीमारी समझती थी, इसी को अपना हथियार बना कर उन्होंने पैन की अति कामुक प्रवृति को गलत ही नही बताया बल्कि उस पर समलैंगिक होने का इल्जाम भी लगा दिया। इस वजह से पैन की पूजा को शैतानी रिवाज घोषित किया गया और पैन को भी एक प्रकार शैतान का दूत बना दिया गया। पैन की रूपरेखा में शैतान को बकरे के कान और पैर दे दिए गए। इस तरह बेचारा शैतान अब बकरा बन चुका था।

इसके अलावा मैमन(Mammon) नाम के एक शैतान के दूत का नाम भी हमे कई जगह जैसे पैराडाइस लॉस्ट कविता में इसे एक शैतान ही बताया गया है लेकिन फिर से हम ईसाई लोगो की

मूर्खता या कहे कि चलाकी देखने को मिलती है। मैमन शब्द एक अरामिक भाषा का शब्द था जिसका अर्थ होता है अमीरी या धनाढ्यपन...पहले के ईसाई लोग मैमन शब्द को भुक्खड़पन, लालच, अनैतिक धनार्जन के लिए ही प्रयोग में लेते थे जिस वजह से यह शब्द बाइबिल में भी इसी तरीके से दर्शाया गया था।
मैथ्यू के 6.19:21 के शब्द में बाइबिल कहती है कि एक व्यक्ति या तो मैमन का सेवक बन सकता है या फिर भगवान का…यहां पर बाइबिल का अर्थ था कि व्यक्ति या तो अच्छा हो सकता है या फिर लालची….
लेकिन बाद के समय मे मैमन का अर्थ एक शैतान ही बना दिया गया जिसके लिए कई नवीन ईसाई लेखक(जैसे कि जॉन मिल्टन) जिम्मेदार रहे जिन्होंने मैमन का अर्थ अज़ाज़ल की तरह बदल डाला और इसे एक शब्द से बदल कर कोई जीव कर दिया।

इस प्रकार आप ईसाइयत में शैतान को दिए गए नाम देख चुके है और यह भी की यह सभी नाम चोरी के नाम है या फिर कपट और मूर्खतापूर्ण बनाये गए नाम है।

ईसाई बाइबिल में शैतान का विवरण कई जगहों पर आता है जिनका अब हम विश्लेषण करेंगे और देखेंगे की क्या ईसाई शैतान, यहूदी शैतान की तरह है या अलग है??

मिस्टर शैतान अपनी एंट्री लेता है बाइबिल के पुरातन नियम (old testament जो की यहूदी तोराह से उधार ली गई थी) की उत्पत्ति (Genesis) की कथा में जिधर यहोवाह अपने बनाये सबसे पहले मिथिहासिक नर आदम और हव्वा को अपने बाग़ में रहने को कहते है और यह भी कहते है की वह एक ख़ास पेड़ से फल तोड़कर न खाये। यहां पर हव्वा एक दिन जब बाग़ में अकेले घूम रही थी तो शैतान ने सांप का रूप धरकर उसे बहकाया की यह फल उसे जरूर खा लेना चाहिए।



हव्वा ने पहले तो इस काम के लिए मना किया लेकिन शैतान के बार बार बोलने पर वह बहक गयी और उसने फल को खा लिया और उसके बाद आदम ने भी इसे खा लिया। इस अवज्ञा को करने के लिए यहोवाह ने आदम और हव्वा को अदन के बाग़ और शैतान को भी बाग से बाहर निकाल दिया।

यह कथा वैसे तो ईसाई बाइबिल में शैतान के स्वर्ग से निकाले जाने की कथा को बताती है लेकिन अगर हम इस कथा को तोराह यानी की यहूदी कथा से मिलान करे तो ईसाइयत के कॉपी पेस्ट कल्चर की झलक मिलती है। तोराह के जेनेसिस (genesis) में सारी कथा तो एक समान है लेकिन जिधर ईसाई पुस्तको में शैतान का जिक्र आता है, वही यहूदी किताब में उधर सिर्फ सांप के होने का ही जिक्र है यानी की यहूदी कहानियों के अनुसार शैतान ने हव्वा को नहीं बल्कि सांप ने बहकाया था और यहोवा ने असली कहानी में सांप को श्राप दिया था न की किसी शैतान को।

नीचे दिए गए चित्र में आप देख सकते है कि असली यहूदी पुस्तक तोराह में अंकित सन्तरी रंग का यहूदी शब्द हा-सतान (ha-satan) नहीं, बल्कि सांप के लिए प्रयोग शब्द यहूदी भाषा का शब्द नाहाश है।

Genesis Chapter 3 בְּרֵאשִׁית

א וְהַנָּחָשׁ, הָיָה עָרוּם, מִכֹּל חַיַּת הַשָּׂדֶה, אֲשֶׁר עָשָׂה יְהוָה אֱלֹהִים; וַיֹּאמֶר, אֶל-הָאִשָּׁה, אַף כִּי-אָמַר אֱלֹהִים, לֹא תֹאכְלוּ מִכֹּל עֵץ הַגָּן.	**1** Now the serpent was more subtle than any beast of the field which the LORD God had made. And he said unto the woman: 'Yea, hath God said: Ye shall not eat of any tree of the garden?'
ב וַתֹּאמֶר הָאִשָּׁה, אֶל-הַנָּחָשׁ: מִפְּרִי עֵץ-הַגָּן, נֹאכֵל.	**2** And the woman said unto the serpent: 'Of the fruit of the trees of the garden we may eat;
ג וּמִפְּרִי הָעֵץ, אֲשֶׁר בְּתוֹךְ-הַגָּן--אָמַר אֱלֹהִים לֹא תֹאכְלוּ מִמֶּנּוּ, וְלֹא תִגְּעוּ בּוֹ: פֶּן-תְּמֻתוּן.	**3** but of the fruit of the tree which is in the midst of the garden, God hath said: Ye shall not eat of it, neither shall ye touch it, lest ye die.'
ד וַיֹּאמֶר הַנָּחָשׁ, אֶל-הָאִשָּׁה: לֹא-מוֹת, תְּמֻתוּן.	**4** And the serpent said unto the woman: 'Ye shall not surely die;

यानी कि ईसाइयत का एक मुख्य बिंदु जिधर मिस्टर शैतान प्रकट होते है, वह सरासर झूठा और मनघड़ंत है। इसके अलावा आदम और हवा की कहानी भी यहूदी रब्बियों के द्वारा जरथुरस्त्रवादी लोगों के ही मिथिहास में से उधार ली गई थी। उनकी पुस्तक पहलावी के अनुसार पृथ्वी पर पहले दो मनुष्य का जन्म हुआ था जिनका नाम माश्य और माश्याना रखा गया था जो की आदम और हवा के लिए प्रेरणा बने थे।

इसके बाद बाइबिल के कई शुभसमाचार (Gospel) में मिस्टर शैतान यीशु की परीक्षा लेने वाला काम करता दिखाया गया है।

जहां पर मार्क (Mark) का शुभसमाचार सिर्फ दो पंक्ति 1:12-13 में इस घटना का जिक्र करता है वही मत्ती (matthew) के शुभसमाचार के भाग 4:1-9, लुका (Luke) के शुभसमाचार 4:6-7 में इस बात का सम्पूर्ण विवरण दिया गया है।

बाइबिल के इस कहानी के अनुसार जब यीशु का बपतिस्मा हो गया था तो वह रेगिस्तान में भटक रहे थे। तब वहां पर शैतान आकर उन्हें बहकाने की कोशिश करता है। मत्ती की 4:3(New international version) में शैतान यीशु को बोलता है कि अगर उसे भूख लगी है तो वह पत्थरों को खमीरी रोटी (ब्रेड) में बदल दे, लेकिन यीशु उसे मना कर देते है। तब शैतान उसे शहर के सबसे ऊँची जगह पर ले जाकर रख दिया और उसे कहा कि अपने आप को नीचे गिरा दे जिसपर यीशु ने उसे फिर मना किया कि ऐसा करना यहोवा का इम्तिहान लेना होगा। उसके बाद उसने यीशु को सम्पूर्ण वैभव और राज्य दिखाया और कहा की यह सब मैं तुझे दूंगा अगर तू झुककर मुझे सलाम कर और मेरी इबादत कर, जिसपर यीशु ने उसे फिर से मना कर दिया और चले जाने के लिए कहा।

इस कथा में यीशु और मिथिक शैतान की कथा का संदर्भ सिर्फ मनघड़ंत और गैर इतिहासिक है जिसका तातपर्य सिर्फ यीशु की महानता को दिखाना था कि वह यहोवा के सच्चे अनुयायी है और उनपर शैतान जैसे जीव का भी कोई असर नही होता है।

ईसाई धर्म ने जिधर शैतान की अवधारणा को फैलाया, उन्होंने एंटीक्रिस्ट यानी झूठे मसीहा की बात को एक प्रबल शस्त्र की तरह प्रयोग किया। हालांकि झूठे मसीहा की कहानी को तो ईसाइयत से पहले अब्राहमिक मजहब इस्तेमाल करते रहे थे लेकिन ईसाइयत को अपने दावे को मजबूती देने के लिए इसकी जरूरत कुछ ज्यादा ही थी।
झूठा मसीहा या एंटीक्राइस्ट (Antichrist) उस व्यक्ति के बारे में वर्णित एक भविष्यवाणी है जिसे अनुसार दुनिया के अंत समय (जजमेंट डे) में एक ऐसा व्यक्ति आएगा जो कि ईसा या यहोवा को नकली बोलेगा या उनके विरोध में कुछ कहेगा और स्वयं को यहूदी मसीहा बताएगा।
बाइबल के नई टेस्टामेंट के पहली पुस्तक जॉन 2 के 18 भाग में एक आंशिक इल्जाम के साथ अन्तिक्रिस्ट की यही पहचान बताते है कि ये आखिरी समय है और अब तुम जानते हो कि ईसा ही मसीहा है, जो इस बात से इनकार कर दे वह एक झूठा मसीह है।

Warnings Against Denying the Son

18 Dear children, this is the last hour; and as you
have heard that the antichrist is coming, even
now many antichrists have come. This is how
we know it is the last hour. 19 They went out
from us, but they did not really belong to us. For
if they had belonged to us, they would have
remained with us; but their going showed that
none of them belonged to us.

20 But you have an anointing from the Holy One,
and all of you know the truth.[e] 21 I do not write
to you because you do not know the truth, but
because you do know it and because no lie
comes from the truth. 22 Who is the liar? It is
whoever denies that Jesus is the Christ. Such a
person is the antichrist—denying the Father and
the Son. 23 No one who denies the Son has the
Father; whoever acknowledges the Son has the
Father also.

24 As for you, see that what you have heard from
the beginning remains in you. If it does, you also
will remain in the Son and in the Father. 25 And
this is what he promised us—eternal life.

इस भाग को पढ़कर कोई भी तर्कशील व्यक्ति ये समझ सकता है कि यह बात बाइबल सिर्फ अपने मसीही वाले दावे को बचा कर दूसरे को ही शैतान के साथी होने के लपेटे में लेने के लिए कह रही है। एंटीक्राइस्ट की बात ईसाई लोगो द्वारा अक्सर उस समय प्रयोग में लाई जाती थी, जब कोई गैर ईसाई ईसा के मसीही और चमत्कारिक होने के दावे को झुठलाया करता था। तब उसे झूठा मसीहा होने के दावे के घेरे में ले कर उसे फंसाने के काम यह अवधारणा आया करती थी क्योंकि इस अवधारणा में सीधे सीधे तौर पर तर्क को तिलांजलि देकर अपनी बात को भी परम सत्य की उपाधि दे दी जाती थी।

इस कथा में शैतान जिस प्रकार के वादे और शक्ति का प्रदर्शन करता है, वह एक प्रकार का मतिभ्रम उत्पन्न करता है कि क्या वह अपने शक्तिशाली होने की गवाही नहीं दे रहा है, जबकि यही शैतान यहूदी कथाओ में यहोवाह का सेवक था!!!

भाग 4: इस्लाम में शैतान का विवरण

इस्लाम में शैतान का विवरण काफी हद तक ईसाइयत और अरबी इस्लामी से पहले के मिथको और थोड़े हद तक यहूदियत की देन है। ऐसे तो मुस्लिमो की पुस्तक कुरान में शैतान काफी बार आया है, लेकिन वह ईसाई मजहब की किताबों के शैतान से बहुत हद्द तक अलग है।

सबसे पहले हमें अरब और इस्लाम के इतिहास पर एक निगाह डाल लेनी चाहिए जिससे की हमें इस्लाम में मिस्टर शैतान के आने की सारी कहानी समझ में आएगी।

इस्लाम से पहले अरबी भूमंडल (मक्का और मदीना) पर मुख्यतः बहुत सारे कबीलो का राज चलता था जो की खानाबदोश लोग थे।



यह लोग बहुत सारे देवी देवताओं को पूजता था जिनकी पूजा अरब में ही होती थी। इसके अलावा अरब के लोग विभिन्न प्रकार के जादुई जीवों और अंधविश्वासों पर भी यकीन रखते थे, जैसे की जिन्न। अरबी कबीले मूर्तिपूजक थे और काबा के आसपास अपनी मूर्तियों और देवी देवताओं की पूजा करते थे। इन मूर्तिपूजकों के अलावा बहुत से यहूदी कबीले (जैसे की बनु कुरैजा, बनु नजीर, बनु कैनुका आदि) मदीना की तरफ और ईसाई संप्रदाय के लोग भी अरब में रहते थे, हालांकि ये लोग मूर्तिपूजक नहीं थे। इसके अलावा जरथुस्त्री यानी फारसी लोगो भी कम अनुपात में अरब में रहा करते थे।


अरबी देवियों की मूर्तियां *(लात, मनात और उज्जा)*

इस्लाम का उदय इसके संस्थापक हजरत मुहम्मद से शुरू माना गया है, जिनका जन्म 6वी शताब्दी के बीच में हुआ था। उनके कबीले के लोग कुरैश कहलाते थे और अरब के मूर्ति पूजक समाज के थे। बचपन से ही मुहम्मद के सर पर माता पिता का साया न होने से उन्हें उनके दादा, चाचा इत्यादि लोगों ने सहारा दिया। वह ज्यादातर अपने दादा के साथ अरब से बाहर और अंदर तिजारत (व्यापार) करने जाया करते थे जिस दौरान उनकी मुलाकात विभिन्न अब्राहिमिक मजहब(ईसाइयत, यहूदी) के लोगो से हुआ करती थी। इस दौरान ही मुहम्मद ने कई तरह की अब्राहिमिक मजहब की बातें, रिवाज और कहानियां इन्ही मिशनरी लोगों के मुंह से सुनी और जानी।
बाद में जब वह 40 साल की उम्र के हुए तो उन्होंने अपने शहर मक्का में यह दावा करना शुरू किया कि वह इब्राहिम के पैगम्बर(सन्देशवाहक) परम्परा की तरह अल्लाह नाम के खुदा के भेजे हुए नबी है। नबी या पैगम्बर अब्राह्मिक परंपरा में उस व्यक्ति को कहते है जो कि इब्राह्मिक खुदा(यहोवा) का दूत होता है।

पहले तो उन्होंने अब्राह्मिक परम्परा को कुरैश लोगो के बीच मे फैलाने के प्रयास किये और कई कुरैश लोगों से इस बात के लिए मुलाकात करी लेकिन न तो मूर्तिपूजक कबीलों ने उनकी कोई बात मानी और न हीं यहूदी कबीलों ने उनकी कोई बात मानी।
मूर्तिपूजक कबीलों के तथ्यों की माने तो मुहम्मद उनके रीति रिवाजों और मूर्ति पूजा पर प्रहार करके अपने नए खुदा अल्लाह की पूजा करवाने पर जबरदस्ती तुले थे ताकि वह नबी बनकर आनन्द भोगे। वही दूसरी ओर यहूदी कबीलों का मानना था कि मुहम्मद पर किसी भी तरह की नबी या मसीहा होने की बात सही नहीं बैठती थी जो कि उन्हें अब्राह्मिक नबी घोषित करती। अतैव वो भी मुहम्मद को सच्चा नबी नहीं मानते थे।

पहले तो मुहम्मद ने किसी भी कबीलों से किसी भी प्रकार का कोई वैर नही रखा और चुप चाप अपने मजहब और अनुयायियों को बढ़ाते रहे। जिन लोगो ने पहले इस्लाम कबूल किया उनमें सबसे ज्यादा उनके अपने घर के लोग या उनके गुलाम ही थे। बाद में जब तादात बढ़ गयी तो मुहम्मदी चेले या मुस्लिम खुलेआम मूर्तिपूजक लोगो के साथ बैर भाव रखने लगे। अरबी समाज में इन मुस्लिम लोगों ने मूर्तिपूजक लोगो को गाली देना, उनके देवी देवताओं की बेइज्जती करना और उनके साथ झगड़ा तक शुरू कर दिया था, तो कुरैश कबीले के लोगो ने तंग आकर मुस्लिम लोगों का बहिष्कार कर दिया। इस पर मुस्लिमो ने और बाद में हजरत मुहम्मद ने भी अरब का मक्का शहर छोड़ दिया और मदीना चले गए।

इसके बाद मुहम्मद के विचार और व्यवहार में काफी बदलाव आया और उन्होंने शराफत और शांति का रास्ता छोड़ कर हिंसा का रास्ता अपनाया। इसी दौरान मुस्लिमो की मदीना में तादात बहुत बढ़ गयी जिससे मदीना के यहूदी कबीलों (बनु कुरैज़ा, बनु नजीर, बनु कैनका) का छल, बल से अंत कर दिया गया। बाद में मक्का के शहर पर भी हमला करके उसे भी इस्लामिक कर दिया गया और इस प्रकार से अरब में मूर्तिपूजा का सम्पूर्ण अंत और बाकी इब्राहिमक मजहबो का लगभग अंत हो गया।

इस विषय पर ज्यादा जानकारी के लिए आप किसी भी ex muslim youtube channel (जैसे सचवाला, Zafar heretic, Adam, kohram) पर जा सकते है।

इस्लाम में शैतान का नाम इब्लीस है और वह बाकी शैतानों का मालिक है। हालांकि इब्लीस पुरानी अरबी मान्यताओं में जिन्नों का एक मुखिया बताया गया था। लेकिन क्योंकि इब्लीस और शैतान को एक जैसे दिखाने और बताने की होड़ लगी हुई थी इसिलिए पहले यहूदी-ईसाई कबीलो ने इब्लीस को शैतान या एक भ्रष्ट फरिश्ता जैसे बताया और बाद में इस्लाम ने भी ऐसे ही किया। कुरान की सूरह अल काफ के 50 पारे में लिखा हुआ है कि इब्लीस जिन्नों में से था जो की मक्का में वजूद में आई थी लेकिन सूरह बक़रह की आयत 30-34 में इसके उलट उसे फरिश्तो के बीच और उनके जैसा दर्शाया गया है, जो कि मदीना में उतरी हुई आयते है। ऐसे स्पष्ट तौर पर इसिलिए था क्योंकि मदीना में ही

इस्लाम में अगर हम शैतान का उल्लेख देखे तो शैतान के यह गुण हमे देखने को मिलते है:-

- शैतान बगावती(अवज्ञाकारी) है और अल्लाह के खिलाफ है।
- जो अल्लाह में विश्वास नही रखते है (काफ़िर) , वह शैतान के द्वारा प्रभावित हो जाते है।
- शैतान लोगो को बहकाता है ताकि वह अल्लाह में विश्वास न करे ताकि वह उन्हें जहन्नुम (इस्लामिक नरक) में सजा देगा।
- काफ़िर(गैर मुस्लिम) लोग जहन्नुम जाएंगे।

आइए हम इन्ही तथ्यों को कुरान और हदीस की सहायता से देखते है और समझते है कि इस्लामिक शैतान कैसा है??

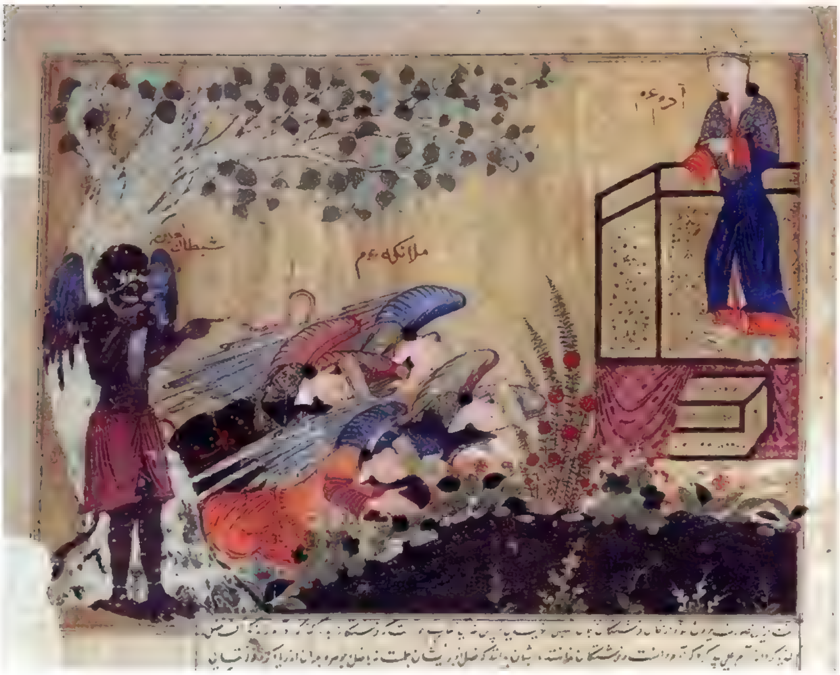
जिन्न एक खास तरह के मिथिहासिक जीव होते है जो कि इस्लाम में मूर्तिपूजक समाज के पुराने रिवाजो से ही जुड़े हुए थे।
इनका वजूद इस्लाम के भी पहले होने से अरबी समाज में होता था, हालांकि जिन्न की कहानी के असली कारण क्या था, यह कोई ठीक से नही बता सका है। हालांकि सभी इस बात से सहमत है की जिन्न इस्लाम का अंग न होकर, उससे पहले के मिथिहास से ताल्लुक रखते थे।

अरबी मिथिहास के अनुसार यह जीव आग से बने होते है और ज्यादातर लोगों को दिखाई नहीं देते और अपने मन मुताबिक लोगों को तंग या उनकी मदद करते है। जिन्न अच्छे और बुरे दोनों प्रकार के होते है।
जिन्न की पुरानी अरबी कहानी ज्यादातर रेगिस्तान से जुड़ी हुई है जिसमे जिन्न ज्यादातर बुरे दिखाए जाते है और वह लोगों को मार सकते थे या उनको मोहित तो कर सकते थे।
जिन्न का अरबी मानसिकता पर इतना प्रभाव था की वह यह भी मानते थे की जिन्न किसी को रचनात्मक प्रतिभा के लिए भी प्रेरित कर सकते है।
इस्लाम से पहले की एक अरबी कहानी में एक जिन्न मंजूर ने एक अरबी औरत हब्बाह को मरहम दवा करने की कला सिखाई थी।

हालांकि यह जिन्न नाम का किरदार रोमन साम्राज्य के जीनियस नाम के अर्धदेवता से बहुत हद तक मेल खाते है जो की लोगों को रचनात्मक शक्ति के लिए उत्तरदाई होते है। यह हैरानी की बात है की जिन्न का बहुवचन जिन्नी होता है जो की रोमी जीनियस के बहुवचन से मेल खाता है। रोमन साम्राज्य के टाइबरियस और अगस्तस के राज्य विस्तार के दौरान अरब साम्राज्य और रोमन लोगों में जो परस्पर मेल मिलाप हुआ, उसी में इस जिन्न नामक किरदार के होने की संभावना कही जाती है।

हालांकि जरथुस्थरावादी लोगो के यहां भी जैनी नाम के दुष्ट जीवों की परिकल्पना थी जो की जिन्न की धारणा से मेल खाती है, फिर भी अरब में पहले से ही मूर्तिपूजको के अपने रेगिस्तानी देवी देवता भी होते थे जिनकी पूजा रेगिस्तानी गुफाओं और दर्रा में हुआ करती थी। हालांकि जिन्न अरबी मूर्तिपूजक देवताओं से कम शक्ति वाले थे, जिस वजह से उनकी पूजा अकेले में की जाती थी और अरबी देवताओं की पूजा खुले में।

इस्लाम की अल जिन्न नाम की सुरा यह स्पष्ट करती है की जिन्नो की इस्लाम से पहले की अवधारणा को पूर्णतः इस्लाम ने कैसे बदल कर रख दिया और जिन्नो को भी मुस्लिम या काफिर हो जाना बताया गया। दरअसल ये बात दिखाती है की कैसे इस्लाम ने अपने से पहले की जिन्न की विचारधारा को अपने अनुसार बदल दिया और जिन्नो को भी बाकी अरबी देवताओं की तरह अल्लाह से छोटा और कमजोर दिखाया।



इब्लीस या शैतान को कुरान के सूरह 18:50 में जिन्न होने का दावा है लेकिन फिर भी कुछ इस्लामिक बुद्धिजीवियों का मानना है की वो जिन्न नहीं बल्कि भ्रष्ट हुआ फरिश्ता है। आप सुरह 18:50 को देखिए।
लेकिन कुरान की सुरा अल बकराह की आयत 30–34 में उसे बिगड़ा फरिश्ता बना दिया गया। ऐसा अंतर किस वजह से हुआ?

दरअसल यह सुरा काफ(18) मक्का में उतरी सुरा है और सुरा बकराह मदीना में उतरी हुई सुरा है। जब तक नबी मक्का में रहते रहे, उन्होंने इब्लीस को एक जिन्न के रूप में ही बताया क्योंकि मक्का में रहने वाले अरबी समाज में इब्लिस जिन्न ही था, लेकिन जब वह मदीना को हिजरत करके चले गए तो उनका ध्यान यहूदी कबीलों को इस्लामी लाने में हो गया इसीलिए उन्होंने इब्लिस को मदीना के यहूदी और नासरिनी लोगों के सामने एक भ्रष्ट फरिश्ता बताया गया। इस प्रकार शैतान अब जिन्न भी बनाया जा चुका था।

18:50

وَإِذْ قُلْنَا لِلْمَلَائِكَةِ اسْجُدُوا لِآدَمَ فَسَجَدُوا إِلَّا إِبْلِيسَ كَانَ مِنَ الْجِنِّ فَفَسَقَ عَنْ أَمْرِ رَبِّهِ ۗ
أَفَتَتَّخِذُونَهُ وَذُرِّيَّتَهُ أَوْلِيَاءَ مِن دُونِي وَهُمْ لَكُمْ عَدُوٌّ ۚ بِئْسَ لِلظَّالِمِينَ بَدَلًا

याद करो जब हमने फ़रिश्तों से कहा, "आदम को सजदा करो।" तो इबलीस के सिवा सबने सजदा किया। वह जिन्नों में से था। तो उसने अपने रब के आदेश का उल्लंघन किया। अब क्या तुम मुझसे इतर उसे और उसकी सन्तान को संरक्षक मित्र बनाते हो? हालाँकि वे तुम्हारे शत्रु हैं। क्या ही बुरा विकल्प है, जो ज़ालिमों के हाथ आया!(

जिधर ईसाइयत में यहोवा ने शैतान को आदम और हव्वा को सेब या ज्ञान का फल खिलाने के लिए ईसाई स्वर्ग से बाहर निकाल दिया था और इस के बाद शैतान और यहोवा का कोई सीधी घटना ईसाइयत में नहीं दिखती , इस्लाम में एक बहुत ही अलग तरह की कहानी दिखाई और बताई जाती है।

इस्लाम की मुख्य पुस्तक कुरान में शैतान की एक ऐसी कहानी दिखाई और बताई जाती है जिसमे इस्लाम का ईश्वर जिसे अल्लाह कहते है, वह सभी को आदम को झुक कर सलाम करने को कहते है लेकिन शैतान अकेला ही ऐसा करने के लिए मना कर देता है। इस वजह से अल्लाह शैतान को जन्नत (इस्लामिक स्वर्ग) से बाहर निकाल देते है।
इस कहानी का जिक्र कुरान की सूरह अल-हिज्र की आयत 28 से लेकर 43 में बड़े ही विस्तार से किया गया है। कुरान की आयत नंबर 27 में बताया है की जिन्नो को अल्लाह ने आग से बनाया था।

15:27

وَالْجَانَّ خَلَقْنَاهُ مِن قَبْلُ مِن نَّارِ السَّمُومِ

और उससे पहले हम जिन्नों को लू रूपी अग्नि से पैदा कर चुके थे।

फिर *28*वी से लेकर *31* आयत में लिखा है की अल्लाह ने इंसानो *(*मानवो*)* को मिटटी से बनाया था और सभी फ़रिश्तो को बोला की जब मैं इस इंसान में रूह *(*आत्मा*)* फूँकूँगा तो तुम लोग इसके आगे झुक कर सलाम करना, जिसका सभी ने पालन किया लेकिन सिर्फ इब्लीस ने ऐसा नहीं किया।

15:28

وَإِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلَائِكَةِ إِنِّي خَالِقٌ بَشَرًا مِّن صَلْصَالٍ مِّنْ حَمَإٍ مَّسْنُونٍ

याद करो जब तुम्हारे रब ने फ़रिश्तों से कहा, "मैं सड़े हुए गारे की खनखनाती हुई मिट्टी से एक मनुष्य पैदा करनेवाला हूँ।

15:29

فَإِذَا سَوَّيْتُهُ وَنَفَخْتُ فِيهِ مِن رُّوحِي فَقَعُوا لَهُ سَاجِدِينَ

फिर अल्लाह ने इब्लीस से पूछा कि तूने झुक कर सजदा क्यों नही किया, तो उसने कहा कि मैं आग से पैदा हुआ, उस आदमी को सजदा क्यों करू जो मिट्टी से उपजा है?
इस नाफरमानी(अनादर) के लिए अल्लाह ने इब्लीस को जन्नत से बाहर निकाल दिया।

قَالَ يَا إِبْلِيسُ مَا لَكَ أَلَّا تَكُونَ مَعَ السَّاجِدِينَ 15:32

कहा, "ऐ इबलीस! तुझे क्या हुआ कि तू सजदा करनेवालों में शामिल नहीं हुआ?"

قَالَ لَمْ أَكُن لِّأَسْجُدَ لِبَشَرٍ خَلَقْتَهُ مِن صَلْصَالٍ مِّنْ حَمَإٍ مَّسْنُونٍ 15:33

उसने कहा, "मैं ऐसा नहीं हूँ कि मैं उस मनुष्य को सजदा करूँ जिसको तू ने सड़े हुए गारे की खनखनाती हुए मिट्टी से बनाया।"

قَالَ فَاخْرُجْ مِنْهَا فَإِنَّكَ رَجِيمٌ 15:34

कहा, "अच्छा, तू निकल जा यहाँ से, क्योंकि तुझपर फिटकार है!

وَإِنَّ عَلَيْكَ اللَّعْنَةَ إِلَىٰ يَوْمِ الدِّينِ 15:35

जब अल्लाह ने इब्लीस को जन्नत से बेदखल कर दिया था तो इब्लीस ने अल्लाह से अनुमति ले ली कि वह उन लोगो को बहकायेगा जो कि अल्लाह के बताए रास्ते पर नहीं चलेंगे, जिसका जिक्र कुरान 15:40-42 , 16:100, 4:118 में दिया गया है। यहां पर आप समझ लीजिए कि जो अल्लाह के रास्ते यानी कि इस्लाम और शरीयत को नहीं मानते, वह इस्लाम के अनुसार शैतान के द्वारा बहका दिए गए है या शैतान के अनुयायी है।

कुरान 15:48 में लिखा है कि शैतान या इब्लीस की मानने वालों का अंजाम जहन्न्नुम या इस्लामिक नरक होगा, यानी की अल्लाह की न मानने वालो का अंजाम कुरआन के हिसाब से जहन्न्नुम है।

15:38
إِلَىٰ يَوْمِ الْوَقْتِ الْمَعْلُومِ

उस दिन तक के लिए जिसका समय ज्ञात एवं नियत है।"

15:39
قَالَ رَبِّ بِمَا أَغْوَيْتَنِي لَأُزَيِّنَنَّ لَهُمْ فِي الْأَرْضِ
وَلَأُغْوِيَنَّهُمْ أَجْمَعِينَ

उसने कहा, "मेरे रब! इसलिए कि तूने मुझे सीधे मार्ग से विचलित कर दिया है, अतः मैं भी धरती में उनके लिए मनमोहकता पैदा करूँगा और उन सबको बहकाकर रहूँगा,

15:40
إِلَّا عِبَادَكَ مِنْهُمُ الْمُخْلَصِينَ

सिवाय उनके जो तेरे चुने हुए बन्दे होंगे।"

15:41
قَالَ هَٰذَا صِرَاطٌ عَلَيَّ مُسْتَقِيمٌ

कहा, "मुझ तक पहुँचने का यही सीधा मार्ग है,

15:42
إِنَّ عِبَادِي لَيْسَ لَكَ عَلَيْهِمْ سُلْطَانٌ إِلَّا مَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ
الْغَاوِينَ

मेरे बन्दों पर तो तेरा कुछ ज़ोर न चलेगा, सिवाय उन बहके हुए लोगों के जो तेरे पीछे हो लें।

15:43
وَإِنَّ جَهَنَّمَ لَمَوْعِدُهُمْ أَجْمَعِينَ

निश्चय ही जहन्नम ही का ऐसे समस्त लोगों से वादा है

इसी तरह कुरान के 4:119-121 में भी इसी बात का वर्णन है कि जो शैतान या इब्लीस का साथ देंगे वह जहन्नुम में जाएंगे या घाटे में रहेंगे।

4:119 وَلَأُضِلَّنَّهُمْ وَلَأُمَنِّيَنَّهُمْ وَلَآمُرَنَّهُمْ فَلَيُبَتِّكُنَّ آذَانَ
الْأَنْعَامِ وَلَآمُرَنَّهُمْ فَلَيُغَيِّرُنَّ خَلْقَ اللَّهِ وَمَن يَتَّخِذِ الشَّيْطَانَ
وَلِيًّا مِّن دُونِ اللَّهِ فَقَدْ خَسِرَ خُسْرَانًا مُّبِينًا

और उन्हें अवश्य ही भटकाऊँगा और उन्हें कामनाओं में उलझाऊँगा, और उन्हें हुक्म दूँगा तो वे चौपायों के कान फाड़ेंगे, और उन्हें मैं सुझाव दूँगा तो वे अल्लाह की संरचना में परिवर्तन करेंगे।" और जिसने अल्लाह से हटकर शैतान को अपना संरक्षक और मित्र बनाया, वह खुले घाटे में पड़ गया।

4:120 يَعِدُهُمْ وَيُمَنِّيهِمْ ۖ وَمَا يَعِدُهُمُ الشَّيْطَانُ إِلَّا غُرُورًا

वह उनसे वादा करता है और उन्हें कामनाओं में उलझाए रखता है, हालाँकि शैतान उनसे जो कुछ वादा करता है वह एक धोके के सिवा कुछ भी नहीं होता।

4:121 أُولَٰئِكَ مَأْوَاهُمْ جَهَنَّمُ وَلَا يَجِدُونَ عَنْهَا مَحِيصًا

वही लोग हैं जिनका ठिकाना जहन्नम है और वे उससे अलग होने की कोई जगह न पाएँगे।

इसी प्रकार से कुरान के 17:63, 22:4, 35:6, 38:85, 59:16-17 में भी यह बात स्पष्ट हो जाती है कि जो भी कोई अल्लाह के खिलाफ है, वो इस्लाम के हिसाब से शैतान का साथी है और जहन्नुम जाएगा।

59|16|इनकी मिसाल शैतान जैसी है कि जब उसने मनुष्य से कहा, “क़ुफ़्र कर!” फिर जब वह कुफ़्र कर बैठा तो कहने लगा, “मैं तुम्हारी ज़िम्मेदारी से बरी हूँ। मैं तो सारे संसार के रब अल्लाह से डरता हूँ।”

59|17|फिर उन दोनों का परिणाम यह हुआ कि दोनों आग में गए, जहाँ सदैव रहेंगे। और ज़ालिमों का यही बदला है

59|18|ऐ ईमान लानेवालो! अल्लाह का डर रखो। और प्रत्येक व्यक्ति को यह देखना चाहिए कि उसने कल के लिए क्या भेजा है। और अल्लाह का डर रखो। जो कुछ भी तुम करते हो निश्चय ही अल्लाह उसकी पूरी ख़बर रखता है

यह सभी उल्लेख, हमारे द्वारा दिए गए तथ्यों को कुरान के द्वारा साबित करते है की इस्लाम में गैर मजहबी लोगों को सीधे सीधे शैतान के सहायक या उनसे प्रभावित मान लिया जाता है। हालांकि अगर हम इस्लाम का इतिहास देखे तो हमे समझ में आएगा की इसके पीछे का कारण इस्लाम के संस्थापक मुहम्मद की काफिरो या गैर मुस्लिमो के प्रति नफरत ही थी। मुहम्मद स्वयम को एक नबी साबित करवाना चाहते थे लेकिन काफिरो ने कभी भी उन्हें नबी नही माना इसीलिए उन्होंने काफिरो को शैतान से जोड़ कर उन्हें शैतान नामक एक काल्पनिक यहूदी किरदार से जोड़ दिया।

मिस्टर शैतान का कुरान में दूसरी बार जिक्र एक बहुत बड़ी घटना है जो की कुरान के बड़े बड़े दावों को पोल खोल के रख देता है और साथ ही साथ अल्लाह और शैतान के झूठ को बेनकाब कर के रख देता है।
इब्न ए इशाक की लिखी किताब के मुताबिक यह घटना तब की है जब हजरत मुहम्मद मक्का में रहकर अपने मजहब को फैलाने की कोशिश में लगे हुए थे। इसी बीच मक्का के मूर्तिपूजकों ने समझौते के लिए इस बात की पेशकश की वह मुस्लिमो की खुशी के लिए अल्लाह नाम के खुदा की इबादत करेंगे और मुहम्मद भी ऐसा ही करे जिससे की मक्का में चल रहे झगड़े खत्म हो। लेकिन मुहम्मद ने ऐसा कुछ भी करने से मना कर दिया और कुरान की सूरा काफ़िरू में साफ साफ अल्लाह के नाम का ऐलान सुना दिया की तुम्हारे लिए तुम्हारा खुदा और मेरे लिए मेरा।

इस्लाम की किताब अल तबारी के वॉल्यूम 6 पेज 108 के अनुसार एक बार हजरत मुहम्मद सूरह नज्म को पढ़कर सुना रहे थे और उसकी 19 से 21 आयत को सुना रहे थे। उस समय यह आयत कुछ इस तरह थी:-

19. तो क्या तुमने अल-लात, उज्जा
20. और तीसरी एक, मनात पर गौर(ध्यान) किया।
21. यकीनन ये एक गरनिक(मददगार देवी या मददगार परिन्दे) है, और इनकी इबादत से शफ़ाअत (मदद) मिलती है।

ये बात को सुनते ही अरब के काफिरो यानी मूर्तिपूजकों को लगा की मुहम्मद ने शायद उनके देवियो की तारिफ़ करी है और सभी ने यानी मुहमद और काफ़िर मिलकर एक साथ तीनो देवियो को सजदा किया। इस बात का जिक्र सही अल बुखारी की हदीस 1067 में भी है।

Sahih al-Bukhari 1067

Narrated `Abdullah bin Mas`ud:

The Prophet (ﷺ) recited Suratan-Najm (103) at Mecca and prostrated while reciting it and those who were with him did the same except an old man who took a handful of small stones or earth and lifted it to his forehead and said, "This is sufficient for me." Later on, I saw him killed as a non-believer.

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ، قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، قَالَ سَمِعْتُ الأَسْوَدَ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ ـ رضى الله عنه ـ قَالَ قَرَأَ النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم النَّجْمَ بِمَكَّةَ فَسَجَدَ فِيهَا، وَسَجَدَ مَنْ مَعَهُ، غَيْرَ شَيْخٍ أَخَذَ كَفًّا مِنْ حَصًى أَوْ تُرَابٍ فَرَفَعَهُ إِلَى جَبْهَتِهِ وَقَالَ يَكْفِينِي هَذَا. فَرَأَيْتُهُ بَعْدَ ذَلِكَ قُتِلَ كَافِرًا.

Reference	: Sahih al-Bukhari 1067
In-book reference	: Book 17, Hadith 1
USC-MSA web (English) reference (deprecated numbering scheme)	: Vol. 2, Book 19, Hadith 173

क़ुरान की सूरह अन निसा की आयात 116 में साफ तौर पर ये लिखा है की अल्लाह को शिर्क (अल्लाह के अलावा किसी और की इबादत) पसन्द नही है और जो यह करते है वह भटक गए है, वही सूरह निसा की आयत 46 में साफ तौर से कहा है की अल्लाह शिर्क को कभी माफ नही करता है, बाकी कोई भी गुनाह माफ कर देता है।
इस तरह से आप समक्ष सकते है की इस्लाम में शिर्क एक बहुत बड़ा अपराध है और पाप है।

आप इस बात को जान लीजिये की सूरह नज्म की आयत 19-21 करीब करीब 8 साल तक ऐसे ही चलती रही और उन्हें कभी भी बदलने की जरूरत नही समझी गयी। इसी दौरान हजरत मुहम्मद ने मक्का से अपना ठिकाना बदल कर मदीना कर लिया था तो कुछ मदीना के दूसरे मजहब वालो ने इन आयतों और देवियो को लेकर सवाल जवाब करने लगे तो उन्हों ने बड़ी चालाकी से यह कह

दिया की मेरे मुंह से गलती से यह तारीफ काफिरो की देवियो के लिए निकल गयी। लेकिन मुझे जिब्रील ने आकर बता दिया है की इसके लिए इब्लीस जिम्मेदार है। इस घटना का जिक्र अल-तबारी के वॉल्यूम 6 के पेज 106 में इस बात का विवरण है।
इसके बाद मुहम्मद ने यह कह दिया की सूरह नज्म की आयत को अल्लाह ने मंसूख(रद्द) कर दिया है और उसके बदले में दूसरी आयत डाल दी, जो कि आपको आज की कुरान में मिलती है:-

19. तो क्या तुमने अल-लात, उज्जा
20. और तीसरी एक, मनात पर गौर(ध्यान) किया।
21. तो क्या तुम्हारे लिए बेटे है और उसके लिए बेटियां है..

इसके अर्थ यह है कि तुम इंसान तो खुद के लिए बेटे मांगते हो और अल्लाह अपने लिए बेटियां रखेगा। इस आयत से हम अरबी और मुस्लिम समाज का नारी के प्रति रवैया भी समझ सकते है।

इस तरह से मुहम्मद ने अपनी चालाकी से अपनी गलती को छुपा लिया और उसे शैतान के सर पर मढ़ दिया। यही नही उसने सूरह अल हज्ज की आयत 52 भी उस समय पढ़ी जिसमे बताया था की अल्लाह ने पहले भी दूसरे नबियो पर बही उतारी थी जिसमे शैतान ने खलल डाला लेकिन अल्लाह ने बाद में उसे ठीक कर दिया। लेकिन अगर देखा जाए तो यह आयात सरासर झूठी है क्यूंनकी शैतान ने यहूदी इतिहास में या ईसाई इतिहास में किसी पैगम्बर के शब्दो में फेरबदल नही किया था। ईसाई इतिहास में तो यीशु मसीह ने शैतान को फटकार लगा कर पहचान लिया था तो क्या मुहम्मद शैतान को पहचान नही सके??

इस घटना को ही इस्लामी इतिहास में शैतानी आयत के नाम से जानते है और इस से बहुत से सवाल खड़े होते है। पहले तो यह की अगर कुरान और अललाह सच्चा होते तो फिर अल्लाह ने अपने इतने बड़े नबी को शैतान नाम के किरदार के हाथो कैसे बहकने दिया? और अगर शैतान ऐसा कर सकता है तो इस हिसाब से तो इस्लामिक शैतान तो अल्लाह से भी ज्यादा ताकतवर मालूम होता है की उसने अल्लाह के इतने बड़े नबी तक को बहका कर उससे अपनी आयात बुलवा ली… एक और प्रश्न यह है अगर शैतानी आयात उतर ही गयी थी तो अल्लाह और जिब्रील को 8 साल का समय क्यों लगा ये पहचानने में की यह आयत शैतान ने बदलवा दी है…जब लोगों ने हजरत मुहम्मद से आठ साल बाद इसके बारे में पूछा तब उन्होंने कहा कि यह शैतानी है, और इसके बाद ही जिब्रिल को मालूम पड़ा? क्या अल्लाह कुरान का मुहाफिज होने का दावा नही करता है तो ऐसी गलती कैसे होने दी गई???

ज्यादा समझने के लिए आप ex muslim zafar चैनल की इस वीडियो देख सकते है।

इस तरह से कुरान और इस्लाम मिस्टर शैतान की ताकत के बारे खुद ही बताता है। कुरान की आयत 4:118 और 119 में अल्लाह और शैतान में एक बातचीत दिखाई गयी है जिसमें अल्लाह ने शैतान को फटकार लगाई थी और शैतान ने अल्लाह को धमकी दी है की मैं तेरे बंदों को भी बहका कर दिखाऊंगा। इन जगहों पर दिखाई देता है की अल्लाह की इस्लामिक शैतान पर कोई जोर नही चलता है और वह अल्लाह की बराबरी कर रहा है।

अभी तक हमने कुरान में मिस्टर शैतान को इस्लाम और अल्लाह का दुश्मन के तौर पर ही देखा है लेकिन कुरान अपनी बातों में मुसलमानो को फिर उलझा देती है।
कुरान की सूरह अल मुजादिला 58:10 बताती है की शैतान सिर्फ अल्लाह के रजामंदी पर ही मोमिनो को भटका सकता है....इस आयत से शैतान अल्लाह का नौकर जैसा बन जाता है जो की उसके हुकम का गुलाम है। लेकिन यह बात कुरान की 2:168, 2:208,17:53, 35:06, 3:60, 43:62 जिनमे लिखा हुआ है की शैतान तुम्हारा खुला दुश्मन है, के उलट है। अगर शैतान मोमिनो और अल्लाह का दुश्मन है तो अल्लाह के आदेशो को, क्यों एक दास की तरह मान रहा है और सिर्फ काफिरो और कुछ मोमिनो को ही भटका रहा है?

मिस्टर शैतान कुरान में एक चुगलखोर की तरह भी पेश किया गया है जो की मोमिनो को अल्लाह के खिलाफ भड़काता है। यह एक रोचक बात है कि कुरान में कई जगह पर चुगली बाजी को गलत बताया गया है लेकिन इसका कारण कोई अच्छाई फैलाना नही बल्कि हजरत मुहम्मद के अपने निजी अनुभव ही है।

कुरान की सूरह अन नास 114:4 में बताया है कि शैतान एक चुगलखोर है जो की इंसानो के दिल में फुसफुसाहट करके उन्हें बहकाता है।
यह बात भी हजरत मुहम्मद के जीवन से जुड़ी हुई एक बात है की अरब के मूर्तिपूजक समाज के लोग जब मुस्लिमो की बेईज्जत और गाली देने वाली हरकतों से तंग आ गए थे तो उन्होंने चुगलीबाजी और कानाफूसी करके ही मुहम्मद और मुस्लीमो की खिल्ली उड़ानी शुरू कर दी थी इसीलिए हजरत मुहम्मद को कानाफूसी से चिढ़ हो गयी थी और उसने बाद में इस चीज को एक बुरी बात ही घोषित कर दिया। मुहम्मद ने अपने जीवन में कितने ही कवियों और अपने आलोचकों को अपने मुस्लिम चेलो के जरिये मौत के घाट तक उतरवाया था क्यूंनकी वह या तो मुहम्मद का मजाक उड़ाते थे या उसके बारे में सच बोलते थे। अरबी कवयित्री अस्मा बिन मारवान और काफ बिन अशराफ का किस्सा उन्ही हत्याओं में से एक है।

इसके अलावा हदीस की किताबें शैतान की बातो से भरी पड़ी है जिसमे शैतान किस चीज से दूर रहेगा से लेकर वह क्या क्या कर सकता है की बाते बताई गई है?? हदीस की किताब एक मुस्लिम के दिल में शैतान से नफरत, डर और उससे बचने की बार बार और एक अजीब सी नसीहत देती है।

सही अल बुखारी की किताब 67 जिल्द 100 में बताया गया है की अगर आप संभोग से पहले एक इस्लामिक दुआ पढ़ते है तो शैतान आपकी बीवी के बच्चे को नुकसान नही पहुंचाएगा।

जामिया अल तिरमिधि की पुस्तक 48 हदीस 90 में बताया है कि मुर्गे की बांग फरिश्ते के पास होने की निशानी है और गधे का रेकना शैतान के पास होने का सबूत है।

Jami` at-Tirmidhi 3459

Abu Hurairah [may Allah be pleased with him] narrated that:

The Prophet said: "when you hear the crowing of the roosters, then ask Allah of His bounty, for verily they have seen an angel. When you hear the braying of a donkey, then seek refuge in Allah from **Shaitan**, [the rejected] for, verily, it has seen a **Shaitan**."

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنْ جَعْفَرِ بْنِ رَبِيعَةَ، عَنِ الأَعْرَجِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، رضى الله عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم قَالَ " إِذَا سَمِعْتُمْ صِيَاحَ الدِّيَكَةِ فَاسْأَلُوا اللَّهَ مِنْ فَضْلِهِ فَإِنَّهَا رَأَتْ مَلَكًا وَإِذَا سَمِعْتُمْ نَهِيقَ الْحِمَارِ فَتَعَوَّذُوا بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ فَإِنَّهُ رَأَى شَيْطَانًا " .

सुनना अन निसाई किताब 20 हदीस 11 में बताया गया है की शैतान ने किसी आदमी के कान में मूत्र कर दिया तो वह पूरी रात सोता रहा और अगले दिन सूरज चढ़ने पर जागा।

Sunan an-Nasa'i 1608

It was narrated that Abdullah said:

"Mention was made in the presence of the Messenger of Allah (SAW) about a man who slept all night until morning. He said: 'That is a man in whose ear the **Shaitan** has urinated.'"

أَخْبَرَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، قَالَ أَنْبَأَنَا جَرِيرٌ، عَنْ مَنْصُورٍ، عَنْ أَبِي وَائِلٍ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ، قَالَ ذُكِرَ عِنْدَ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم رَجُلٌ نَامَ لَيْلَةً حَتَّى أَصْبَحَ قَالَ " **ذَاكَ رَجُلٌ بَالَ الشَّيْطَانُ فِي أُذُنَيْهِ** " .

Grade: **Sahih**
(Darussalam)

Reference	: Sunan an-Nasa'i 1608
In-book reference	: Book 20, Hadith 11
English translation	: Vol. 2, Book 20, Hadith 1609

इस्लाम की हदीस की पुस्तकों में तो काले रंग के कुत्ते को भी शैतान कहा गया है। सुना इब्न माजा किताब 28 हदीस 11 में इस बात का जिक्र है, वही सही मुस्लिम किताब 4 हदीस 299 में भी यही कहा गया है की काला कुत्ता शैतान होता है। सुन्ना अबी दाऊद किताब 17 हदीस 3 में तो काले कुत्ते की हत्या का भी फरमान दिया गया है।

Sunan Abi Dawud 2846

Narrated Jabir ibn Abdullah:

The Prophet of Allah (saws) ordered to kill **dogs**, and we were even killing a **dog** which a woman brought with her from the desert. Afterwards he forbade to kill them, saying: Confine yourselves to the type which is **black**.

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ خَلَفٍ، حَدَّثَنَا أَبُو عَاصِمٍ، عَنِ ابْنِ جُرَيْجٍ، قَالَ أَخْبَرَنِي أَبُو الزُّبَيْرِ، عَنْ جَابِرٍ، قَالَ أَمَرَ نَبِيُّ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم بِقَتْلِ الْكِلاَبِ حَتَّى إِنْ كَانَتِ الْمَرْأَةُ تَقْدَمُ مِنَ الْبَادِيَةِ - يَعْنِي بِالْكَلْبِ - فَنَقْتُلُهُ ثُمَّ نَهَانَا عَنْ قَتْلِهَا وَقَالَ " عَلَيْكُمْ بِالأَسْوَدِ " .

इन सभी बातों से आप समझ सकते है की इस्लामिक समाज में शैतान के बारे एक प्रकार का भय या नफरत की स्थिति उपजाई गई है जिससे लोग उसके या उसके लोगों के प्रीत वैमनस्य रखे और इस्लामिक किताबें यह बिल्कुल स्पष्ट तौर पर कहती है की गैर मुस्लिम शैतान द्वारा प्रभावित है।
यानी की इस्लाम के अनुसार हर गैर मुस्लिम शैतान का दूत है। यह बात उन मुस्लिमो पर भी लागू होती है जो इस्लाम को छोड़ देते है।

जिस प्रकार ईसाइयत ने अपनी पुस्तको में एन्टीक्राइस्ट का जिक्र करके एक झूठे मशीहा का जिक्र किया था, अरब के मजहब इस्लाम में भी एन्टीक्राइस्ट की कहानी को मसीह अल दज्जाल के नाम से खूब भुनाया गया। जिधर ईसाइयत में अंतिक्रिस्ट के सिर्फ गुणों की चर्चा की गयी थी, इस्लाम ने तो दज्जाल की शक्ल तक का हिसाब अपनी किताबो में लिख दिया था। इस्लाम की हदीस की पुस्तक सही मुस्लिम के 54:153 में दज्जाल को 70000 यहूदियों के साथ चलते हुए इस्फ़हान से आएगा। सही बुखारी 2.26.626 के अनुसार दज्जाल एक आंख से काना होगा और

उसके सर पर काफ़िर लिखा हुआ होगा और वह कयामत के समय पर दुनिया में आएगा। इसीलिए उसकी बनाई हुई चित्रो में उसके चित्रण को ऐसे किया गया था।



सही मुस्लिम 54:44 के अनुसार रोमन साम्राज्य जब सीरिया के अल अमाक में आएगा, तब उसे मदीना के मुस्लिम रोकेंगे और उनकी हार के बाद दजाल आएगा।

हालांकि इस बात के लिए भी हदीसे बहुत हद तक दावा कर चुकी थी की यह बात मुहम्मद के समय में ही होने वाली है लेकिन आज तक 1400 साल बीत चुके है और न तो मुस्लिम–ईसा वापस आये जो की जिहाद करके यहूदियों का खात्मा करेंगे और न ही यहूदी लोगों का समर्थन प्राप्त दज्जाल आया है। इस्लामी व्यक्ति आजतक कई लोगो जैसे कि बराक ओबामा, जॉर्ज बुश, कई देशों पर जैसे अमेरिका, इजराइल और यहां तक कि टिकटोक और इंटरनेट पर भी दज्जाल होने के इल्जाम लगाते रहते है जो कि कोई भी दिमाग वाला आदमी समझ सकता है कि बे–बुनियाद और सरफिरा दावा है।

इस तरह से कुरान का इब्लीस या शैतान बहुत ही विरोधाभासी चरित्र है जो की अरबी मूर्तिपूजक समाज, यहूदी और ईसाई मजहबो से चोरी लिया गया है और इस्लाम में सिर्फ गैर मुस्लीमो, मूर्ति पूजको से नफरत के लिए घड़ा गया है ताकि उन्हें शैतान और जहन्नम से डरा कर इस्लाम में कैद रखा जा सके।

भाग 5: क्या शैतान तीनो मजहबो में एक समान है?

अभी तक हमने तीनो इब्राहिमिक मजहबो में मिस्टर शैतान को देख लिया है तो यह आसान होगा की हम जान सके की क्या मिस्टर शैतान हर इब्राह्मिक मजहब में एक समान ही है या फिर मिस्टर शैतान हर मजहब में बिल्कुल अलग है। इसी से आप समझ जायेंगे की यहूदी मजहब से चला शैतान इस्लाम तक आते आते क्या बन गया।

सबसे पहले तो मिस्टर शैतान के नाम को देखे तो उसका यहूदी नाम शैतान तीनो मजहबो में एक जैसा ही है जिसका कारण यहूदी मजहब के लोगो का रोमन अरब और इस्राइली क्षेत्रो में होना ही था, जिसकी पुष्टि बड़ी ही आसानी से हमे रोम और अरब के इतिहास में मिल जाती है। हालांकि इस्लाम ने मिस्टर शैतान को अपने इब्लीस यानी की जिन्नों के सरदार से भी जोड़ा था लेकिन अरब के यहूदी लोगो(जिनमे से कई मुसलमान बना दिए गए थे) की वजह से शैतान शब्द ही ज्यादातर आपको कुरान में मिलता है। वही दूसरी और ईसाइयत ने तो शैतान को नामो से मालामाल ही कर दिया। ईसाइयत ने दूसरे मत सम्प्रदाय से ताल्लुक रखने वाले हरेक देवी देवताओ को शैतान से जोड़ दिया और उनके नाम के असली अर्थ बदल दिए।

दूसरी ओर जहां पर शैतान यहूदी मजहब में यहोवा का नौकर या गुलाम है, वही पर ईसाइयत ने उसे एक बगावती फरिश्ते की तरह पेश किया और इस्लाम की माने तो शैतान कभी अल्लाह का नौकर तो कभी दुश्मन ही बन जाता है।

यहूदी कहानियों में जिधर शैतान को कभी भी जन्नत से बेदखल नही किया गया, ईसाइयत ने उसे अदम और हव्वा के साथ ही ईसाई जन्नत से बाहर निकाल दिया था, वही इस्लाम ने तो उसे सिर्फ आदम को सजदा न करने के लिए बाहर फिकवा दिया। ईसाइयत के पैरोकार ने इस कड़ी में और भी बहुत सी कहानियां जोड़ी जैसे शैतान का स्वर्ग में युद्ध, शैतान लोगों से रूह का सौदा करता है इत्यादि।

इन सभी उपरोक्त बातों से हमें यह साफ हो जाता है की मिस्टर शैतान की अवधारणा जरूर यहूदी मजहब की वजह से इब्राहिमिक मजहबो में फैली होगी लेकिन शैतान को हर मजहब ने अपने तौर तरीके रिवाजो और अपने जरुरतो के हिसाब से बदल लिया।

जिस चीज में शैतान हर मजहब में समान है, वह है की शैतान नाम का जीव उस मजहब के खुदा का दुश्मन है और जो उस मजहब को नही मानता है वो इस नकली शैतान के दोस्त है। यानी कि यहूदी शैतान यहोवाह का दुश्मन और गैर यहूदियों का दोस्त, अरबी शैतान अल्लाह का दुश्मन और काफिरो का दोस्त और ईसाई शैतान गैर ईसाई लोगों का दोस्त और गॉड/जीसस का दुश्मन। इसी अवधारणा की वजह से यह तीनों मजहब कभी भी आपस मे दोस्त नही बन सके और हमेशा ही एक दूसरे को अपने मजहब में लाने के लिये दूसरों के खून की नदियां बहाते रहे।

इस प्रकार से यह बात दिखाई दे जाती है की यह अवधारणा महज एक चाल है जिससे की गैर मजहब के लोगो को दोष देकर उनके खिलाफ षड्यंत्र करना आसान हो जाए और उनकी प्रताड़ना में कोई शक न रहे।

भाग 6: शैतान और कला क्षेत्र

शैतान का उद्गम जरूर अब्राहमिक कल्ट्स ने अपने फायदे के लिए अपने दुश्मनो को बदनाम करने के लिए घड़ा होगा लेकिन समय के अंतराल और विज्ञान के युग में शैतान की कहानी को विज्ञान ने बड़ी आसानी से झुठलाना शुरू कर दिया था। इससे वैज्ञानिक विचारधारा बढ़ने लगी और अब्राहमिक विचारधारा को टक्कर मिलने लगी पर इसके लिए अब्राहमिक कल्ट्स जैसे की ईसाइयत और इस्लाम ने प्रिंट मीडिया, कहानी, नॉवेल और फिल्म इत्यादि माध्यम का बखूबी सहारा लिया क्योंकि वह यह बात समझ गए थे की चलचित्र और साहित्य व्यक्ति के मन में ज्यादा देर तक और प्रभावशाली रूप से असर करते है। ये कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी की शैतान की मनगढ़ंत कहानी को साहित्य और प्रिंट मीडिया ने बहुत ज्यादा बल दिया था और अभी भी दे रहा है।

शैतान की अभी तक हमने बहुत सी बातें की लेकिन अभी तक हमने शैतान के रूप और बनावट की चर्चा सम्पूर्णता से नहीं की। अब हम यह समझते है की शैतान के रूप के पीछे भी क्या राज है??

जैसे कि हमने यह देखा की शुरुआती समय में तीनो मजहब की किताबों में शैतान का रूप रंग या किसी भी अन्य वेशभूषा या पोशाक की कोई चर्चा कभी नही की गयी। इसकी वजह साफ है की इब्राहिमिक मजहबो को कभी भी इसकी जरूरत नही पड़ी की वह अपनी मनघड़ंत कहानियों में शैतान कैसा दिखता है, कहा रहता है, क्या खाता है इसकी चर्चा करे?? लेकिन समय के अंतराल में विभिन्न अन्य लोगों ने यह काम उसका जिक्र अपने अंदाज में किया जिससे शैतान का रूप रंग और लिंग(gender) तक बहुत बार बदल गया।

ज्यादातर अगर आप ऑनलाइन शैतान शब्द को ढूंढेंगे तो आपको इस प्रकार की तस्वीरे मिलेंगी, जिनमे एक सींगो वाले डरावने आदमी को दिखाया जाता है जो की लाल रंग के साथ जुड़ा हुआ होता है।



यह आदमी भयानक सा दिखता है, जो की एक पूंछ के साथ होता है और ज्यादातर एक त्रिशूल के साथ दिखाई देता है। कभी कभी शैतान को एक बकरे के सर वाले आदमी जैसा दिखाया जाता है या बकरे के शरीर जैसा दिखाया जाता है



हम मिस्टर शैतान के रूप की अब विवेचना करते है की ये अजीब से रूप के पीछे आखिर कहानी क्या है?

शैतान के जो सींग है या शैतान की सींगों का होना, इसे पुराने मत सभ्यता के लोगो से ही मिला है। आपको इसी पुस्तक के भाग 2 ईसाइयत में हमने इश्तर नाम की मेसोपोटामियन देवी का एक चित्र दिखाया था जिसमें इश्तर(innana) के सर पर सींग थे। इसके अलावा हमने आपको बाल नाम के एक कनाती देवता के बारे में भी बताया था। यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि देवता बाल के भी मूर्ति में सींग हुआ थे।



इन उदाहरणों से आप समझ सकते है कि पुरातन यूरोपियन और यहूदी विचारधारा में सींग का मतलब बर्बर और दुष्ट माना जाता था जिसके पीछे का कारण इसका गैर मजहबी कबीलों के साथ जुड़ा होना ही था।

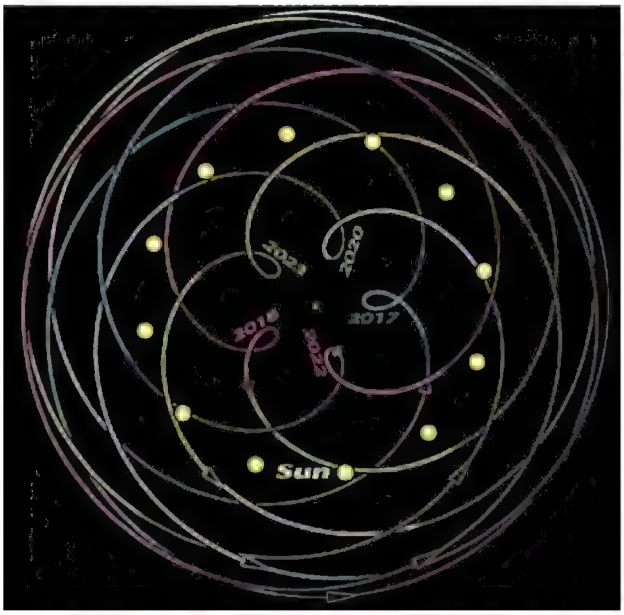
हम ईसाई वाले भाग में यूनानी रोमन देवता पैन/फौनस का भी जिक्र कर ही चुके थे जिसके रूप से चोरी करके ही बकरे वाले शैतान का रूप बनाया गया था। बाद में कई चित्रो, कहानियों में भी इसी बकरे वाले रूप से पैन की हर मूर्ति भी इसी तरह शैतान की मूर्ति बना दी गयी थी।

इसके अलावा अजाजेल नामक बकरे की कहानी जिसका जिक्र हम ईसाई वाले भाग में कर चुके है जिसके गलत अनुवाद की वजह से ईसाई लोगो ने अजाजेल को शैतान के रूप में परिवर्तित कर दिया था, वही शैतान और बकरे के बीच का लिंक है। अजाजेल या बलि के बकरे की वजह से ही शैतान के रूप में बकरे का जिक्र और उसे बुरे के तौर पर किया जाने लगा था, हालांकि किसी भी पुरानी यहूदी कहानी में कभी भी शैतान की बकरे के रूप में कल्पना नहीं की गयी थी।

शैतान के साथ अक्सर एक पांच कोने वाले तारे को जिसे अंग्रेजी में पेंटाग्राम(Pentagram) भी जोड़कर दिखाया जाता है। नीचे दिए गए चिन्ह में आप पेंटाग्राम के निशान को देख सकते है।



यह निशान एक बहुत ही प्राचीन निशान था जो की मेसोपोटामियन देवी इशतार, यूनानी देवी एफ्रोडाइट और रोमन देवी वीनस का भी निशान रहा था। यह बड़ी रोचक बात थी इशतार के निशान के असली रहस्य का किसी को भी आधुनिक समय तक ज्ञान नही था, जिसे आधुनिक विज्ञान ने पेंटाग्राम और वीनस के पीछे छुपे असली प्राचीन धारणा को सामने लाया है।
वीनस ग्रह के अपनी धुरी और सूर्य के इर्द गिर्द चक्कर काटने को प्राचीन सभ्यता के लोगो ने बड़े गौर से देखा था। वह इसे धरती से देखने के नजरिये से देखते थे जिसमें तारामंडल में सूर्य और वीनस एक साथ घूमते दिखाई देते थे। उन्होंने अपने मानस में इसके घूमने के आधार पर एक काल्पनिक चित्र बनाया जिसमे एक पांच नोक वाले तारे या कमल के पुष्प की छवि जैसी बनती थी।



इस बात को ज्यादा समझने के लिए आप निम्नलिखित वीडियो को देख सकते है जिसमे धरती के देखने के पक्ष से लेकर सूर्य और वीनस के इस चक्र को समझ सकते है। यह वीडियो निष्पक्ष रूप से आधुनिक वैज्ञानिक ढंग से तैयार की गयी है जो कि कमल पुष्प या पांच नोक वाले तारे की कल्पना का असली रहस्य सामने लाता है।

यह है वह वीडियो जिसे आप देख सकते है।

https://youtu.be/_aocKBYyjM0

https://www.instagram.com/reel/CnraTGAB_da/?igshid=Yzg5MTU1MDY=

प्राचीन सभ्यता से चला वीनस ग्रह का यह चिन्ह का अर्थ वह लोग भूल गए लेकिन यह तारा या पेंटकल हर उस देवी से जुड़ा जो कि वीनस ग्रह से सम्बंधित थी, जैसे कि मेसोपोटामिया की देवी इननाना, इशतार, यूनान की एफ्रोडाइट और रोम की कुलदेवी वीनस। लेकिन वक्त के अंतराल में जब रोम की कुलदेवी वीनस को ईसाइयत को बुरा बना दिया तो उसके निशान को भी शैतानी घोषित कर दिया था। आजकल पांच कोने वाले तारे को शैतानी रस्म से जोड़ कर देखा जाता है जो कि लोगो की एक बहुत बड़ी भयंकर भूल है।

शैतान के हाथ में अक्सर एक प्रकार का त्रिशूल या एक सर्पदण्ड दिखाया जाता है जो की फिर से गैर इब्राहिमिक समाज के देवों को नीचा दिखाने के लिए किया गया एक छल है। रोमन देवता नेपट्यून (neptune) जो की समुद्र और घोड़ो के देवता थे, वह अन्य रोमन देवताओ की तरह ही रोम में पूजे जाते थे। उन्हें रोमन जल सेना द्वारा पूजा जाता था जो कि पानी मे अपनी सुरक्षा के लिए इनसे सहायता मांगते थे। उनके हाथ में एक त्रिशूल होता था जो कि रोम में मछुआरों द्वारा इस्तेमाल किया जाने वाला आम औजार था। ईसाइयत ने बहुत चालाकी से इसे शैतान के हाथ में दे दिया था ताकि इसकी आड़ में नेपट्यून को शैतान घोषित किया जा सके। इसके अलावा आपने सर्पदण्ड के इस निशान को भी ज्यादातर पर शैतान के साथ जोड़कर देखा होगा।



आप देखिए के यह चिन्ह भी एक रोमन देवता मरक्यूरी (Mercury) का चिन्ह होता था जिसे रोम में कडूसेउस (Caduceus) कहते थे। मरक्युरी यात्रियों, नेताओ और व्यापारियों के देवता माने जाते थे और अन्य रोमन देवताओ की तरह ही रोमन लोगो के पूजनीय थे। कडूसेउस रोमन देवता मरक्युरी अपने हाथ में पकड़ते थे जो की एक देवदूत होने की निशानी माना जाता था। बाद में सभी की तरह यह निशान भी शैतान से जोड़ दिया गया। बल्कि शैतान के देवदूत जैसे पंख भी मरक्युरी के पंखों से ही चुराया हुआ हिस्सा है।

अभी तक हमने शैतान का रूपांतरण देखा और समझा की कैसे अब्राहिमक कल्ट्स ने शैतान को रूप देने के लिए दूसरे मत सम्प्रदाय के देवी-देवताओ के चिन्ह और रूप को चोरी किया ताकि उन मत सम्प्रदायों को दुष्ट और बुरा दिखा कर उन्हें बदनाम किया जा सके।

अब हम देखते है की किस प्रकार से शैतान को कला के क्षेत्र के जरिये इस्तेमाल करके आम लोगों के मानस में इस तरह से पिरोया गया की आम बुद्धि वाले लोग यही महसूस करने लगे की शैतान नाम का कोई जीव जरूर है जो की बुराई की वजह थी। कला के क्षेत्र के जरिये ही अपने प्रोपेगेंडा को अब्राहमिक मत ने सुदूर इलाकों और अन्य लोगों के मन में भी इतनी गहराई से फैलाया की अब यह लोग इन चिन्हों और देवताओं की असली बात को न जानकर इस झूठ फरेब में फंस चुके है।

पुस्तकों के माध्यम से शैतान की अवधारणा का प्रचार

यह बात में कोई अतिशयोक्ति नही है की अब्राहमिक मजहबों में अपनी मजहबी पुस्तको के अलावा दूसरे मजहब की पुस्तको की कोई खास इज्जत नही की जाती है। अतएव यहूदी, ईसाई और मुस्लिम मजहब अपने अपने मजहबी पुस्तको (तोराह, बाइबिल, कुरान) के अतिरिक्त किसी और पुस्तक को पवित्र या ईश्वरीय नही समझते है। यह बात भी एक इतिहासिक तथ्य है की जैसे ही यूरोप में छापेखाने में विकास हुआ, सबसे पहले और ज्यादातर छपने वाली किताबो में विज्ञान या ज्ञान की पुस्तक न होकर बाइबिल ही थी। इस श्रंखला में गुटेनबर्ग की बाइबिल एक इतिहासिक पुस्तक थी जो की कम शब्दो में बाइबिल का सन्देश वाली एक सुगम पुस्तक थी। जहां पर पहले पुस्तको के कम होने से इब्राहिमिक कल्ट्स का संदेश मौखिक रूप से पादरियो और प्रचारकों तक सीमित था, बाइबिल की इन पुस्तको ने इस काम को और सरल कर दिया। बाइबिल की इन कहानियों से ही शैतान की कहानियों ने भी जन जन में फैलना शुरू कर दिया।

बाइबिल के बाद दूसरी एक पुस्तक जो कि यूरोप में बहुत ज्यादा मशहूर हुई थी, वह 1321 AD में आई दांते अलीगहेरी (Dante Alighieri) की लिखी पुस्तक कॉमेडिया थी जिसे बाद में डिवाइन का खिताब दिया गया था। यह पुस्तक ईसाई नरक स्वर्ग और अधर लोक के ऊपर लिखा एक यात्रा वृतांत जैसा था जिसमे दांते ने स्वयम को यात्री के तौर पर इन लोको में अपने काल्पनिक अनुभवों को दर्शाया था। डिवाइन कॉमेडी नाम की इस पुस्तक के पहले भाग इंफेरनो (inferno) में दांते ईसाई नरक और उसमे घटित घटनाओ और जगहो का बारीकी से जिक्र करता है।
जैसे की दांते के अनुसार ईसाई नरक में 9 प्रकार के व्यूह होंगे जिनमे विभिन्न प्रकार के पापों का दंड प्राप्त करेंगे।
इस पुस्तक के अधयाय 4 में ईसाई नरक के पहले चक्र का जिक्र है जिनमे वह गैर ईसाई लोग और गैर बपतिस्मा प्राप्त बच्चे रहेंगे जो की पापी तो नही थे लेकिन उन्होंने कभी भी ईसा को मसीहा के रूप में स्वीकार नही किया।

इन लोगो में जाने माने रोमन राजा महाराजा(जूलियस सीज़र, लविन्या, लुसिस जूनिस ब्रूटस, हेक्टर), नायक नायिकाएं(रोम का पितामह Aneas, कैमिलिया) , रोमन और यूनानी कवि(होमर, ओविड, लुकन, वर्जिल, होरेस), यूनानी दार्शनिक(अरस्तू, सुकरात, प्लेटो, डियोजीन्स दी सिनिक, अंषोगोरस, थेल्स, जीनो), वैज्ञानिक(टॉलेमी, यूक्लिड, अविसन्ना, अवररोस) इत्यादि का एक जमघट आपको इस पुस्तक में दिखाई देता है। इसके अलावा इस्लाम के संस्थापक हजरत मुहम्मद और कई पोप को भी जो की दांते के हिसाब से ईसाई नहीं थे, उन्हें भी उसने अपने नकली नर्क में डाल रखा है।

यह अध्याय आपको एक ईसाई व्यक्ति के मन में गैर ईसाई के लिए भरी जाने वाले द्वेष को अच्छे से दर्शाती है। इस हिस्से में आप देख सकते है की पुरातन ईसाई समाज में शुरू से ही एक गैर ईसाई की मरणोपरांत जगह नरक में ही थी , अगर उसने बपतिस्मा नही लिया , चाहे वह कितना भी अच्छा, शिक्षित या सभ्य क्यों न हो। यही बात आपको इसी पुस्तक के दसवें अध्याय में भी दिखती है जिधर नरक में वह लोग दिखाए गए है जिन्होंने ईसाइयत की मुख्य धारणा से उलट कोई भी बात की जिसे ईसाई विधार्मिता (Heresy) कहा जाता है। महान यूनानी दार्शनिक एपीकुरस (Epicurus) को इसी बात के लिए दांते ईसाई नरक में बंधा पाता है क्योंकि वह नास्तिक था और आत्मा के सिद्धांत में यकीन नहीं रखता था।

इंफेरनो पुस्तक के भाग 35 में इसी काल्पनिक नरक में दांते ने शैतान को नरक के सबसे अंत में एक झील में जमी हुई अवस्था में दर्शाया था। दांते शैतान को लूसिफ़ेर या डिस (Dis) के नाम से सम्बोधित करता है जो की हम जानते है रोमन देवी वीनस और रोमन देवता प्लूटो के नाम थे जिनकी चर्चा हम दूसरे भाग में कर चुके है। दांते के नरक के शैतान के तीन मुख है जो की लाल, काले और पीले रंग है जो की कई विद्वानों (जैसे की डोरोथी सायरस) की माने तो नस्लीय भेदभाव का सबसे पुराना सबूत है। असल में दांते के नरक के शैतान का लाल मुख उत्तरी यूरोपीय लोग, काला मुख अफ्रीकी लोग और पीला मुख एशियाई लोगो के लिए इस्तेमाल किये जाने रंग थे। इटली और ईसाई समाज उस समय में गैर ईसाई कस्बों को ईशवरीय नही मानता था बल्कि उन्हें शैतान से प्रभावित समझा करता था जिसे की हम दांते की पुस्तक के इस तीन सर वाले भाग में समझ सकते है।



शैतान के ऊपर लिखी एक महत्वपूर्ण पुस्तक फॉस्टबस्ट है जिसमे दिए गए एक विवरण का जिक्र हम इसीलिए जरूरी समझते है क्यूंनकी इस पुस्तक ने शैतान को एक नाम और एक अलग ही प्रकार का गुण दिया जिसे की इस पुस्तक से पहले कभी नही मिला था।
फॉस्टबस्ट (Faustbust) एक जर्मन भाषा की पुस्तक है जिसमे डॉक्टर फॉस्ट नामक एक मिथिहसिक और जर्मन लोक कथा के पात्र की कहानी है जिसने चमत्कारी और रहस्यमयी शक्तियों को प्राप्त करने के लिए अपनी आत्मा को मेफिस्टफेल्स (Mephistopheles) नाम के एक शैतान को बेच दिया था और बाद में वह पछतावा के सिवाय कुछ न पा सका।

बाद में इस कथा को कई अन्य जगहों पर इस्तेमाल किया गया जैसे की क्रिस्टोफर मार्लो (Christopher marlowe) नामक एक ईसाई की लिखी हुई पुस्तक “ट्रैजिक हिस्ट्री ऑफ लाइफ एंड डेथ ऑफ डॉक्टर फॉस्ट” (Tragic history of life and death of Doctor Faust)



क्रिस्टोफर मार्लो की लिखी पुस्तक में शैतान को एक अलग ही नाम मेफिस्टफेल्स के नाम से संबोधित किया गया जो की बाद में इस पुस्तक के कारण ही बड़ा ही प्रचलन में आया और साथ ही यह बात भी प्रचलन में आ गयी की शैतान लोगो की इच्छाओं को उनकी आत्मा के बदले में लेकर पूरा कर सकता है। हालांकि यह कथन और बात कभी भी यहूदी किताबों में नही कही गयी थी और

पुरानी ईसाई बाइबिल में भी शैतान को इस लायक नही बताया गया था, लेकिन इस पुस्तक की मशहूरियत को अच्छे से भुनाया गया और इस बात को भी शैतान के एक गुण की तरह जोड़ लिया गया। इस पुस्तक पर बाद में कई फिल्मे और टेलीविज़न सीरियल तक बनाये गए।

फॉस्ट और मेफिस्टफेल्स कि कहानी शैतान की कला क्षेत्र से जुड़ी वह पहली कहानी है जिसमे ईसाइयत ने अपने मजहब के अंगों को भरपूर तरीके से इस्तेमाल और प्रचार किया, जैसे कि जादू मन्त्र करने वाले शैतान की सहायता लेते है और दिव्य मुक्ति सिर्फ ईसाई मजहबी खुदा यहोवा या उसके भेजे खास व्यक्ति ईसा के द्वारा ही मिलती है।

इसके बाद जिस कविता का जिक्र अब हम करने वाले है वह अंग्रेजी भाषा की सबसे प्रसिद्ध कविता है। इस कविता का नाम पैराडाइस लॉस्ट (Paradise Lost) है और इसके कवि का नाम जॉन मिल्टन था। इस कविता में उस यहूदी-ईसाई कहानी का जिक्र है जिसमे आदम नाम के पहले नर और हव्वा नाम के पहली नारी ने यहूदी-ईसाई भगवान यहोवाह की अवज्ञा करके शैतान की बात मानकर ज्ञान का फल खाया था और उसके बाद यहौवाह ने तीनो को ईसाई स्वर्ग से निकाल दिया था। इस कहानी को तो आप पहले भी यहूदी कहानी के तौर पर कई बार सुन चुके होंगे लेकिन जॉन मिल्टन ने अपनी कविता में इस कहानी के अलावा और भी कई तरह के मनघड़ंत भागो और किरदारों को जोड़ कर शैतान की कहानी को और भी बड़ा कर दिया। सबसे पहली बात जो जॉन मिल्टन ने असली कहानी में जोड़ी वह थी ईसाई स्वर्ग में एक गृह युद्ध की जो कि शैतान और फरिश्तो में हुई थी। फ़रिश्ते वह जीव है जो कि ईसाई भगवान यहोवाह के सेवक है। जैसे की हमने इसी पुस्तक में दूसरे भाग में पढा था की ईसाई मत ने कैसे बड़ी चलाकी से ल्युसिफर को शैतान बनाया और इसके लिए यशायाह की किताब का एक मुड़ा तूड़ा वाक्य का इस्तेमाल किया था। इसके अलावा हमने रेवेळाशन की किताब में वर्णित माइकेल नामक फ़रिश्ते की शैतान से लड़ाई का भी चित्रण देखा। मिल्टन ने भी इन्ही कहानी का प्रयोग करते हुए एक ऐसे युद्ध की बात, अपने कविता में करी जिसमे ल्युसिफर ने अपने साथियों के साथ स्वर्ग में गृह युद्ध की शुरुआत की, जिसके विरोध में फरिश्तो ने ल्युसिफर और उसके साथियों को हराकर स्वर्ग से बेदखल कर दिया। इस कहानी को हमने मनगढ़ंत इसलिए कहा क्योंकि इस कथा का जिक्र किसी भी यहूदी किताब में पहले नही था, जिधर शैतान ने किसी भी प्रकार युद्ध जैसे हालात पैदा किये हो और फरिश्तो ने उससे लड़ाई की हो।

इस कहानी में प्रयोग किये गए शैतान के नाम भी वही चोरी किये हुए या बदले गए नाम है जिनका मतलब कुछ और ही था, जैसे ल्युसिफर, मैमन इत्यादि।

अब हम एक ऐसी पुस्तक की चर्चा करते है जिसने सर्वाधिक शैतानी अवधारणा की चर्चा और उसका प्रचार प्रसार किया। इस पुस्तक में अनेको जगह से उठाये गए मिथिहसिक जीवो को उठा कर उन्हें शैतान घोषित कर दिया गया था।

इस पुस्तक का नाम है डिक्शनेयर इंफरनल (Dictionnaire Infernal) और इसे एक जैक्स कोलिन दे प्लासी (Jacques Collin de Plancy) ने 1818 में लिखा था। यह पुस्तक आज भी फ्रांसीसी भाषा में आपको उपलब्ध हो जायेगी।

पहले तो जैक्स प्लासी ने इस पुस्तक को सिर्फ मनोरंजन के तहत रचा था जिससे लोगों में अनोखे मिथिहासिक जीवों का मनोरंजक ज्ञान का प्रसार हो। लेकिन बाद में जब जैक्स कॉलिन कैथोलिक विचारधारा के प्रभाव में हुआ तो उसने इसे एक ईसाई पुस्तक की तरह लिखा और इस में अनेकों अनेकों जगह से पात्रों को जोड़ा। इसी पुस्तक में अगर आप देखे तो हिंदू देवी देवता जैसे की काली, भैरव, गंगा इत्यादि को भी स्पष्ट रूप से शैतान या दुष्टात्मा की तरह पेश किया गया है। हालांकि न तो इस पुस्तक का लिखने वाला और न ही इसके प्रचार करने वाले कभी भारत आए थे और न ही उन्हें हमारे देवी देवताओं का कोई ज्ञान था लेकिन सिर्फ सुनी सुनाई गई बातों के कारण ही उन्होंने ऐसे बातों को लिखा और प्रचार किया जिससे पश्चिम में भारतीय देवी देवता पहली बार शैतान को रूप में दर्शाए गए।

जिस समय पर ईसाई इनक्विशन का दौर चलता था, उस समय पर हर उस व्यक्ति की जांच और जासूसी समय समय पर की जाती थी जो की किसी दबाव में या जबरन मजहब कबूला हो। ऐसे पगान लोगों अक्सर अपने पूर्वजों के मत संप्रदाय को चोरी छुपे पूजते मिल जाते थे, तो उनके साथ क्रूरता से बर्ताव किया जाता था, जैसे की महिलाओं पर शैतान की पूजा या चुड़ैल होने के इलजाम लगा कर उन्हें जिंदा जला देने का रिवाज था। इसके पीछे कई पुस्तकों का हाथ था जिनमे से प्रमुख Malleus maleficarum और compendium maleficarum थी।
कंपेंडियम मलेफिकेरम लैटिन भाषी पुस्तक में इसके लेखक ने इसके भाग 6 में शैतान द्वारा प्रभावित महिला या पुरुष की यही निशानी बताई है की वह यीशु, ईसाई मजहब, सलीब या मरियम की कोई इज्जत नहीं करेंगे और उन्हें गालियां देंगे। इसी पुस्तक में यह भी दावा किया गया है की शैतान द्वारा प्रभावित लोग शैतान की पूजा का दावा करेंगे। जहां दूसरी ओर यह पुस्तक यह दावा करती है की यह औरतें जादू से किसी का नुकसान कर सकती है, वही यही पुस्तक इन औरतों के द्वारा जहर के इस्तेमाल का भी जिक्र करती है या वह किसी पर बीमारियां भी छोड़ सकती है। ऐसे ही चीजों से मल्लूस मलेफिकर्म भी भरी पड़ी है जिसमे चुड़ैल या डायन को जिंदा जला देने के तरीके, उसे तड़पा कर उससे मजबूर करने के सब तरीके लिखे गए थे।

यह पुस्तक संपूर्णता से डार्क एजेस के जमाने की उस सभी घटनाओं को दर्शा देती है जब बचे खुचे पागान लोगों को डरा धमका कर ईसाई मजहब पर लाने का उपक्रम करना चर्च के लिए जरूरी था। यह वही दौर था, जब जंग और महामारियों ने यूरोप को हिला रखा था। पहले तो चर्च और ईसाइयों ने पूरी क्रूरता से पुराने संप्रदायों को कुचला और जब पुराने संप्रदाओ ने विरोध किया तो चर्च ने बड़ी चालाकी से पगानो के गुस्से और आक्रोश का फायदा उठाया। उन्होंने अपनी पुस्तकों में उन्हें ही दुष्ट शैतान के सेवक के रूप में प्रस्तुत किया ताकि आम जनता भी पेगान लोगों के जज्बातों की परवाह न करके उनसे दूरी बना लें। उन्होंने प्राकृतिक आपदा जैसे की बिजली, ओले,

बीमारियों के लिए इन्ही लोगों को जिम्मेदार बनाया और इन्हे ही चुड़ैल या शैतान के पुजारी के तमगे बांटे ताकि कोई भी उनपर तोहमत न लगाए।

अभी तक हमने जिन पुस्तको के जिक्र सुने इन सभी मे ईसाइयत के गुणों की चर्चा और शैतान के अवगुन की बात मिलती है, जिसके पीछे का कारण जैसे कि हम जानते है कि ईसाइयत का प्रचार प्रसार ही था। लेकिन यह जरुरी नही की शैतान नाम के किरदार को दर्शाती हुई हर पुस्तको में हमेशा उसकी बुराई ही थी। बहुत सी पुस्तको में शैतान को सिर्फ एक ऐसा किरदार दिखाया गया है जो कि उस कथा में बुराई का प्रतिबिम्ब या उसके लिए एक सिर्फ एक नकली किरदार के होने का आभास प्रगट करते है। ऐसी कथाओ में लियो टॉलस्टॉय की फेमस कहानी "हाऊ मच लैंड डज अ मैन नीड" (how much land does a man need), फ्योदोर दोस्तोवोस्की की brother karamjov, विलियम गोल्डिंग की लार्ड ऑफ फ्लाईस (Lord of the Flies) इत्यादि है।

चित्रों के माध्यम से शैतान की अवधारणा का प्रचार

पुस्तकों के अलावा कई प्रकार की पेंटिंग्स भी शैतान के रंग रूप को दर्शाने में काफी अग्रगामी रही थी। ज्यादातर यह तस्वीरे हमें 3-4 शताब्दी के बाद ही प्राप्त होती है, जब ईसाइयत और इस्लाम अपनी शक्ति बढा रहे थे।
शैतान की अगर सबसे पुरानी चित्रो की बात करे तो यह ऐसे थे जिनमे शैतान को बिल्कुल किसी आम मानव की तरह ही दिखाया गया था। यह नीचे का चित्र बीजान्टिन के रावेना में 6वी शताब्दी का दीवार का भितिचित्र है जिसमे ईसा को भेड़ो और बकरो को अलग अलग करते हुए दिखाया गया था। जैसे की बाइबिल के मैथ्यू के गॉस्पेल के 25:31-46 में ईसा ने कहा था की प्रभु के राज्य में भेड़ें उनके बाई ओर और बकरियां उनके दाई ओर रहेंगी,और दाई ओर वाले जीव नरक को प्राप्त होंगे क्योंकि उन्होंने जीवन में कभी भी भलाई का काम नही किया होगा। इस प्रकार से हम समझ सकते है की इस चित्र में दाई ओर वाला नीला फरिश्ता कोई और नही बल्कि शैतान ही है जो की इन बकरियों का दूत है।



आप जरूर मन में विचार कर रहे होंगे की भला ये बकरियों और भेड़ों से कैसा भेदभाव है जो की बकरियों को बुरा या भेड़ो को अच्छा बताया है, तो यह बात सिर्फ गुणों के ऊपर ही टिकी हुई है। भेड़ें ज्यादातर अपने से आगे चलने वाली भेड़ो की नकल करते हुए आज्ञाकारी बनी रहती है, इसके अलावा वह उपयोगी भी थी क्योंकि उनसे ऊन की प्राप्ति होती थी इसीलिए यहूदी समाज ने भेड़ों को अपने जैसे ही गुणों का समझा क्योंकि वह भी स्वयम को यहोवह की भेड़ ही कहते थे। दूसरी ओर ज्यादतर रोमन और यूनान में बकरियो की संख्या बहुत ज्यादा होने से बकरियों को विजातीय या खाद्य वस्तु की तरह ही देखा जाता था जिसकी सिर्फ बलि ही दी जा सकती थी। अतैव बकरी बुरी बन गयी और भेड़ अछि बन गयी। अब आप सोचेंगे की भला शैतान का रंग नीला होने की बात फिर इधर क्यों है तो आप जानकर हैरान होंगे की रोमन राज्य में नीला रंग बर्बर और असभ्यता की निशानी समझा जाता था क्योंकि रोमन राज्य पर सेल्टिक और जर्मनिक (germanic) कबीले के लोग हमेशा हमले करते रहते थे। यह कबीले अपने मुंह पर नीले रंग को पोता करते थे, जिस वजह से रोमन साम्राज्य में बर्बर लोगों और नीले रंग के प्रति उस समय में बड़ी विद्वेष भावना थी।

लगभग 11 शताब्दी के बाद की पेंटिंग्स में शैतान का रूप काफी हद तक डरावना और भयानक बनाने की शुरुआत हो चुकी थी क्योंकि ये वो दौर था जब रोम और ईसाइयत दोनो ही एक बुरे दौर से निकल कर एक ऐसे समयकाल में थे जब पोप और ईसायत अब एक अराजकता और राजनीति के कुचक्रो में फंस चुके थे। रोमन साम्राज्य पर चारो ओर से कबाइली लोग हमले कर रहे थे और अरबी मुस्लिम शक्तियां भी मिडिल ईस्ट अपने दबदबे को फैला रही थी। इस दौर में कौन शत्रु होता था और कौन मित्र कहना बहुत ही मुश्किल हो रहा था? ऐसे दौर में शैतान की अवधारणा अपने शत्रुओ को फंसाने के बहुत काम आती थी और अपने मजहब के लोगों में मजहब से जुड़े रहने के लिए डर भी बना रहता था।

1280 में निकोलो डी मरकोवोल्दो की फ्लोरेंस चर्च की दीवार पर बनाई गयी एक भित्तिचित्र भी आप देख सकते है जिसमे शैतान को एक डरावने किरदार की तरह पापियों और अधर्मियो को खाते हुए दिखाया गया है। इससे ईसाइयो के मन में गहरे तौर पर ये बात आती थी शैतान के सेवक होने की क्या सजा मिलेगी और उन्हें ईसाई बने रहना चाहिए या अन्य गैर-ईसाई लोगों को प्रेरित करना चाहिए की वह भी ईसाई मजहब अपना ले।



13 शताब्दी की एक पुस्तक जिसका नाम कोडेक्स गीगास (codex gigas) है उसमे शैतान के भयंकर चित्र को उकेरा गया था जिसमे सींगो, लंबे दांत और तीखे नाखूनों वाले एक हैवान का चित्रांकन किया गया था। इस चित्र में शैतान के सींग तो है लेकिन वह किसी प्रकार के बकरे जैसा नही दिखता है क्योंकि यह किताब आज के चेक रिपब्लिक के शहर में लिखी गयी किताब थी जिसे एक ईसाई पादरी द्वारा बनाया गया जो की रोमन साम्राज्य से काफी दूरी पर थे।



15वी शताब्दी की एक पुस्तक में शैतान को नरक में पापियों और अधर्मियो का सेवन करते दिखाया गया था जो की स्पष्ट तौर से ईसाई लोगों को डरा कर मजहब छोड़ने के लिए बनाई गयी तस्वीरें है।

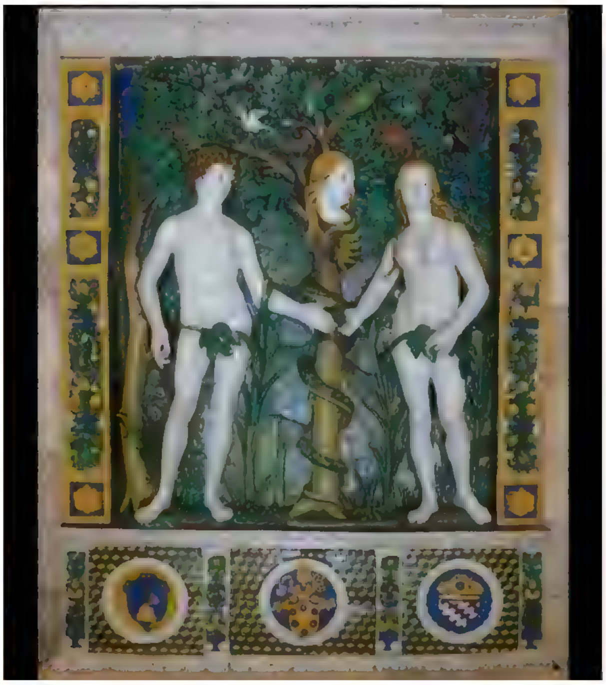


अमेरिकन स्टॉक एक्सचेंज को एक दुष्ट शैतान मैमन(Mammon) जैसे दिखाया गया था, जिसका उद्देश्य पूंजीवादी लोग खासकर स्टॉक मार्केट वाले लोगों पर शैतान का वर्चस्व होने का मनघड़ंत दावा करना था।



एक बहुत ही रोचक बात जिसकी तरफ हम आपका ध्यान खींचना चाहते है... आप इस दौर की बनी हुई इन पेंटिंग्स में देख सकते है की इन सभी पेंटिंग्स में एक दृश्य दिखता है जिसमे आदम, हव्वा और उनके अवज्ञा करने वाली कहानी दिखाई जाती है। इधर आप ध्यान से देखेंगे तो पाएंगे कि इधर शैतान का किरदार के रूप में नारीत्व झलकता है, मसलन आपको शैतान के बाल लड़कियों जैसे लंबे बाल, उसकी छाती लड़कियों जैसी है...इससे समझ मे आता है कि उस दौर के इटली और रोम के इलाक़ों मे चित्रकार वीनस शैतान है वाली अपनी पुरानी कैथोलिक विचारधारा को ही चित्रों में दर्शाया था....हालांकि यह चित्रांकन 18-19 सदी तक आते हुए बदल गया और शैतान लड़की से बकरा-आदमी वाली अपनी आधुनिक पहचान पर आ चुके थे।







निचे दिया गया एक और पेंटिंग देखिये जिसका नाम विट्चेस सबथ (Witches Sabbath Year 1798) है और इसके बनाने वाले एक स्पेनिश चित्रकार फ्रांसिस्को गोया था। इस चित्र के जरिये वही पुरानी अवधारणा की अनुभूति दिखती है की 18वी शताब्दी तक भी चुड़ैलो के रूप में नारी की क्या दुर्गति यूरोपीय लोगों द्वारा बनाई जाती रही थी। ज्यादतार किसी भी पुरातन विचारों से प्रभावित महिला को चुड़ैल मानना और फिर उसे शैतान के साथ मिले होने का तमगा डाल कर प्रताड़ित किया जाता था।



फिल्मों के माध्यम से शैतान की अवधारणा का प्रचार

पुस्तकों और चित्रों ने आगे की कहानियों के लिए एक अच्छी भूमि तैयार करके दी थी लेकिन इन दोनों से भी कहीं ज्यादा शैतान की अवधारणा को लोकप्रियता फिल्मों और टीवी सीरियल ने दी जिसकी वजह से शैतान की असलियत को समझने में और भी दिक्कत आ गयी और अब्राहमिक सोच का ही प्रसार प्रचार धीरे धीरे आम लोगों के मन में होने लगा। इसके पीछे का मनोवैज्ञानिक कारण यही है कि अक्षरों से भी ज्यादा सजीव चित्र होते है जिनका मन पर ज्यादा असर होता है।

1926 में आई जर्मन गूंगी फ़िल्म फॉस्ट में शैतान का फील्मी अवतार था। इस कथा में उसी फॉस्बुस्ट नाम के जर्मन लोक कथा का जिक्र था जिसमे डॉक्टर फॉस्ट अपनी आत्मा का सौदा करता है। हालांकि इस फ़िल्म ने शैतान को इसमें बहुत ज्यादा वीभत्स या डरावना नही बल्कि लाल ड्रेस पहन के एक ऐसे किरदार की अनुभूति देता था जो कि बुराई का प्रतीक लगता है।



फॉस्ट फ़िल्म की इसी कहानी को अन्य कई फिल्मो में दिखाया और फिल्माया गया था जैसे (स्टूडेंट ऑफ प्राग) (Student of Prague 1926), दी डेविल एंड डेनियल वेबस्टर (The devil and the daniel webster, 1946), अलियास निक बील (Alias Nick Beal, 1949), Bedazzled (2000) इत्यादि।

कुछ फिल्मों में शैतान को एक शक्तिशाली किरदार बना कर दिखाया गया है जिनमे शैतान या उसके दूत मनुष्यो को तंग करते है और ईसाई ईश्वर या जीसस के जरिये उनसे छुटकारा पाया जाता है। ज्यादातर यह फिल्में डरावनी फिल्में होती है और इनका मकसद गूढ़ रूप से ईसाई ईश्वर की तारीफ करना होता है।
दी एक्सॉर्सिस्ट (The Exorcist) नामक एक फिल्म में एक लड़की को शैतान द्वारा अपने प्रभाव में ले लेने को दिखाया गया था जिसमे वह सभी अंग मौजूद थे जिससे ईसाइयत की मार्केटिंग करने का पूरा प्रयास किया गया था। इसमें दुष्टात्मा का सलीब की बेइज्जती करना, बाइबिल, सलीब, पवित्र पानी और लैटिन भाषा के मंत्रो का बखूबी प्रयोग किया गया जिससे रोमानी ईसाई समाज का भरपूर प्रचार हुआ और लोगो में यह सन्देश गया की शैतान नाम के जीव को ईसाई पादरी बाइबिल और उसके मंत्रो से भगा सकते है।



दी एक्सॉर्सिस्ट का एक दृश्य

इसी प्रकार की कई फिल्मों से की अमीटीविले हॉरर(The amityville horror), कंजूरिंग (Conjuring) दी अनहोली (The unholy), दी वैटिकन टेप्स (The Vatican tapes) इत्यादि में भी इन्ही ईसाई चिन्हों यानी बाइबिल, सलीब, पवित्र पानी और लैटिन भाषा में मंत्रो को दिखाया गया। इसके अलावा इन्ही फिल्म के जरिये यह भी कई बार दिखाया गया की शैतान और उसके दूत बाइबिल का विरोध करते है या उसका अपमान करते है, जिसके जरिये फिल्मों ने यही साबित किया की अगर कोई बाइबिल या उसके विरोध में है तो वह साफतौर पर विधर्मी या शैतान द्वारा प्रभावित है।

कई फिल्मों में तो शैतान की इन कहानियों को एक मजाकिया तौर पर दिखा कर शैतान को एक जोकर की तरह भी पेश किया था। इन फिल्मों को बनाने वाले वही लोग थे जो कि ईसाई मिथिहासिक बातों और कहानियों की असलियत समझते थे इसलिए उन्होंने इस किरदार को सिर्फ एक मजाक या मिथिहासिक किरदार की भांति ही लिया।
लिटिल निक्की एक ऐसी ही मजेदार और हँसाने वाली सन 2000 की एक अमेरिकी फिल्म थी जिसमे शैतान के एक शरीफ बेटे निक्की को उसके बाकी दुष्ट भाइयों को पकड़ कर वापस नर्क में लाने की कहानी को दिखाया गया था। यह एक कॉमेडी मूवी थी जिसमें शैतान मस्ती करता दिखाया गया है और उसके बेटे शरारत करते दीखते है। सन 2020 में आई अमेरिकी कॉमेडी मूवी बैड प्रेजिडेंट में डोनाल्ड ट्रम्प को शैतान की मदद से अमेरिका का राष्ट्रपति बनते हुए दिखाया गया था।

वहीं ऐसी फिल्में जिधर एंटी क्राइस्ट या मसीह अल दज्जाल की कहानी को भी अच्छे से भुनाया गया, उनकी भी कभी कमी नही रही है।
The omen नाम की एक डरावनी फिल्म थी जो की 1976 में पहली बार आयी थी और साल 2006 में इसका एक रीमेक भी बनाया गया । इसमें एक छोटे बच्चे की कहानी दिखाई थी जिसमें कुछ अजीब शक्तियां होती है और असल में उसे एक एंटीक्रिस्ट दिखाया गया है जो कि शैतान की

मदद लेकर धरती को शैतान के अधीन करने में मदद करता है। इस फ़िल्म में एंतिक्रिस्ट, यहूदी लोग, एन्टीक्राइस्ट का अमेरिका की सरकार को अपने कब्जे में ले लेने जैसे मनघड़ंत कहानियों को दिखाया गया है।



इसके अलावा स्टीफन किंग के लिखे नावेल दी स्टैंड में भी रैंडल फ्लैग नाम के एक किरदार को दिखाया गया है जो की शैतान द्वारा प्रेरित है और वह अमेरिका में आकर कई लोगों को अपने कब्जे में ले लेता जो कि उसे मसीहा मानने लगे थे।

फिल्मों ने अक्सर अब्राहमिक कल्ट से अलग मत या विचार रखने वालों को डायन या बुरे जादूगर के रूप में ही पेश किया और बड़े ही चालाकी पूर्ण रवैयों से उनकी हत्या को जायज दिखा कर भोले भले लोगों के मन में इस पाप की तिलांजलि की है।
कुछ हॉलीवुड की फिल्में जैसे सीजन ऑफ़ दी विच (Season of the witch) ईविल डेड (Evil Dead 2013), यू वोट बी अलोन (You wont be alone), Burn the witch! City of the Dead 1960) साइलेंट हिल में अक्सर ऐसे सीन होते है जिनमे एक समानता सी दिखती है। जैसे की :-

- एक औरत को फिल्म में शैतान की पुजारन या डायन होने के शक में गिरफ्तार किया जाता है।
- फिर उस औरत को सूली पर लटकते या उसे आग में खड़े हुए दिखाया जाता है।
- फिर वह औरत अपने जीवन के लिए भीख मांगती है और लोगों को उसे छोड़ देने के लिए कहती है। इससे महिला करुणा की पात्र दिखती है। उसके कपडे फाटे हुए और वह सफ़ेद

रंग के कपड़ो में बेचारी दिखती है।



- जो लोग उसे जलाने आये है, वो हाथ में हथियार लेकर खूंखार और दुष्ट दीखते है। उनमे एक पादरी या नन भी होती है।
- लोग उस महिला को जिन्दा जला देते है और सभी चले जाते है।
- अचानक से ही कुछ ऐसा होता है जिससे वो बेचारी सी दिखने वाली औरत जिससे आपको सहानुभूति हो रही होती है, उसे सच में ही चुड़ैल दिखाया जाता है और वह लोगों का नुकसान करती है।

इन सभी पॉइंट्स को पढ़ने के बाद आप सोच रहे होंगे की भला एक फिल्म के छोटे से सीन से क्या जिंदगी में बदलाव आता है लेकिन मनोविज्ञान की माने तो फिल्मे हमारे मन में काफी अंतर पैदा कर देती है। अब आप सोचिये की एक ऐसी फिल्म जिसमे किसी महिला या पुरुष को चुड़ैल होने की सजा हो रही है और उसके साथ पहले आपको सहानुभूति जताई जाती है ताकि आपका मन ऐसी महिलाओं के लिए दया पाले, फिर अगले ही पल ऐसी महिलाओं के सच में डायन जैसे किरदार होने से मन में यही ख्याल आता है की सच में ही पादरी, नन और बाकी लोग जो कर रहे थे ठीक ही कर रहे थे और शायद असल जिंदगी में भी जो महिलायें और पुरुष मारे गए, वे लोग ऐसी ही सजा के हकदार थे। इसी को फ़िल्मी प्रोपेगंडा कहा जाता है जो की फिल्मे बखूबी से कर जाती है। जिधर असली जीवन में एक भी किस्सा ऐसा कभी नहीं बताता है जिधर डायन के शक वाली औरत ने मरने के समय किसी तरह का जादू का प्रदर्शन किया हो, फ़िल्मी दुनिया में चुड़ैले फिर से जिन्दा हो जाया करती थी।

शैतानी आयत नामक एक पुस्तक लिखने के कारण सारी जिंदगी कुत्ते बिल्ली की तरह शिकार रहे सलमान रुश्दी पर बनी एक पाकिस्तानी फिल्म इंटरनेशनल गोरिले एक बहुत ही भद्दी, कुतर्क और इस्लामिक रीति रिवाजों को दर्शाती एक प्रोपेगंडा फिल्म है।



इसमें सलमान रुश्दी को एक द्जाल या एंटीक्रिस्ट के रूप में प्रदर्शित किया गया था और यहूदी लोगों को उसकी मदद करते दिखाया गया था। इस फिल्म में सलमान रुश्दी को एक भयंकर दुष्ट राक्षस की तरह दिखाकर उनके खिलाफ नफरत भरी गई और उनकी किताब को भी इस्लाम विरोधी बताया गया। फिल्म के अंत में बेहद मजाकिया अंदाज में तीन कुरान की उड़ती किताबों से रुश्दी को जला दिया जाता है जो की देखने पर बेहद ही अजीब ओ गरीब लगता है।
हालांकि यह फिल्म पाकिस्तानी कट्टर मुस्लिमो के बीच में बहुत ही पसंद की गई थी और उन्होंने इसमें दिखाए गए झूठ को बहुत जल्दी सच मान लिया, और उनके मन में हर इस्लाम के दुश्मन को मार डालने की भावना प्रबल होती गई।

संगीत के माध्यम से शैतान की अवधारणा का प्रचार

अगर आपको अभी तक लग रहा होगा की शायद अभी तक मूर्खता की हद्द हो गयी होगी तो अब हम आपको संगीत के खिलाफ छेड़े गए उस मजहबी विवाद को भी दिखा देते है जिसमे जैज़ संगीत, रैप संगीत और हैवी मेटल संगीत को भी शैतान द्वारा प्रेरित दिखा कर ईसाई मजहबी लोगों ने ईसाई लोगों को खूब मुर्ख बनाया।

बात साल 1920 के दौर की है जब दुनिया में जंग, उन्माद और ग्रेट डिप्रेशन के चलते बेरोजगारी जैसे हालत थे, नस्लभेद, रंगभेद जैसे नाग आम जनता को डस रहे थे। ऐसे बुरे समय में जैज़

संगीत को बहुत ज्यादा प्रसिद्धि मिलती थी। अवसाद और दुख के माहौल में संगीत अपना जादू फैला रहा था और लोगों को उम्मीद दे रहा था की दुनिया फिर से खुश हो जायेगी। यह जितना अधिक लोकप्रिय हुआ, उतना ही इसका विरोध हर किसी ने शुरू कर दिया था जैसे की मशहूर कार निर्माता हेनरी फोर्ड और लेडीज़ होम जर्नल और द न्यूयॉर्क टाइम्स जैसे प्रकाशनों तक सभी ने इसकी आलोचना की।

लेकिन सवाल यह उठता है की जैज संगीत में ऐसा क्या था जिसके विरोध में इतने लोग आ गए और इसे शैतान से जोड़ डाला??
जैज़ अलग था क्योंकि इसने उस समय के हालात को बताना शुरू किया था, इसमें रूढ़ीवादी परंपराओं में सुधार, संगीतकार पर कलाकार और पारंपरिक श्वेत संवेदनाओं पर अश्वेत अमेरिकी (black american) अनुभव को दर्शाया गया है। गोरे लोग और उनकी नस्लवाद की भावना जैज़ के विरोध पर प्रबल रूप से हावी थी, जिसे वह बर्बर और अनैतिक मानते थे क्योंकि यह अधिकांश रूप से अश्वेत लोगों द्वारा प्रचारित किया।



एक अश्वेत अमरीकी जैज संगीत का बैंड

लुई आर्मस्ट्रांग, जोए किंग ओलिवर, किड ओरी, सिडनी बेचेट, ड्यूक एलिंगटन जैसे अनेकों अनेक संगीतकार अश्वेत थे जिन्होंने अविस्मरणीय संगीत दुनिया को दिया।
जैज़ के उभरने से पहले, कई रूढ़ीवादी संगीत शिक्षक - चिंतित थे कि जैज़ काफी समय से चले आ रहे यूरोपीय शास्त्रीय संगीत में युवाओं की रुचि को नष्ट कर देगा। इसलिए उन्होंने जनता को यह समझाने की कोशिश की कि यूरोपीय शास्त्रीय संगीत ही एकमात्र "अच्छा संगीत" है और जैज संगीत फूहड़ और गलत है। जैज़ संगीतकार याद करते हैं, "एक दिन मैं एक अभ्यास कक्ष में कथित तौर पर शास्त्रीय संगीत का अभ्यास कर रहा था, लेकिन मैं कुछ जैज़ बजा रहा था और,

मुझे लगता है कि मेरे प्रोफेसर ने मुझे सुना क्योंकि उन्होंने दरवाज़ा खोला और अंदर देखा और कहा, 'यह बेकार बजाना बंद करो"
द डेविल्स म्यूज़िक में मैरियन मैकपार्टलैंड का कथन।

जितना ज्यादा जैज संगीत का विरोध हुआ, यह अश्वेत और अन्य नवीन युवा लोगों में मशहूर होने लगा। न्यू ऑरलियन्स जैज़ का पहला केंद्र बन गया, जहां शहर के रेड-लाइट जिले स्टोरीविले में होन्की-टोंक क्लब खुल गए। चूँकि काले संगीतकारों को उनके श्वेत समकक्षों की तरह "उचित" प्रतिष्ठानों में बजाने की अनुमति नहीं थी, जैज़ वेश्यालयों और अन्य कम प्रतिष्ठित स्थानों से जुड़ गया। द डेविल्स म्यूज़िक दर्शकों को 1917 में वापस ले जाता है, जब अमेरिकी नौसेना ने जैज़ क्लबों में जाने वाले नाविकों के स्वास्थ्य और सुरक्षा के डर से उन्हें बंद कर दिया था। उसी वर्ष, ओरिजिनल डिक्सीलैंड जैज़ बैंड - न्यू ऑरलियन्स का एक पूर्ण श्वेत समूह - ने पहला जैज़ रिकॉर्ड बनाया, संगीत को राष्ट्रीय दर्शकों तक पहुंचाया और जैज़ दृश्य को भुनाने के लिए ध्वनि-समान सफेद बैंड के लिए दरवाजा खोल दिया। .

जैसे-जैसे जैज़ की लोकप्रियता बढ़ी, वैसे-वैसे इस तथाकथित "शैतान के संगीत" को सेंसर करने के अभियान भी बढ़ने लगे। फोनोग्राफ के आविष्कारक थॉमस एडिसन जैसे शुरुआती आलोचकों ने जैज़ का मज़ाक उड़ाते हुए कहा था कि इसे पीछे की ओर बजाया जाना बेहतर लगता है। गर्भवती माताओं के लिए एक सिनसिनाटी होम ने एक पड़ोसी थिएटर के निर्माण को रोकने के लिए निषेधाज्ञा हासिल कर ली, जहां जैज़ बजाया जाएगा, जिससे अदालत को यह विश्वास हो गया कि यह संगीत भ्रूणों के लिए खतरनाक था। 1920 के दशक के अंत तक, देश भर में कम से कम साठ समुदायों ने सार्वजनिक नृत्य हॉलों में जैज़ पर प्रतिबंध लगाने वाले कानून बनाए थे।

जबकि आलोचक और अदालतें जैज़ को चुप कराने में विफल रहीं, प्रथम विश्व युद्ध के बाद श्रम की बढ़ती मांग ने इसके प्रभाव का विस्तार करने में कामयाबी हासिल की। किशोरावस्था और बीस के दशक की शुरुआत में सैकड़ों हजारों अफ्रीकी अमेरिकी उत्तर के औद्योगिक शहरों में काम खोजने के लिए दक्षिण से भाग गए। कलाकारों को एक दर्शक वर्ग की आवश्यकता होती है, इसलिए न्यू ऑरलियन्स और अन्य दक्षिणी शहरों के संगीतकार भी अपने साथ जैज़ लेकर उत्तर की ओर आए। शहर के साउथ साइड में 100 से अधिक क्लबों के साथ शिकागो जैज़ का नया केंद्र बन गया। "आधी रात दिन की तरह थी," कवि लैंगस्टन ह्यूजेस ने शहर की संगीत से भरी नाइटलाइफ़ का जिक्र करते हुए लिखा।

1920 में निषेध के आगमन ने जैज़ को गैंगस्टर द्वारा संचालित नाइट क्लबों में ला दिया - एकमात्र स्थान जो शराब परोसते थे और काले संगीतकारों को काम पर रखते थे। शिकागो के ब्लैक एंड टैन क्लबों में पहली बार गोरे और काले लोगों का सामाजिक रूप से मिश्रण शुरू हुआ। सभी सामाजिक वर्गों के श्वेत युवा जैज़ और उसके साथ-साथ आने वाले आकर्षक नए नृत्यों की ओर आकर्षित हुए। मंकी ग्लाइड, टर्की ट्रॉट और चार्ल्सटन की मदद से, वे आलंकारिक और शाब्दिक रूप से संगीत से प्रभावित हुए। इस नई मिली भौतिक स्वतंत्रता, नस्लों के अवैध मिश्रण

और व्यापक धारणा के साथ कि जैज़ यौन गतिविधियों को उत्तेजित करता है, ने जैज़ के आलोचकों को अपने प्रयास बढ़ाने के लिए प्रेरित किया। एन शॉ एफ ने घोषणा की, "जैज़ मूल रूप से वूडू नृत्य की संगत थी, जो आधे-पागल बर्बर लोगों को सबसे घृणित कार्यों के लिए उत्तेजित करती थी।"
ऑल्कनर, जनरल फेडरेशन ऑफ विमेन क्लब्स की अध्यक्ष, महिला सामाजिक और सुधार समूहों का एक शक्तिशाली गठबंधन जिसने 1921 में जैज़ के खिलाफ धर्मयुद्ध शुरू किया था।

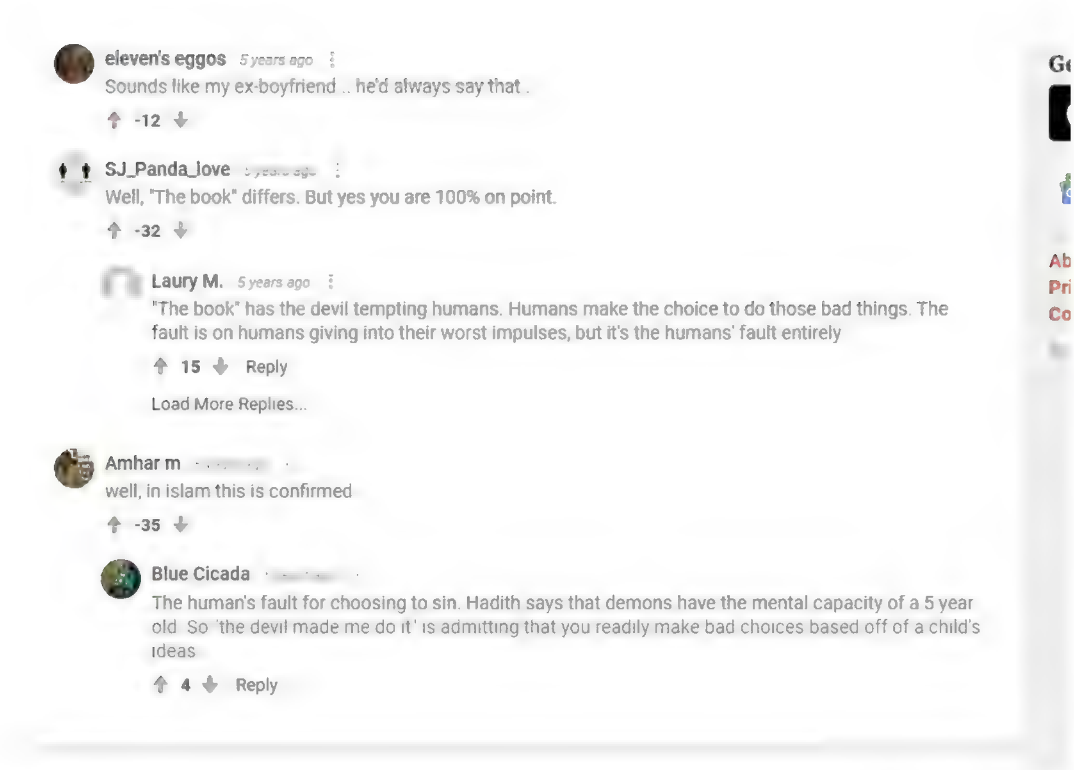
लेकिन सुधारक प्रगति से नहीं लड़ सके। जैज़ रिकॉर्डिंग ने संगीत को नाइट क्लबों से आगे तक पहुंचने की अनुमति दी। जैज़ के केंद्र के रूप में शिकागो की जगह न्यूयॉर्क रेडियो और रिकॉर्डिंग कंपनियों ने संगीत उद्योग पर हावी होना शुरू कर दिया। 1920 के दशक में, हार्लेम पुनर्जागरण के नाम से जाना जाने वाला काला कला आंदोलन शुरू हुआ, जिसने अफ्रीकी अमेरिकी संस्कृति के केंद्र में शहर की स्थिति को मजबूत किया।
जैसा विरोध जैज म्यूजिक का हुआ, वैसा ही उन्मुक्त विरोध हेवी मेटल संगीत के साथ भी हुआ। हेवी मेटल एक उच्च दर का बैंड स्टाइल संगीत है, जिसमे तेजी से ढोल, ड्रम और इलेक्ट्रॉनिक गिटार बजाकर तेज आवाज में उच्चारण किया जाता है।



हेवी मेटल संगीत के कुछ उप–प्रकार जैसे की ब्लैक मेटल या अन्य ने संगीतकार अक्सर ही ऐसी चीजों का प्रयोग करते थे जो की पारंपरिक अमरीकी या यूरोपीय समाज के पुराने ढांचे की सोच के खिलाफ होती थी। जैसे की वह अक्सर काले रंग के कपड़े, विचलित करने वाले चिन्ह जैसे की खोपड़ी, मौत, उल्टा सलीब का निशान और अजीबो गरीब मेकअप का इस्तेमाल अपने संगीत के प्रदर्शन में करते थे। इससे वह अपना रोष जाहिर करते थे लेकिन अमेरिकी और यूरोपीय समाज में इस चीज को शैतानी समझना शुरू कर दिया। बाद में इन चीजों के प्रयोग की वजह से ही हेवी मेटल संगीत पर समाज में शैतान की पूजा या आत्महत्या जैसे आरोप भी धड़ले से मढ़े गए। हालांकि सभी हेवी मेटल संगीत इस प्रकार के है भी नहीं पर इसी भूल के परिणाम से वह भी बुरे मान लिए जाते है।

एक और मजाकिया लहजे में देखा गया पहलू तब सामने आया जब शैतान के नाम से किसी ने ट्विटर पर एक अकाउंट बना कर उसमे से मजाकिया ट्वीट करने शुरू किया थे लेकिन जिस हिसाब से उस अकाउंट के ट्वीट्स पर लोगों ने कमैंट्स किये उन्हें पढ़कर आप यह समझ जायेंगे की एवरेज मजहबी लोग सच में ही किसी शैतान के होने में यकीन रखते है और बल्कि अपनी खुद की गलतियों और अपराधों के लिए भी उसे जिम्मेदार मानते है।





[नकली शैतान के मजेदार ट्वीट्स पढने के लिए इधर क्लिक कीजिये]

गुप्त संगठन के माध्यम से शैतान की अवधारणा का प्रचार

शैतान की अवधारणा का जिक्र हो और इल्लुमिनाटी (Illuminati) या सतानिस्ट (Satanist) या फ्रीमेसन्स (Freemasons) का जिक्र न हो तो यह काफी बेस्वाद बात लगती है। आज के दौर में भी अगर आपको इंटरनेट या अन्य जगहों पर कोई न कोई भूला भटका अब्राहमी सम्प्रदाय को मानने वाला ऐसा कोई न कोई मिल ही जाता है जो की इन संगठनों की तुलना शैतान के पुजारियों या फिर शैतान के सहायकों के रूप में करके दूसरे लोगों पर आरोप मढ़ते मिल जाता है।

सबसे पहले हम फ्रीमेसन (freemason) पर चर्चा करते है। फ्रीमेसन एक भाईचारा युक्त गुप्त संगठन है जिसकी जड़ें लगभग 15वी शताब्दी तक जाती है और यह आज भी काफी हद तक कार्य में कायम है। बाहरी तौर से फ्रीमासन की विचारधारा एक बौद्धिक और रहस्यवादी तत्व से मेल खाती है। वह अनेक सभ्यात्याओ की गूढ़ अच्छी बातों और विचारों पर चर्चा करते है।
मेसोनिक लॉज आम तौर पर केवल पुरुष सदस्य वाले होते हैं, जो रहस्यमय प्रतीकों और अनुष्ठानों से जुड़े होते हैं। इंग्लैंड के यूनाइटेड ग्रैंड लॉज के अनुसार, आधुनिक फ्रीमेसनरी "दुनिया के सबसे पुराने सामाजिक और धर्मार्थ संगठनों में से एक है"। समूह का कहना है कि इसमें 180,000 पुरुष सदस्य हैं, इंग्लैंड में दो समानांतर महिला लॉज में अन्य 5,000 सदस्य हैं, और अनुमान है कि वैश्विक फ्रीमेसोनरी सदस्यता लगभग छह मिलियन है।
फ्रीमेसन सोसाइटी एक समय में इतनी प्रचलन में थी की अमेरिका के कई कदावर नेता (जॉर्ज वॉशिंगटन, एंड्रयू जैक्सन, बेंजामिन फ्रैंकलिन, फ्रैंक रूजवेल्ट, इत्यादि), प्रमुख लेखक आर्थर कानन डायल (शेरलॉक होम्स के लेखक) ,रूडयार्ड किपलिंग (जंगल बुक मोगली के लेखक), मार्क ट्वेन, तक इसके सदस्य थे, जिसकी वजह से ईसाई चर्च को अपना प्रभुत्व कम होने का डर लगने लगा था।

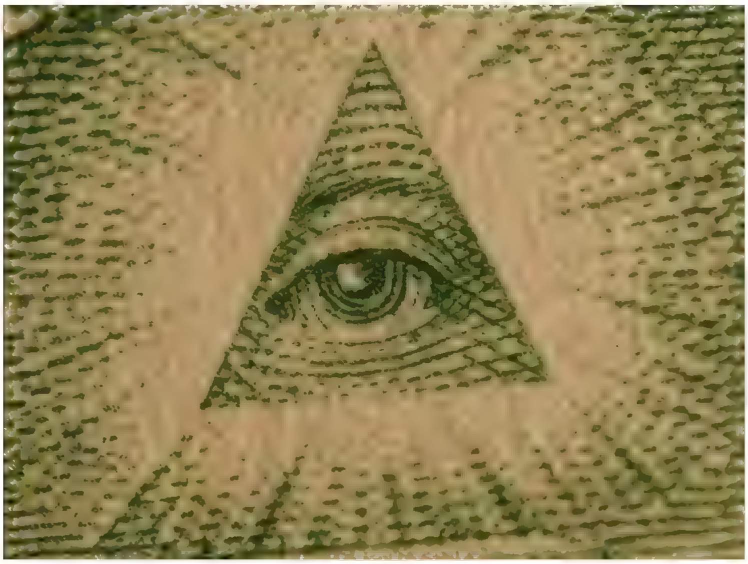
उन्हे लगा की फ्रीमसन की बातों और विचारों से जिस पगन (Pagan) विचारधारा को उन्होंने कुचला था, वही अब दुबारा वापस आ रही है। इसीलिए वेटिकन के पोप क्लीमेंट XII ने साल 1738 में मेसन की भर्त्सना की और

बेनेडिक्ट XVI ने साल 1983 की घोषणा करवाई जिसमें कहा गया था कि "मेसोनिक संस्था में कैथोलिक के खिलाफ गंभीर पाप किए जाते हैं और उन्हें चर्च का समर्थन प्राप्त नहीं हो सकता है"। हालांकि इसका कारण कभी भी स्पष्ट नहीं किया गया और इधर उधर की बातें ही पेश की गई थी। फ्रीमेसोनरी के पहले अत्यधिक मुखर ईसाई आलोचकों में से एक चार्ल्स फिन्नी थे। अपनी पुस्तक द कैरेक्टर, क्लेम्स एंड प्रैक्टिकल वर्किंग्स ऑफ फ्रीमेसोनरी में, फिन्नी ने न केवल राजमिस्त्रियों का उपहास किया, उन्होंने यह भी बताया कि उन्होंने मेसन में प्रवेश करने के तीन साल बाद इसे छोड़ने को एक आवश्यक कार्य के रूप में क्यों देखा?

कई प्रोटेस्टेंट और पूर्वी रूढ़िवादी ईसाई संप्रदाय अपने मंडलियों को मेसोनिक लॉज में शामिल होने से हतोत्साहित करते हैं, लेकिन संप्रदाय की मान्यताओं के अनुसार यह प्रथा तीव्रता में भिन्न होती है। कुछ संप्रदाय फ्रीमेसोनरी के बारे में केवल हल्की चिंता व्यक्त करते हैं क्योंकि उनका मानना है कि यह ईसाई धर्म की शिक्षाओं के अनुकूल नहीं है, जबकि दूसरे चरम पर, अन्य संप्रदाय खुले तौर पर लियो टैक्सिल और एबेल क्लेरिन डी के लेखन को उद्धृत करके शैतान की पूजा करने का आरोप लगाते हैं।

अपने अपने कल्ट विशेष बातों का हवाला देते हुए हमेशा यही कहा की चूंकि फ्रीमेसन किसी को भी ईसा मसीह या ईसाई मजहब को अपनाने के बजाए अच्छी बातों और कर्मों को अपनाने के लिए कहते है और इसी से ही कोई व्यक्ति स्वर्ग में स्थान पाएगा इसलिए मेसन दुष्ट है। चर्च यह भी कहता था की क्योंकि मेसन ईसाई ट्रिनिटी (ईश्वर, पुत्र, पवित्र आत्मा) में संपूर्णता से विश्वास नहीं रखते इसीलिए वह दुष्ट है। एंटी मैसोनिक पार्टी जो की प्रोटेस्टेंट ईसाई मत को मानने वाले थे उन्होंने बढ़ चढ़कर मेसन के खिलाफ प्रचार किए जिसमे उन्होंने मेसन को विलियम मोर्गन (एक्स–मेसन का दावा करने वाले एक सज्जन) की हत्या का आरोप मढ़ा। यूरोप में भी तुर्की के सुल्तान ने मेसन को इस्लाम विरोधी बताया और इसे बैन कर दिया था, वही क्योंकि अधिकतर फ्रीमेसन यहूदी थे इसीलिए नाजी प्रभावित जगह पर हिटलर की नाजी पार्टी ने इन फ्रीमैसन की हत्याएं भी करवाई।

फ्रीमेसन चूंकि एक गुप्त संगठन था और है, इसीलिए इसके सदस्य बनने के बाद ही आप को इस संगठन के बारे में संपूर्णता से पता चलता है, इसीलिए कई वर्षो से फ्रीमेसन संगठन पर बुरे होने या शैतान से मिले होने का झूठा आरोप मढ़ा जाता है। मेसन के कई प्रतीक चिन्ह तो धड़ल्ले से शैतान के साथ जोड़े जाते रहे है जैसे की पिरामिड के अंदर आंख का निशान जो की आज शैतान के साथ जोड़कर देखा जाता है जबकि फ्रीमेंसन साफ तौर पर इसे ईश्वर की संपूर्ण मौजूद सत्ता का निशान मानते है और सब तरफ देखती ईश्वर की आंख कहते है।



इसके अलावा मेसन खोपड़ी या ताबूत जैसे चिन्ह का भी प्रयोग करते है, जिससे वह जीवन की क्षणभांगुरता का आभाष करवाते है और मृत्यु की अटलता को याद करते है, लेकिन ईसाई या मुस्लिम लोग इन्हें भी शैतान से जोड़ कर मेसन को तांत्रिक घोषित करते है।

अब हम इल्युमिनाटी की चर्चा करते है। आज की तारीख में हर सफल व्यक्ति की सफलता के पीछे इल्युमिनाटी का सदस्य होने का और उनका शैतान से अपनी रूह का सौदा करने का एक इल्जाम लगा दिया जाता है जिसमे देश और विदेश के कई लोग है। हालांकि असली इल्युमिनाटी का न तो शैतान से कोई लेन देन था और न ही वह शैतान के पुजारी थे। ऐतिहासिक अर्थ में, "इलुमिनाती" शब्द बवेरियन इलुमिनाती को संदर्भित करता है, जो एक गुप्त समाज था जो 1776 से 1785 तक केवल एक दशक तक संचालित हुआ था। इस संगठन की स्थापना जर्मन कानून के प्रोफेसर एडम वेइशॉप्ट ने की थी, जो प्रबुद्धता के आदर्शों में दृढ़ता से विश्वास करते थे। और उनके ल्यूमिनेटेनॉर्डेन ने अभिजात वर्ग के बीच उन आदर्शों को बढ़ावा देने की मांग की। वेइशॉप्ट इलुमिनाती सदस्यों को तर्क, परोपकार और अन्य धर्मनिरपेक्ष मूल्यों में शिक्षित करना चाहते थे ताकि वे सत्ता में आने पर राजनीतिक निर्णयों को प्रभावित कर सकें।
होडैप का कहना है कि इलुमिनाटी के लक्ष्य - और प्रतिष्ठा - अक्सर उनके साधनों से अधिक थे। अपने शुरुआती दिनों में, समूह में केवल मुट्ठी भर लोग थे। और अपने सबसे बड़े स्तर पर भी, इसमें केवल 650 से 2,500 के बीच सदस्य शामिल थे। समूह अन्य समूहों के भीतर एक प्रकार की स्लीपर सेल बनकर उस आकार तक बढ़ गया - इलुमिनाटी के सदस्य अपने स्वयं के प्रतिस्पर्धी गुप्त समाज के लिए सदस्यों की भर्ती के लिए फ्रीमेसन लॉज में शामिल हो गए।
1785 में, बवेरिया के ड्यूक कार्ल थियोडोर ने कैथोलिक चर्च से प्रभाव में आकर इलुमिनाटी सहित गुप्त समाजों पर प्रतिबंध लगा दिया, और उनमें शामिल होने वाले किसी भी व्यक्ति के लिए गंभीर दंड की व्यवस्था की। समूह के अधिकांश रहस्य उजागर या प्रकाशित हो गए, और, यदि आप अधिकांश इतिहासकारों पर विश्वास करते हैं, तो इलुमिनाती गायब हो गई। लेकिन आज के दौर में अमेरिका या अन्य जगहों पर कई जाली और फर्जी लोगों ने बावरिया इल्लुमिनाती के नाम पर अपनी अपनी दुकान खोल ली जिसके जरिए वह आम जनता को डराते या तंग करते है।

सबसे आखिर में हम सेटनईस्ट (Satanist) संस्था की चर्चा करेंगे। 1960 के दशक के मध्य में स्थापित शैतान का चर्च, अपनी वेबसाइट पर इसे इस तरह समझाता है: “शैतान हमारे लिए गौरव, स्वतंत्रता और व्यक्तिवाद का प्रतीक है, और यह हमारी उच्चतम व्यक्तिगत क्षमता के बाहरी रूपक प्रक्षेपण के रूप में कार्य करता है। हम शैतान को एक प्राणी या व्यक्ति के रूप में नहीं मानते।”
जहां इल्युमिनाटी या फ्रीमेसन ने कभी भी खुद को शैतान से जुड़ा हुआ या शैतानी कार्यों की सराहना नही की, वही सेटेनिस्ट संस्था ने खुलेआम खुद को शैतान की अवधारणा से जोड़ा और ईसाई चर्च के व्यवहार और कार्यों के खिलाफ बातें की। उन्होंने इतिहास में पगान (Pagan) लोगों के ऊपर लगाए गए इल्जाम और अत्याचार, चर्च और ईसाइयत का विरोध करने वाले स्त्रियों को चुड़ैल या पुरुष को जादूगर साबित करके उन पर किए गए अत्याचार को सेटेनिस्म के जन्म का आधार बताया। एलिस्टर क्राउली नाम के एक ऑकल्टिस्ट हुआ करते थे जिन्होंने भारत, चीन और अन्य देशों का भ्रमण करके काफी जगह पर ज्ञान अर्जन किया था। उन्होंने हिंदू शैव मत, योग, बौद्ध, यहूदी कब्बालः पर काफी रिसर्च की और फिर इस ज्ञान को पश्चिम के साथ लाने का प्रयास किया। उन्होंने कई जगहों पर अब्राहमिक मजहबों को पितृसत्तातक और बाकी पागन संप्रदायो को मातृ सत्ता का माना और कहा कि उन्हें ईसाइयत पसंद नही है।



एंटोन लावे (Anton Sandor Lavey) भी एक प्रमुख सेटेनिस्ट माने जाते है जो की साल 1960 के बाद के दशक में काले कपड़े और शैतान के नाम पर एक चर्च खोलने के लिए मशहूर हुए थे। लावे को एक पैदाइशी शोमैन का दर्जा दिया जाता था, जिनमे मशहूर होने की काफी भूख दिखाई देती थी। साल 1957–60 में वह एक मेले (कार्निवल) में छोटा मोटा शो किया करते थे जिसपर उन्हे ऑकल्ट के साथ जुड़ने का मौका मिला था। बाद में उन्होंने चर्च ऑफ सतन (Church of satan) को खोलकर अपने इक्कठे किए गए विचारों को अपने मत में फैलाना शुरू किया, जिसमे उनके द्वारा लिखी गई किताब सैटेनिक बाइबल ने भी भरपूर साथ दिया। इस किताब में उन्होंने शैतान के प्रतिनिधि के रूप में बहुत सी दार्शनिक बातों को प्रचार किया और चर्च का भरपूर विरोध किया। इस पुस्तक में शैतान को चर्च की प्रचार की जाने वाली बातों के उल्ट दिखाया और दर्शाया गया था। जैसे की द सैटेनिक बाइबल पुस्तक में लावे के बताए गए शैतान के कुछ नियम को पढ़िए:

- शैतान संयम के बजाय भोग का प्रतिनिधित्व करता है!
- शैतान आध्यात्मिक हवाई सपनों के बजाय महत्वपूर्ण धरातल का प्रतिनिधित्व करता है!
- शैतान पाखंडी आत्म-धोखे के बजाय निष्कलंक ज्ञान का प्रतिनिधित्व करता है!

उन्होंने कई मौकों पर ऐसे मशहूर लोगों से मिलने का दावा किया था जिसे बाद में फर्जी भी साबित किया गया था। जैसे की उन्होंने एक मौके पर यह कहा था की मर्लिन मुनरो को जानते थे जब वह एक बार में नाचती होती थी और मशहूर एक्ट्रेस नही थी, हालंकि बाद में उसी बार के मैनेजर से इस बात को महज एक गप्प बताया था। हालांकि बाद में वह चर्च के खिलाफ बात करने के कारण विवादों में घिर गए।
क्योंकि सैटेनिक लोग स्वछंद विचारधारा को प्रोत्साहित करता था, इसीलिए इस संस्था में ज्यादातर वह लोग जुड़े या प्रभावित हुए जिनके हिसाब से उन्हें हर किस्म की आजादी होनी चाहिए। रिचर्ड रामिरेज नाम के एक हत्यारे का नाम भी सेटेनिस्ट से काफी जोड़ा गया क्योंकि उस पर लावे सेटेनिज्म से प्रभावित होने का आरोप डाल दिया गया था, हालांकि यह बात स्पष्ट थी की रिचर्ड रामिरेज एक मानसिक रोगी था जिसे सेटेनिजम की बातों में अपने खूनी उन्माद के लिए जगह दिखाई देने का भ्रम था।

1980 और 1990 के दशक में, अमेरिकी टॉक शो और समाचार कार्यक्रमों ने पशु बलि और कर्मकांडीय हत्या की रिपोर्टों को सतानिज्म से जोड़ा। Slate.com, जिसने "सैटेनिक पैनिक" की खोज की, ने जनवरी 2014 में रिपोर्ट दी कि यह सब कैलिफोर्निया के एक प्रीस्कूल में विचित्र संस्कार और छेड़छाड़ के आरोपों के साथ शुरू हुआ - एक ऐसी कहानी जिसने 24 के आगमन के साथ अपने आप में एक जीवन ले लिया। जैसे ही टेलीविज़न पर ईसाइयत का प्रचार करने वालो ने शैतान नाम के जीव के संकट से मुक्ति के लिए प्रार्थना की, टॉक शो "विशेषज्ञों" ने दावा किया कि अमेरिका में दुर्व्यवहार का हर कल्पनीय रूप बड़े पैमाने पर हो रहा था और सेटेनिस्ट के नेटवर्क ने स्कूलों,

पुलिस और स्थानीय सरकार में घुसपैठ कर ली थी। गेराल्डो रिवेरा ने 1987 में टेलीविजन पर प्रसारित एक विशेष रिपोर्ट में दावा किया कि दस लाख से अधिक सतनिस्ट ठीक उसी समय अमेरिका में अपना दुष्ट व्यापार कर रहे थे। बाद में उन्होंने अपनी बातो को अफवाह बता कर माफी मांगी थी।
इस प्रकार से हम समझ सकते है की सतानिज्म के मानने वाले खुद किसी भी शैतान के प्रभाव में न होकर शैतान को ही एक चिन्ह को तरह कैथोलिक चर्च और उनकी रूढ़ीवादी परंपराओं के खिलाफ आवाज उठा रहे थे। उनका विरोध करने के लिए चर्च ने उनके खिलाफ भी काफी अफवाहें जोर शोर से फैलाई, जिनमे सतनिस्ट द्वारा शैतान की पूजा, बच्चों की हत्या, आत्महत्या का प्रयास, बलात्कार के लिए उकसावा इत्यादि के इलजाम लगाए गए। आपने अक्सर शैतान के पुजारियों का ऐसा चित्रांकन फिल्मों या सीरियल्स में जरूर देखा होगा।



यह चित्रांकन भी अमेरिका के सैटेनिक चर्च के लोगों के पहरावे की एक भौंडी नकल है जिसे सब जगह पूरे जगह पर प्रचारित किया गया जिससे सभी तरफ सैटेनिक चर्च बुरे, घिनौने और बलि देने वाले एक ग्रुप के रूप में बदनाम हो गया।

मूर्तिपूजा को भी कई बार बड़े ही गलत तरीके से सिर्फ शैतान के साथ जोड़ा गया है। भारतीय फिल्म जैसे वीराना, बंद दरवाजा इत्यादि में भी ऐसे ही कई भाग और कई सीरियल में शैतान के पुजारी अक्सर किसी मूर्ति के आगे बैठकर पूजा करते दिखाए जाते है या बलि देते दिखते है जिससे मूर्तिपूजक के गलत होने का संदेश फैला।



वीराना हिंदी फिल्म में शैतान का नाम महाकाल था जबकि हिन्दू देवता शिव का नाम भी महाकाल ही होता है।

अभी तक के सभी अंगों को पढ़कर आप अच्छे से समझ सकते है की शैतान की अवधारणा को कई लोगों ने अपने फायदे के लिए कभी दोस्त या कभी दुश्मन की तरह कला, साहित्य या अन्य क्षेत्र में इस्तेमाल किया जिसकी वजह से शैतान की अवधारणा प्रचंड रूप से जनमानस में फेल गई और उसपर किसी भी प्रकार का तार्किक प्रश्न नही किया गया!!!

भाग 7: गैर मजहब होने चलते आरोप और अत्याचार

अभी तक के भागों में हम ने शैतान नाम के नकली किरदार के बारे में काफी कुछ जान लिया है। साथ ही साथ हम ने यह भी समझ लिया है की शुरुआती दौर में शैतान की अवधारणा घातक नही रही थी, लेकिन जैसे ही इस अवधारणा का इस्तेमाल गैर–मजहबी लोगों पर इल्जाम के लिए शुरू हुआ, उसके बाद ही यह अवधारणा खतरनाक होती गई। इसके द्वारा ही एक मजहब का आदमी (चाहे वह यहूदी, ईसाई, मुस्लिम) हो, उसके मन में यह भावना पैदा कर दी जाती थी कि उसके सामने खड़ा हुआ गैर–मजहबी आदमी, शैतान द्वारा प्रभावित है और शैतान द्वारा प्रभावित होने की इसी वजह से वह व्यक्ति उसके ईश्वर(यहोवा, जीसस या अल्लाह) को नही मानता है। इसके

बाद गैर मजहबी आदमी के विरुद्ध कार्यवाही करने में उसे कोई हिचक महसूस नही होती क्योंकि उसे लगता है की गैर मजहबी आदमी को तथाकथित रूप से ठीक करना या हम कहे अपने मजहब में लाना, उनकी मौलिक जिम्मेदारी बन जाती है। उन्हें लगता है की ऐसा करके वह उस व्यक्ति को अपने नर्क(हेल, जहन्नुम) में जाने से बचा रहे है। अगर गैर मजहब का आदमी उनके तर्क और रीति रिवाज से संतुष्ट नही होता है तो यह लोग उससे चिड़ जाते है और उनका मजहबी अहंकार तृप्त नहीं होता है जिस वजह से वह उस गैर मजहबी का नुकसान करना अपने ईश्वर का आदेश भी समझते है।
लेकिन यह कहना की इस मानसिकता से सिर्फ गैर मजहब के लोगों का ही नुकसान हुआ है, गलत होगा क्योंकि ये तथाकथित इब्राहिम के मजहब आपस में भी भूखे भेड़ियों की तरह लड़े है और एक दूसरे को भी अपने मजहब में जबरन लेकर गए है। इसके पीछे का कारण वही छोटी सोच रही है की जो हमसे अलग है ,वो हमारा शत्रु है। ऐसे विचारो के कारण ही ईसाई यहूदी और मुस्लिमों को प्रताड़ित करते रहे और मुस्लिम ईसाई और यहूदियों को प्रताड़ित करते रहे है और इसी मानसिकता के चलते आज तक अनेकों अनेक लोगों पर मजहबी लोगों द्वारा अत्याचार किए गए है, जिनके बारे में हम लोग समय के अनेक दौर के जरिए अब निगाह डालेंगे।

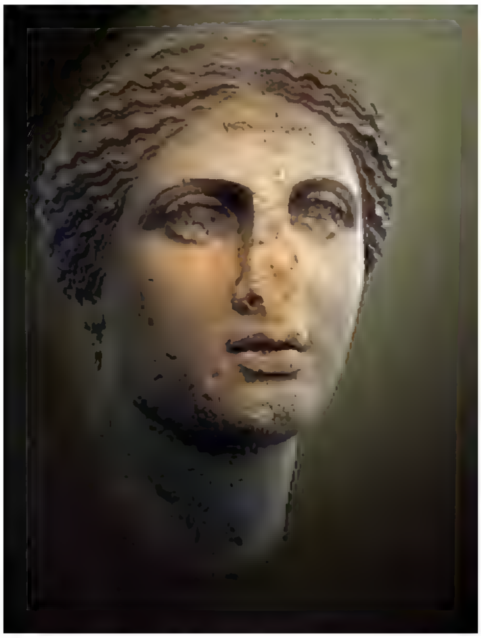
सबसे पहले तो हम यहूदी लोगों के जमाने में हुए उस घटनाक्रम की बात करते है जिसका जिक्र हम पहले भी यहूदी इतिहास में कर चुके है। वह घटनाक्रम उस जमाने का बताया जाता है जब इतिहासिक जुडिया और इजरायल के देश पर जेजबल (Jezebel) नाम की एक रानी हुआ करती थी। उसी के जमाने में हुआ बाल के पुजारियों का हत्याकांड किंग्स नाम की यहूदी किताब में साफ तौर पर दर्शाया जाता है, जिससे हम यहूदी और गैर यहूदी कनाती लोगों में हुए एक द्वंद्व की झलक पाते है। कनाती लोगों के देवताओं और बेब्यूलोनिया देवी देवताओं के शैतान बना दिए जाने वाली बात भी हमने आपको पिछले भागों में बता दी थी। इस प्रकार यहूदी लोगों द्वारा किए गए एक गुप्त प्रताड़ना के बारे में खुद यहूदी किताब ही बता देती है।

यहूदी लोगों को हालांकि किसी को प्रताड़ित करने के लिए राज व्यवस्था का ज्यादा समय नहीं मिला क्योंकि वह बहुत ज्यादा देर तक दूसरे लोगों के गुलाम बने रहे और इस प्रकार कभी बाबयलोनाई, यूनानी, रोमनी, अरबी और अन्य लोगों के अधीन रहते रहे, लेकिन यह कहना बिल्कुल भी अनुचित नहीं होगा की उसके बाद के मजहब ईसाइयत और इस्लाम में गैर–मजहबी लोगों के खिलाफ आई दुर्भावना के लिए उन्हें ही प्रथम दोषी माना जा सकता है।

रोमनी संप्रदाय का अंत और गैर ईसाई बर्बर कबीलों का ईसाईकरण

ईसाइयत ने रोम के राज्य और राजा के ईसाईकृत (क्रिस्टेनाइजेशन) होते ही; धीरे धीरे रोमनी संप्रदाय का अंत शुरू हो गया था। रोमनी सम्राट कांस्टेंटाइन प्रथम के जमाने में मिलान शहर के अध्यादेश में उसने ईसाइयों पर लगाया गया प्रतिबंध हटा लिया था। हालांकि उसने अपने रोमी संप्रदाय का विरोध नही किया और न ही किसी को जबरन ईसाई बनने के लिए प्रेरित किया

लेकिन उसके जमाने के बाद से ही ईसाई चर्च और पादरीयो को भरपूर समर्थन मिलना शुरू हुआ। उसके जाने के बाद कांस्टेंटीस द्वितीय ने तो सीधे सीधे सभी रोमानी देवी देवताओं के मंदिरों पर ताले लगा दिए और रोमन सीनेट (संसद) में लगी हुई विज्यवेदी को भी हटवा दिया जिसमे हर नया आने वाला सम्राट देवताओं को चढ़ावा चढ़ाता था। उसने रोमनी मंदिरों पर टैक्स लगा दिए और भविष्यवाणी करने वालो के ऊपर मृत्युदंड की सजा भी लगा दी। हालांकि क्योंकि उसके राज्य के अनेकों अनेक मंत्रियों ने इस बात का विरोध किया जिस वजह से उसकी कार्यवाही काफी समय तक अपंग ही बनी रही। जूलियन के सम्राट बनते ही बहुत से प्रावधान को उसने हटा दिया क्योंकि जूलियन एक धर्मनिरपेक्ष राजा था।



अफ्रोडाइट की टूटी हुई मूर्ति जिसके माथे पर ईसाई क्रॉस घिस दिया गया था।

जूलियन अपने जमाने में संपूर्ण स्वरूप से ईसाई कट्टरपंथी हरकतों से बचता रहा लेकिन उसके बाद का सम्राट जोवियन ने फिर से ईसाइयत को राज्य का एकमात्र मजहब घोषित कर दिया और रोमानी देवताओं की पूजा पर मौत का प्रावधान भी लगाया। उसके बाद ग्रेशियन ने अपने राज्य के समय पर फिर से रोमी संप्रदाय को मिलने वाले आर्थिक सहयोग पर रोक लगाई, उन्हें जमीन रखने से मनाही कर दी और पोंटिफेक्स मैक्सिमस (रोमानी संप्रदाय का महापुजारी) पद को भी हटवा दिया जो की उसके पहले के हर रोमन सम्राट ने धारण किया था। मंदिरों को मिलने वाले चंदे में भी कटौती की जाने लगी।

इसके बाद थियोडोसियस प्रथम (Theodosius) जो की एक ईसाई पादरी एंब्रोस के बहुत ज्यादा ही प्रभाव में था, उसने पगान लोगों के त्योहारों को ही काम का दिन बना दिया ताकि वह अपने पारंपरिक त्योहारों का आनंद न ले सके। जब थियोडोसियस से पगान लोगों ने विज्यवेदी को वापस लाने के लिए कहा तो एंब्रोस नाम के पादरी ने इसके लिए साफ मना कर दिया। थियोडोसियस के एक जनरल साइनेजियस ने खुलेआम अपने इलाके ओशोरन, कैरे और बेरो

(Osrhoene, Carrhae, and Beroea) में रोमानी मंदिरों को अपनी फौज और काले लबादे वाले ईसाई भिक्षुओं की सहायता से तुड़वाया।
थियोडोसियस के राज्य में ज्योतिष शास्त्रीयो के गणना करने की गणित की किताबो को जलवाया गया ताकि वह ज्योतिषीय भविष्यवाणी न कर सके जो की पादरीयो के अनुसार गलत काम था। अपने थेसालोनिका के राजपत्र में उसने घोषणा की अगर कोई भी अन्य संप्रदाय के जो की नाइसिया के जनमत (nicene creed) को मानने से मना करेगा तो उसे धरती पर रोमन सम्राट का और मरने के बाद ईसाई ईश्वर का कहर भोगना पड़ेगा।
थियोसोडियस के ऐसे अंध–समर्थन से उसके दौर में कई पगान विरोधी दंगे हुए जिनमे कई पुरातन रोमानी मंदिर तोड़ दिए गए या उनमें जमकर लूटपाट की गई। मार्टिन जो की टूर्स (Martin of Tours) का बिशप था उसे इस बात के लिए सेंटहुड (sainthood) दिया गया की उसने अनेकों पगन मंदिरों को नष्ट किया और उनकी बलिवेदी को तबाह कर दिया।

जहां जहां पर भी रोमन साम्राज्य था जैसे की अफ्रीका का उतरी भाग, यूनान, मिस्र, पलेस्टाइन, सीरिया इत्यादि, इन सभी जगहों पर पगन लोगों के साथ भयंकर लूटपाट की गई और मंदिरों में तोड़फोड़ की गई।

सीरिया के एक शहर पल्मीरा में अल-लात नामक देवी की पूजा होती थी जो की यूनानी देवी एथेना का ही एक रूप था। साल 385 से 387 के बिच में मटेर्नुस कीनेजियम (Maternus Cynegium) जो की पूर्व रोमनी साम्राज्य का एक सेनापति था, उसके द्वारा अल लात के मंदिर में पूजा पाठ पर रोक लगवाई गई और एथेना की मूर्ति के हाथ पैर तोड़ दिए गए और चेहरा बिगाड़ दिया गया। इस मंदिर को चर्च में नहीं बदला गया बल्कि बेकार और जंग खाने के लिए छोड़ दिया गया था।

अलेक्जेंड्रिया में थियोफिलियस (Theophilius) नाम के एक पादरी ने कई गैर–ईसाइयो को सेराफियम में जिंदा जला कर मरवा दिया था।
हाइपेटिया की मौत का किस्सा भी इसी जगह पर अंजाम दिया गया था। एक मिस्र के कॉप्टिक बिशप जॉन ने हाइपेटिया पे जादूगरी और शैतान से मिले होने के आरोप लगाए।

> And in those days there appeared in Alexandria a female philosopher, a pagan named Hypatia, and she was devoted at all times to magic, astrolabes and instruments of music, and she beguiled many people through her Satanic wiles. And the governor of the city honoured her exceedingly; for she had beguiled him through her magic. And he ceased attending church as had been his custom... And he not only did this, but he drew many believers to her, and he himself received the unbelievers at his house.[92]

बाद में साल 415 में परबलानी नाम के कट्टर ईसाई ग्रुप के द्वारा उसकी नृशंस हत्या की गई, जिसमे उसके शरीर के टुकड़े टुकड़े कर दिए गए थे।



यह सभी उपरोक्त घटनाएं यह साबित करने के लिए पर्याप्त है की जब ईसाई मत अपने जोर शोर पर था तो उसने रोमानी संप्रदाय का संपूर्णता से दमन किया और इसमें सफल भी रहा। हालांकि थियोडोसियस अखंड रोमन साम्राज्य का आखिरी सम्राट साबित हुआ क्योंकि रोम का साम्राज्य अब तक इतना बड़ा हो चुका था की उस पर एक सम्राट का काबू रखना मुश्किल था। ऊपर से निरंतर चल रहे गृह युद्ध ने भी रोमन सम्राट की कमर में दर्द कर रखा था और ईसाइयत ने भी इसके थोड़ा योगदान दिया। ईसाइयत से यह उम्मीद रखी गई थी की यह रोमन साम्राज्य को एक करने में मदद करेगा लेकिन इसके उल्ट ईसाइयत ने गैर–ईसाई और ईसाई समाज में भयंकर वैमनस्य उत्पन्न किया जिससे न सिर्फ गैर ईसाई समाज उनसे चिड़ा बल्कि ईसाई समाज में भी महाबंटवारे (Schism) तक हालत पहुंच गए।

जब रोमन साम्राज्य पूर्वी और पश्चिमी भागों में बंटा, तो पश्चिमी भाग बहुत लंबे समय तक अस्तित्व में नहीं रहे क्योंकि उन पर गोथिक, जर्मेनिक और लॉम्बरड (Gothic, Germanic, Lombard) कबायली लोगों ने हमले शुरू किए। रोम के पश्चिमी भाग का अंतिम राजा रोमुलस अगस्तस को ओडेसर नाम के एक गोथ राजा द्वारा ही हरा दिया गया और तब उस इलाके पर गोथिक लोगों का कब्जा हो गया। इन गोथिक लोगों के संबंध अपने कब्जे में आए एरियन ईसाई लोगों से हुआ जिससे इनका संपर्क ईसाइयत से हुआ। बाद में उल्फीलास नाम के एक एरियान (Arian) विचारधारा के गोथिक बिशप ने ही गोथिक लोगों को पहली बार ईसाई बाइबल से परिचय करवाया और इन लोगों को धीरे धीरे अपने में मिला लिया।



उलफिलास *(Ulfilas)* गोथिक कबीले को बाइबिल का सन्देश सुनाता हुआ

यह बात देखने योग्य है की क्योंकि एरियान के विचारधारा के अंतर्गत ही गोथिक लोगों का कन्वर्जन हुआ था इसीलिए यह गॉथ लोग ईसाई होकर भी कभी भी रोमन साम्राज्य के साथ तालमेल नहीं बैठा सके जो की कैथोलिक विचारधारा को सही मानते थे और एरियन की विचारधारा को वो विधर्मी मान कर उनका दमन करते थे।

इसके बाद उन्होंने अलग–अलग यूरोपीय देशों को भी ईसाईकृत करने की अपनी योजना को बनाना शुरू किया। उनका मकसद वैसे तो राज्य विस्तार ही था लेकिन वह ईसाइयों को इस बात का लालच देते थे की हर गैर–ईसाई को ईसाई करने के लिए उन्हें स्वर्ग में अच्छा इनाम मिलेगा और साथ ही साथ ईसाई रोमन साम्राज्य के वैभव का हिस्सा बनने का मौका भी मिलेगा।

पूर्वी रोमन सम्राट जस्टिनियन ने भी 528 में अपने समय में गैर ईसाइयों की पुस्तके जलाने और उनके मंदिरों और मूर्तियों को तुड़वाने के आदेश जारी करवाए। इस आदेश का असर काइनेगिया(Kynêgion) में दिखाई दिया था।

रोम के पश्चिम में फ्रैंक कबीले के लोग भी पहले अपने देवी देवताओं की पूजा करते थे। साल 509 में उन्होंने रोमन साम्राज्य के गोल (Gaul) प्रदेश को जीत लिया और कई अन्य कबाइली लोगों के राज्य भी हड़प लिए। जब उनकी मुलाकात एरियन ईसाइयत वाले पादरियों से हुई, जिन्होंने उन्हें प्रभावित किया, तो उनकी पहचान पहली बार ईसाइयत से हुई।
बाद में क्लोविस प्रथम (Clovis 1) नाम के फ्रांकिश राजा ने अपनी बर्गंडी प्रदेश की ईसाई बीवी क्लोटिल्डे के प्रभाव में आकर कैथोलिक ईसाइयत को अपना लिया था। इस घटना में सीधे सीधे क्लोविस की ईसाई बीवी का हाथ माना जाता है जिसकी वजह से चर्च ने उसे संत की उपाधि से नवाजा था।
ईसाइयत ने क्लोविस प्रथम को एक खास प्रकार का एहसास करवाया था जिससे की उसे लगा कि राज्य करने का अधिकार ईसाई ईश्वर की तरफ से मिला है। इसी से मेरोविंगियन फ़्रांसिसी राज घराने की नीव डली थी।



इस्लाम के जरिये गैर इस्लामिक अरबी कबीलों का दमन

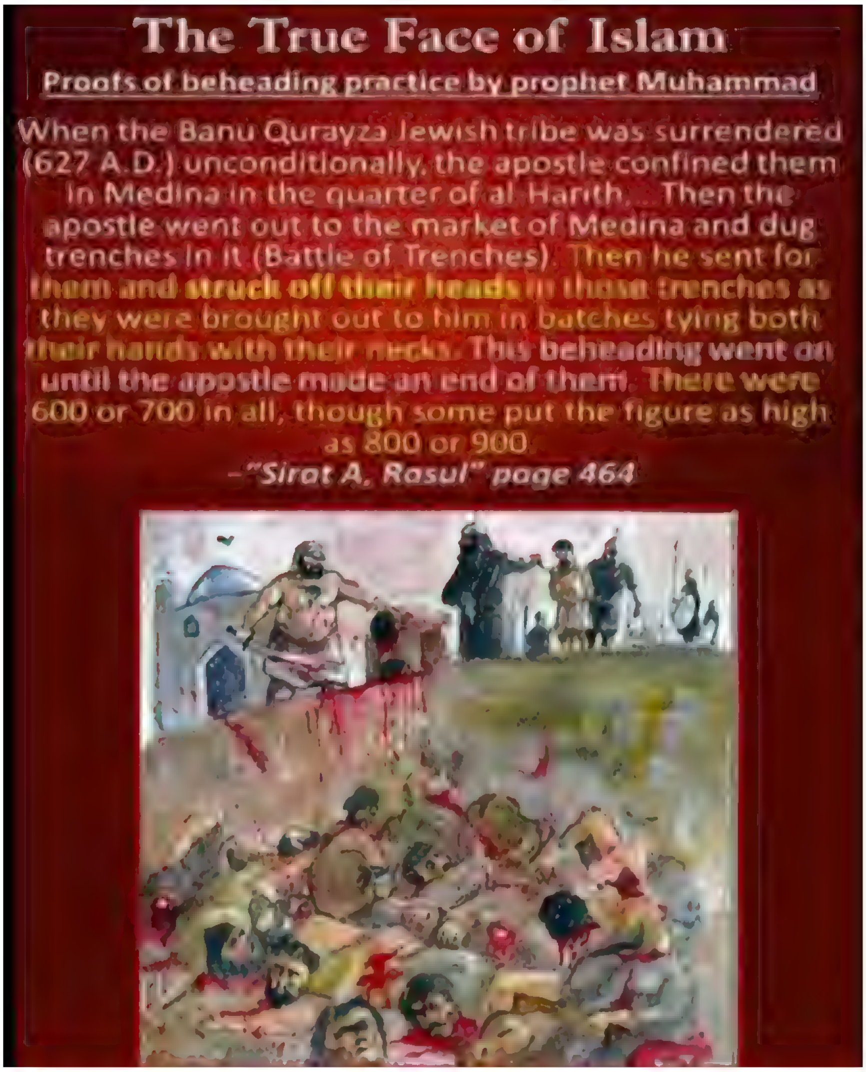
जिधर ईसाइयत अपने पांव रोमन साम्राज्य के अवशेषों में बना चुकी थी, अरब के कबायली इलाकों में इस्लाम नाम के नए अब्राहमिक मजहब का जन्म हो चुका था। इस मजहब के संस्थापक हजरत मुहम्मद ने अपने जीवनकाल में ही अनेकों गैर मुस्लिम लोगों का कत्लेआम करवाया था जो की हमे इस्लामिक किताबों में आम ही पढ़ने को मिल जाता है। गैर मुस्लिम इलाकों पर हमले करने की प्रेरणा उन्हे इस बात से मिल जाती थी की ऐसा करके वह अरबी अल्लाह की खिदमत कर रहे है जो की असली खुदा है और बाकी लोगों के खुदा असल में शैतान है। इस्लाम का एक बुनियादी सिद्धांत हमेशा से यही रहा है की अगर कोई विचार, पुस्तक, व्यक्ति इस्लामी विचार, पुस्तक(किताब, हदीस) और हजरत मुहम्मद के खिलाफ है तो उसे नष्ट कर दिया जाना चाहिए और अगर कोई विचार, पुस्तक, व्यक्ति इस्लामी विचार, पुस्तक(किताब, हदीस) और हजरत मुहम्मद के साथ तालमेल बिठाते है तो वह इस्लामी विचार, पुस्तक और व्यक्ति के आगे व्यर्थ है। इस विचारधारा की बलि अनेकों लोग चढ़ गए।

सबसे पहला जिक्र हमे मदीना में रहने वाले उन यहूदी लोगों का करना चाहिए जिन्हें मुहम्मद के कहने पर निशाना बनाया गया था। बनू कुरैजा के यहूदी लोग सदियों से मदीना के अरबी इलाकों

में रहते थे। बहुत से मुस्लिम विद्वान मानते है की बनू कुराइजा का हजरत मुहम्मद के साथ एक संधि हुई थी जिसे तोड़ने के फलस्वरूप मुहम्मद ने उनके कत्लेआम को करवाया था, लेकिन बहुत से अन्य लोग इस बात को महज एक इसलामिक झूठ मानते है जो की सिर्फ मौहम्मद को सही और यहूदियों को गलत साबित करने के लिए घड़ी गई है।
हजरत मुहम्मद ने बनू कुरैजा के इलाके पर खंदक की जंग के बाद हमला किया और 25दिन के डेरा डालने के बाद बनू कुरैजा ने आत्म–समर्पण कर दिया। इसके बाद उनके साथ क्या किया जाए उसके लिए साद–इब्न मुआद नाम के एक पूर्व यहूदी को बुलवाया गया जिसने इस्लाम अपना लिया था। उसने सीधे सीधे बनू कुरैजा के सभी मर्दों को मार डालने और औरतों और बच्चों को गुलाम बना लेने की सलाह दी।

हालांकि मुस्लिम सारी बात साद के कंधो पर डाल देते है की साद ने ऐसी सलाह दी थी लेकिन यह बात भी सरासर झूठ है। साद पहले से ही एक हिंसक व्यक्ति था जो की मुहम्मद के एक इशारे पर किसी का भी कत्ल करने को तैयार रहता था।
तबारी की किताब के अनुसार इसने बद्र की जंग में लोगों के कत्ल की सलाह दी थी और एक और मामले में दोषी को मारने के लिए सबसे पहले उसी ने हां की थी। एक और जगह तबारी में साल 5 में साद अपने दिल मे यह इच्छा रखे हुए था की बनू कुरैजा के साथ होने वाले फैसले में उसे अहम भूमिका अदा करने दी जाए। इन सभी बातों से साबित होता है की मुहम्मद ने जानबूझकर साद को इस मामले में आगे किया था क्योंकि वह जानते थे कि साद क्या फैसला देगा??

बनू कुरैजा के लगभग 600–900 मर्द लोगों के सर कलम कर के मारे जाने की बात अल तबारी की किताब बताती है। उनके औरतों और बच्चों को गुलाम बना लिया गया था और बाद में कई को बेच दिया गया था।



जब तक मुहम्मद जिन्दा रहे तब तक पूरा अरबी मूर्तिपूजक समाज जबरदस्ती और तलवार के जोर पर इस्लाम में ले आया गया, जिसमे सबसे पहले काबा और उसके आस पास रहने वाले मूर्तिपूजक समाज के लोगो की 300 मूर्तियां तोड़ कर काबे से बाहर फैंक दी गई।

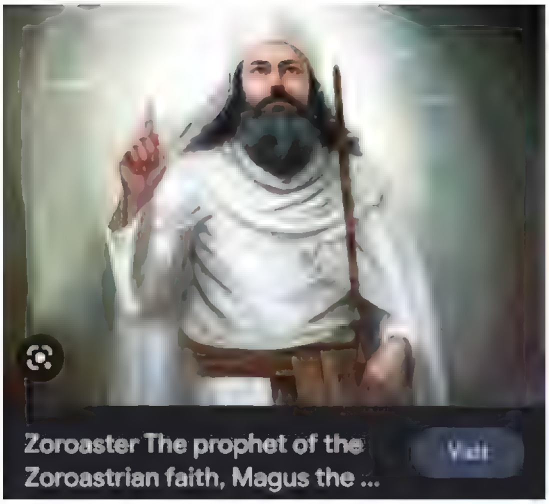
जिस बुतपरस्त ने इस्लाम अपनाने से इंकार किया या तो उससे जिज्या लिया गया, नहीं तो उन्हें पकड़ कर गुलाम बनाया गया। बहुत सी जगहों पर लोगों की हत्याएं भी की गयी। अरबी मूर्ति और देवी देवताओ के मंदिरो को तोड़ फोड़ कर उनकी जगह पर मस्जिदे बना दी गयी। तफ़सीर इब्न-ए-कसीर के 53:19 में इस घटना का जिक्र जिसमे 630 साल में मुहमम्द के आदेश पर ताइफ़ के शहर और अल लात नामक देवी के मंदिर का विध्वंस कर दिया गया था।

हजरत मुहम्मद के मर जाने के बाद इस्लामी राज्य को चलाने वाले को खलीफा का नाम दिया गया जो की खुद मुहम्मद के ही दोस्त या जानने वाले थे।

इस्लाम के द्वारा ज़रथुस्त्री संप्रदाय का दमन

राशिदून खलीफ्त के दौरान अरबी लोगों ने सबसे पहले सातवी सताब्दी में फारस पर कई हमले करने शुरू किए, जिसमे पहले तो उन्होंने मेसोपोटामिया और यमन के क्षेत्रों को जीता और धीरे धीरे फारस की तरफ को बढ़े।
फारसी साम्राज्य जो की बायजेंटिन साम्राज्य से लड़ते भिड़ते कमजोर हो चुका था, अब अरबियो के छापा मार तकनीकों में उलझ गया और नहवंद की जंग (642 AD) में फारसी अधिपत्य का पतन हो गया।
इसके बाद जो फारसी लोग जंग में पकड़े जाते या बागी होते ,उन्हें गुलाम बना लिया गया और अरबी बाजारों में बेच दिया गया। बाकी लोगों पर जिम्मी(Dhimmi) का दर्जा देकर उन पर जिज्या नाम का टैक्स लगाया गया जो की गैर-मुस्लिमों द्वारा दिया जाने वाला टैक्स था। इन जिम्मी वाले फार्सियो को एक अलग पोशाक पहननी पड़ती थी जो की इन्हे मुस्लिमो से अलग बताती थी। फारस का अपना मजहब जरथुस्त्रवाद खतरे में आ गया क्योंकि कई अग्नि मंदिरो को ध्वस्त कर दिया गया और कई को मस्जिदों में तब्दील कर दिया गया।
कई ओहदे पर से फारसी गैर मुस्लिम लोगों को हटा दिया गया और सिर्फ इस्लाम कबूलने वालों को ही फायदे दिए जाने लगे।
आने वाले 500 सालों तक उमैयाद और अब्बासी खिलाफत ने अरबी मानसिकता को फारसी जहन में पुरजोर थोपा और धीरे धीरे फारस का इस्लामीकरण हुआ जिसमे सबसे ज्यादा अहम रोल निभाया, जरथूस्त्रवाद के संप्रदाय के अंग अहुरा माजदा और अहरिमान को अरबी अल्लाह और इब्लिस साबित करके। इस्लाम ने बड़ी चालाकी से दोनों अलग चीजों को एक कर दिया की फारसी भाषा में जिसे अहुरा कहते है उसी को अरबी में अल्लाह कहते है।
उन्होंने फारसी में अहुरा माजदा के लिए इस्तेमाल होने वाले शब्द खुदा, परवरदिगार इत्यादि को इस्लामिक अल्लाह के साथ जोड़ कर इनके मतलब ही बदल दिए।

इससे फारसी मानसिकता को गुरेज नहीं रह जाता था की ये दोनो एक ही है और उन्होंने दबे मन से अपना पैतृक संप्रदाय छोड़ दिया। बहुत से फारसी अपना धर्म बचाने के लिए फारस के तबारिस्तान से भागकर भारत के गुजरात में आ गए थे और आज की तारीख में सबसे ज्यादा फारसी धर्म के लोग भारत में ही है।



ईरान की तथाकथित क्रांति (1979) के दौरान कई शिया मुस्लिमो ने तेहरान के मुख्य अग्नि मंदिर (अतिश्कादेह) में घुसकर पैगंबर जरथुष्ट्र की तस्वीर को फाड़ डाला और उसकी जगह कट्टर मौलवी अयातुल्लाह खोमैनी की तस्वीर लगा कर साबित किया कि इस्लाम की निगाह में गैर मुस्लिमो की या उनके आस्था की क्या इज्जत है!!!

यह एक विडंबना ही कह सकते है की आहरीमान के रूप में शैतान की परिकल्पना को जन्म देने वाले फारसी लोगों को अब खुद ही इसी परिकल्पना का नाग डंस चुका था।

अप्रैल 637 में खलीफा उमर ने ईसाई प्रभावित जेरुसलम जिस पर मुस्लिम भी अपना अधिकार समझते थे, उस पर विजय प्राप्त की और सोफ्रोनिक्स के साथ एक संधि जिसे उमरिया संधि कहा जाता है उसके अंतर्गत ईसाइयों ने इस इलाके में जिम्मी बनकर रहना स्वीकार किया। उन्हें थोड़े बहुत अधिकार मिल गए और आश्वस्त कर दिया गया की उनके जान माल और ईसाई गिरजाघर को कोई नुकसान नहीं पहुंचाया जायेगा लेकिन उनसे जिज्या और अन्य टैक्स लिया जायेगा।

राशिदून खिलाफत ने साल 639 में मिस्र (egypt) में अपने सिपहसालार अम्र इब्न अलआस के नेतृत्व 4000 की फौज के साथ में बायजेटिन साम्राज्य के अंतर्गत आने वाले मिसरी भाग पर अपना धावा बोला। जॉन ऑफ निकीउ के अनुसार वह जहां पे भी गए, उन्होंने कत्लेआम मचा कर रख दिया। कई ईसाई लोगों को मार दिया गया और बहुत से अपनी जान बचाने के लिए बायजैंटिन की तरफ को भाग गए। मिस्र के बड़ी आसानी से मुस्लिम अक्रान्ताओ के द्वारा हार जाने की वजह ईसाई मजहब का वही महाबटवारा माना जाता है जिस वजह से बीजान्टिन साम्राज्य का प्रीफेक्ट सीरस (cyrus) कॉप्टिक ईसाई लोगों को विधर्मी या हेरेटिक समझ कर उनपर अत्याचार करता था।

मिस्र के अलावा उन्होंने सम्पूर्ण रोमन शासित क्षेत्रो ; फिलिस्तीन, सीरिया (634 -638), अनटोलिआ, उत्तरी अफ्रीका इत्यादि पर भी कब्जे कर लिए और वहां के लोगों को जिम्मी बना के उनसे जिज्या लेना शुरू कर दिया।

जहां पर पूर्वी ईसाइयत इस्लाम के बढ़ते प्रभाव से टकरा रही थी, पश्चिमी ईसाइयत अपने विस्तार में बहुत आगे को बढ़ी। फ्रांकिश और गोथिक कबीलों के ईसाइयत अपना लेने के बाद वैंडल्स ने भी बाद में ईसाइयत को अपना लिया था। स्पेन के इलाके में बहुत पहले से ही रोमन लोगों ने अपनी कॉलोनी स्थापित कर रखी थी लेकिन जर्मेनिक कबीलो और वांडल्स (vandals) के हमलों ने पश्चिमी इलाके पर रोमन पकड़ कमजोर कर दी। वांडल्स ने एरियन विचारधारा वाली ईसाइयत को अपना लिया जिसके फलस्वरूप उन्होंने नाइसीन क्रीड को मानने वाले कैथोलिक लोगों का जमकर संहार किया। उनकी बाइबल को जला दिया और उनके बिशप को देश निकाला दे दिया गया।
जिधर ईसाइयत ने वांडल्स को प्रभावित किया, इस्लाम ने दूसरी ओर फारसी ईसाइयत प्रभावित अनातोलिया में से निकले तुर्को को प्रभावित किया। वांडल्स की तरह ये लोग भी किसानी करने वाले आम लोग हुआ करते थे। राशिदून खिलाफत के दौर में यह लोग इस्लाम से परिचित हुए और बाद में इन्होंने कई इस्लामी लड़ाइयों में भी भाग लेना शुरू किया।

ईसायत ने आने वाले कई सालों में पोप ग्रेगरी के आदेश अनुसार एंग्लो सैक्सन लोग यानी की इंग्लैंड के मूल निवासी लोगों को भी प्रभावित कर के धीरे धीरे नोर्स लोगों के देवी देवतावाद से अलग कर दिया और इसियाई कर दिया। पहले तो एंग्लो सैक्सन लोग बाकी लोगों की तरह अपने कुल के देवी देवताओं को पूजा करते रहे लेकिन उन्होंने बाद में यह काम भी बंद कर दिया। फ्रांकिश लोगो की तरह ही यहां भी बीवी के ईसाई होने से ईडबाल्ड नाम का कैंट का राजा जो ईसाइयत से मुख मोड़ चुका था, उसने वापस से ईसाई मजहब को अपना लिया था। इस प्रकार से 7वि शताब्दी तक एक बनना बिगड़ना की तर्ज पर कई एंग्लो सैक्सन घराने पुराने रिवाज पर जाते रहे और किसी कारण से वापस ईसाइयत अपनाते रहे लेकिन 7वी शताब्दी तक पूरा इंग्लैंड आयरिश मिशनरीज की बदौलत ईसाईकृत बन चुका था।

नॉर्स लोगो का ईसाईकरण और नॉर्स देवतावाद का पतन

ईसाई समाज की सबसे बड़ी जीत साबित हुई जब उन्होंने नोर्स लोगों और स्कैंडिनेविया को इसियायकृत करने में सफलता हासिल कर ली। नोर्स लोग सदैव से ओडिन, थोर, फ्रेया इत्यादि देवी देवताओं की पूजा करने वाले बहुदेवी–देवतावादी लोग थे। बाद में जब वाइकिंग दौर आया तो राज्य विस्तार की लालसा में इन्होंने यूरोप के कई इलाके, इंग्लैंड में भयंकर तबाही मचा कर रख दी। इंग्लैंड के नोथमब्रिया में उन्होंने ऐसा कहर मचाया जिसने समस्त इंग्लैंड ईसायत में नोर्स लोगों को एक शैतान या राक्षस को तरह प्रचारित कर दिया। ईसाई मिशनरी ने धीरे धीरे स्कैंडिनेविया के अंदर अपना मिशन चालू रखा।
डेनमार्क के डैनिश लोगों ने ईसाई मत को अपनाया तो ईसाई मिशनरी ने उनके पवित्र स्थल को की विबोर्ग, लुंड और ओडेंस में थे उन पर ईसाई गिरजाघर बनवा दिए क्योंकि डैनिश लोग पहले इन्ही पहाड़ों और पवित्र जगहों की पूजा किया करते थे। जिन ईसाई पादरियों ने ईसाईकृत का

काम डेनमार्क में किया उन्हें संत की उपाधि दी गई जैसे की केजेल्ड को विबोर्ग में, ओडेंसे में कैन्यूट को ईसाईकरण करने के लिए संत की उपाधि से नवाजा गया।

थोर देवता के हथौड़े के निशान को बड़ी आसानी से यीशु के सलीब के निशान से बदल दिया गया क्योंकि दोनों में एकबार देखने से दोनो में ज्यादा अंतर पता नही चलता।



थॉर देवता का हथोड़े का निशान और चिन्ह

हराल्ड ब्लैटैंड या जिसे हेराल्ड ब्लूटूथ भी कहा जाता है, उसे ही डैनिश लोगों के सम्पूर्ण ईसाईकृत होने के लिए जिम्मेदार बताया जाता है। हेराल्ड ने जैसे ही ईसाइयत को अपनाया, उसने अपने राज्य में मिशनरीज को खुली छूट प्रदान कर दी। इसके पीछे हालांकि उसके कारण आर्थिक मदद और ईसाई जगत से मैत्री ही थे।
स्कैंडिनेविया के नॉर्वे प्रांत में हाकन दी गुड (Hakan the Good) एक ऐसा राजा था जो की नॉर्वे के ईसाईकरण में सहायक हुआ। वह इंग्लैंड में काफी समय तक रहा था जिस वजह से उसे ईसाइयत अच्छा लगने लगा। बाद में उसी ने पुराने नोर्स देवी देवताओं की पूजा रुकवाने का काम सबसे पहले किया। उसके बाद ओलाव हैराल्डसन ने इसे किया जिसमे उसने नोर्स लोगों के पूजाघर गिरवाए। इसके बाद 100–200 सालों के अंतराल में नोर्स देवी देवताओं की पूजा के स्थान पर ईसा की पूजा शुरू हो गई और बाकी देवताओं जैसे ओडिन को शैतान या दुष्ट बना दिया गया।

अब हम आपके सामने उन स्वीडिश लोगों का जिक्र करेंगे जिन्हें सिर्फ इसलिए मारा गया क्योंकि वह नॉर्स देवी देवताओ की पूजा करते थे।

27 अक्टूबर 1484 को, रैगवाल्ड ओडेनस्कारल **(Ragvald Odinskarl)** नाम के एक नॉर्स देवता ओडिन के पुजारी को स्टॉकहोम में दक्षिणी अपलैंड में चर्चों से चोरी करने के लिए परीक्षण पर रखा गया था। इनमें स्केप्टुना चर्च (दो बार) मार्किम्स चर्च, ऑर्केस्टा चर्च और वैलेंटुना चर्च शामिल थे। उसने जोहान लैंड नाम के एक पुरुष साथी के साथ मिलकर चोरी करना स्वीकार

किया, जिसे बाद में गिरफ्तार कर लिया गया। इस अवधि के दौरान एक चर्च से चोरी करना एक साधारण चोरी नहीं माना जाता था, बल्कि इसे अपवित्रीकरण का कार्य भी माना जाता था। रैगवाल्ड ने स्वयं घोषित किया, कि उसने पुराने नॉर्स देवता ओडिन की सात वर्षों तक सेवा की थी और इस प्रकार वह ईसाई नहीं बल्कि नॉर्स धर्म का अनुयायी था।

माना जाता है कि रैगवाल्ड ओडेन्सक्ल को जलाकर मार डाला गया था। उनके साथी जोहान लैंड ने खुद उसका जल्लाद बनने की बात कहकर खुद को फांसी की सजा से बचा लिया था।

एरिक क्लॉसन (Eric Klasson) एक स्वीडिश व्यक्ति था जिसे टोना, चोरी और विधर्म के लिए मार डाला गया था, हालांकि असल में उसे बुतपरस्ती और नॉर्स देवताओ की पूजा के लिए मार डाला गया था। क्लॉसन ने वर्मडो के स्वीडिश द्वीप पर हंस पर्सन के नौकर के रूप में काम किया। 1492 में, उन्हें स्टॉकहोम में अदालत के सामने रखा गया, जहां उन्होंने कबूल किया कि गरीबी से निजात पाने के लिए उन्होंने अपने पुराने नॉर्डिक देवता ओडिन की पूजा की थी, और यह कि उन्होंने अपने मालिक से कई बार चोरी की थी। हालाँकि यह सारा चोरी, जादू मंतर का इल्जाम सिर्फ इसीलिए लगाया गया ताकि इसकी मदद से एरिक को फंसाया जा सके। ओडेन, अन्य मूर्तिपूजक देवताओं की तरह, चर्च द्वारा एक शैतान माना जाता था, इसलिए "ओडेन" का अदालत द्वारा "शैतान" के रूप में अनुवाद किया गया था, और क्लॉसन को एक शैतान-पूजक के रूप में आंका गया था। यह सभी प्रकार से बुतपरस्ती के खिलाफ विधर्म का परीक्षण था।

फैसला यह था कि उसे घुमते चरखे की सजा देकर मार डाला जाना चाहिए और चोरी के लिए फांसी पर लटका दिया जाना चाहिए। उनके दूसरे, धार्मिक अपराध के लिए, "यहोवा और उनकी अमर आत्मा" के खिलाफ "उच्चतम मामले" के लिए, उन्हें दांव पर जलाने की सजा दी गई थी; क्योंकि धार्मिक अपराध चोरी से ज्यादा महत्वपूर्ण था, यह वह सजा थी जिसे अंजाम दिया जाना था। जबकि स्वीडिश कानून ने वास्तव में उस समय ऐसे अपराधों का उल्लेख नहीं किया था, फैसले को एक संकेत के रूप में देखा जा सकता है कि कैथोलिक चर्च ने उस समय महाद्वीप के समान स्वीडन में एक मजबूत स्थिति बना रखी थी, जहां विधर्म के मामले अधिक आम और सजा के योग्य थे।

सामी लोगों का ईसाईकरण और पगान सामी लोगों का दमन



सामी लोगों के समाज का नक्शे पर चित्रण

जिस प्रकार स्वीडन में नॉर्स देवतावाद किसी समय में प्रचलन में था, उसी समय में सामी (Sami) लोग भी सापमी(Sapmi) नाम के अपने शहर में रहते थे और ज्यादातर सामी शामनवाद (shamanism) को मानते थे।
सामी लोग सापमी शहर के मूलनिवासी होते थे जो की आज के स्वीडन के उत्तरी भाग, नॉर्वे, फिनलैंड और रूस के कोला इलाके में रहते थे।



स्वीडन की तरह ही सामी लोग भी ईसाई घुमक्कड़ पादरी के संपर्क में 13वी शताब्दी के आस पास आये। सामी लोगों के बीच के ही लोगों को धीरे धीरे ईसाई पादरियों ने अपने प्रभाव में लेने का प्रयत्न किया। मार्गरेटा (Margareta) (1369-1414) एक स्वीडिश सामी मिशनरी थी। उसे स्वीडिश राज दरबार द्वारा उपदेश देने और अपने साथी सामी लोगों को ईसाई धर्म में परिवर्तित करने की अनुमति दी गई थी। एक सामी और एक महिला दोनों के रूप में उनकी स्थिति उनके लिए अद्वितीय थी।

हालाँकि इन सभी प्रयासों के बावजूद भी सामी लोग के ईसाई बनाने की प्रक्रिया सीधे जाकर 17वी शताब्दी में शुरू हुई जब स्वीडिश ईसाई राजाओ ने अपनी कॉलोनी सापमी में शुरू करवाई। इन विदेशी ईसाई राजाओ ने सामी लोगों के संप्रदाय को सीधे सीधे शैतान के पुजारी और जादू मन्त्र करने वाले घोषित कर दिया गया, उनके ऊपर बेगारी या बंधुआ मजदूरी थोपी और टैक्स सिस्टम शुरू किए गए।

प्रोटेस्टेंट चर्च और प्रोटोस्टेंट ईसाईवाद, सामी शमनवाद के प्रति शत्रुतापूर्ण रहता था, जिसे वह बुतपरस्त और ईसाई विरोधी मानता था, और उसे नष्ट करना चाहता था, सामी लोगों को ईसाई बनाना चाहता था। शाही शक्तियों के साथ-साथ क्षेत्र पर अपने राजनीतिक प्रभुत्व का दावा करने और अपने आर्थिक संसाधनों का उपयोग करने की इच्छा रखते थे। 17वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में,

स्वीडन के राजा चार्ल्स नवम (King Charles IX) के आदेश से सापमी में गिरजाघरों का निर्माण किया गया था, और सामी लोगों को स्वीडन के ईसाई कानून में शामिल होने के लिए मजबूर किया गया था।

हालाँकि, 17 वीं शताब्दी के उत्तरार्ध तक उन्हें चुपचाप निजी तौर पर सामी शमनवाद का अभ्यास करने की अनुमति दी गई थी, लेकिन उसके बाद स्वीडिश अधिकारियों ने उन्हें अपने धर्म को छोड़ने के लिए मजबूर करना शुरू कर दिया। उन्होंने सामी ढोल को जलाना शुरू किया, जोइक सांप्रदायिक गायन पर प्रतिबंध लगाया और उन्हें ईसाई मजहबी सिद्धांत के अधीन करने के लिए मजबूर कर दिया गया।



सामी ढोल

1687 का अर्जेप्लग ईशनिंदा परीक्षण (**Arjeplog Blasphemy case 1687**) में दो सामी, एरिक एस्किलसन और अमुंड थोरसन (**Erik Eskilsson and Amund Thorsson**) के खिलाफ अर्जेप्लग में हुआ था, जिन्हें 17 वीं शताब्दी के अंत में सामी लोगों के स्वीडिश ईसाईकरण के दौरान सामी शमनवाद के अनुयायी होने के लिए ब्लासफेमी का आरोपी बनाया गया था। उनका मामला उल्लेखनीय था और अक्सर सामी इतिहास में इसका उल्लेख किया जाता है।

इस अवधि के दौरान, सामी ने एक साथ दो धर्मों का व्यापक रूप से अभ्यास किया; उन्होंने घर पर सामी धर्म के कम से कम कुछ तत्वों को बनाए रखते हुए, स्वीडन के स्थानीय चर्च में हाई चर्च लूथरन पूजा में भाग लिया। एरिक एस्किल्सन, साथ ही थोरसन, नॉरबॉटेन (Norrbotten) में अधिक धनी सामी थे और इस तरह उन करों के कारण अधिक सुरक्षित महसूस करते थे जो वे अपने सामी होने की वजह से भुगतान करते थे। लूथरन धर्मोपदेश के दौरान, जब मंत्री ने सामी धर्म की निंदा की, एस्किल्सन और थोरसन ने टिप्पणी की कि उन्हें सामी धर्म के प्रति शत्रुता अजीब लगती है, और यह कि वे स्पष्ट रूप से अपने पूर्वजों के विश्वास को नहीं छोड़ेंगे। बाद में, ईसाई मंत्री ने कई लूथरन सामी की संगति में उनसे मुलाकात की। उसने बुतपरस्त वेदी को बर्बाद किया और हिंसा के उपयोग से सामी ढोल को जब्त कर लिया। एस्किल्सन और थोरसन ने उसका

पीछा किया और ड्रम को पुनः प्राप्त किया। मंत्री ने गुस्से में अपने कार्यों का बचाव किया और बोला कि क्या थोरसन के पिता को मूर्तिपूजक होने के लिए पश्चाताप हुआ था?? वह यह बोलना चाहता की थोरर्सन के पिता अगर ईसाई नहीं थे तो वह इस समय ईसाई नर्क में है। इस पर थोरसन ने उत्तर दिया: "यदि मेरे पिता नरक में हैं, तो मैं भी उनके समान ही पीड़ा सहने के लिए तैयार हूं।"

मंत्री ने दोनों पुरुषों को ब्लासफेमी के लिए अधिकारियों की निंदा की और मृत्युदंड की मांग की, क्योंकि उन्हें लगा कि सामी इलाके को तब तक ईसाईकृत नहीं किया जा सकेगा जब तक कि ऐसी "खरपतवार" का सफाया नहीं हो जाता। यह साफ़ दर्शाता है की ईसाई मजहब में एक निरपराध पगन (Pagan) होना एक खेत में उगी बेकार घास के समान तुलनायोग्य होता था और आज भी है।

7 फरवरी 1687 को, एस्किल्सन और थोरसन ने अर्जेप्लॉग में स्वीडन के कानून के तहत परीक्षण किया गया। आरोप ब्लासफेमी और उनके ईसाई मजहब के अलावा दूसरा मजहब को मानना, और स्वीडन के एक चर्च के पादरी का अपमान करना था। एरिक एस्किल्सन को लूथरन मंत्री का अपमान करने के आरोपों से मुक्त कर दिया गया था जब उसने खुलासा किया कि ये पादरी सामी लोगों को शराब बेच रहा था और इस घटना के दौरान एस्किल्सन नशे में था। सामी धर्म को त्यागने, लूथरनवाद में परिवर्तित होने और अपने ड्रम को आत्मसमर्पण करने के बाद उन्हें ब्लासफेमी के आरोपों से मुक्त कर दिया गया था। थोरसन के खिलाफ़ मामले के बारे में और कोई जानकारी नहीं है।

1665 और 1708 के बीच, ईशनिंदा के लिए सामी के बीच तीन पुष्ट मौत की सजा थी, जो सामी के खिलाफ सामान्य आरोप था जिन्होंने आधिकारिक तौर पर अपने धर्म को त्यागने से इनकार कर दिया था।

क्वीवे बारसेन ***(Quiwe Barsen)*** एक सामी शमन या ओझा था। वह उन 26 सामी लोगों में से एक था जिन्हें 17वीं शताब्दी में नॉर्वे में जादूगरी के इल्जाम के लिए मृत्युदंड दिया गया था। बारसेन नोआदी था और आरोया का रहने वाला था। मई 1627 में, उन्हें 1625 में नाविक नील्स जोंसन के ऊपर जादू के इस्तेमाल से हवा को काबू करने के आरोप में हस्वाग (Haswag) में परीक्षण पर रखा गया था।

परीक्षण के दौरान बारसेन ने बताया की उसने जॉनसन के कहने पर काम करने का दावा किया, जिसे हसवाग जाने के लिए समंदरी हवा की जरूरत थी, और बताया कि उसने हवा बनाने के लिए अपने पैरों को पानी में गीला कर दिया था।
बाद में, उसे जोंसन के एक मछुआरे की पत्नी पर इस चीज को दोहराने के लिए कहा गया, जो उसने एक सुअर को समुद्र में फेंक कर किया था। हालाँकि, उस समय, हवा एक तूफान में बढ़ गई जिससे नाव डूब गई और ईसाई पादरियों की बात सच निकली। बारसेन ने बताया कि उसे अक्सर

समंदरी हवाओ को बनाने के लिए काम पर रखा जाता था, जिससे नाविक लोग आसानी से समंदर में सफर कर सके। उन्होंने सामी ढोल के इस्तेमाल से जादू करने से इनकार किया, लेकिन स्वीकार किया कि उन्हें ऐसा करने का ज्ञान था।

11 मई 1627 को, क्वीवे बारसेन को जादू के इस्तेमाल से बनाई गई हवा से पांच लोगों को डूबने का दोषी ठहराया गया था, और जिन्दा जला कर मार डालने करने की सजा सुनाई गई थी।

इस प्रकार से 18वी सदी के अंत तक आते आते सामी लोगों ने अपने पितरों के धर्म को त्याग दिया और यह कहना शुरू कर दिया की वो लोग ईसाई है और सामी शमनवाद उनके पुरखों का संप्रदाय हुआ करता था।

क्रुसेड और नाइट टेंपलर **(Crusades and Knight templar)**

अगर कभी किसी को यह लगता है की जिहाद जैसे युद्ध जिसमे गैर मुस्लिमों से लड़ाई की जाती है ऐसे सिर्फ इस्लामी जगत में ही होते थे तो आपको क्रुसेड्स की लड़ाई पढ़ने की सख्त जरूरत है। आज के दौर में क्रुसेड्स की लड़ाई को अपने कंधे से झाड़ कर ईसाइयत अपने को शांति के मजहब की तरह पेश करती है लेकिन यह भाग आपको क्रुसेड्स के नाम पर की गई हिंसा का सच पता चलेगा।

इस सब की शुरुआत उस समय पर शुरू हुई थी जब अरबी और बीजान्टिन साम्राज्य में खूब झड़प चल रही थी। राशिदून खिलाफत अपने अरब के आस पास के ईसाई साम्राज्य पर कब्जे कर रही थी जिसमें लेवांट, मिस्र और जेरूसलम के इलाके पर किये गए कब्जे की बात हम पहले ही कर चुके है। साल 1000 तक आते आते बीजान्टिन साम्राज्य सेल्जुक तुर्को की बढ़ती शक्ति से घबरा उठे थे जिन्होंने सुन्नी इस्लाम को अपनाने के बाद इस्लाम की फ़ौज में बढ़ौतरी कर दी थी। यही नहीं बल्कि उन्होंने फातिमी खिलाफत में से जेरूसलम को भी छीन कर तुर्को के कब्जे में कर लिया था। 1071 में लड़ा गया मंजिकेरत (Manzikert) का युद्ध के बाद बीजान्टिन सम्राट अलेक्सियस प्रथम कोमनेनोस ने पोप अर्बन द्वितीय से सहायता की मांग की।पोप ने इसे एक अच्छा मौका जानकर सेल्जुक तुर्को के खिलाफ एक मजहब युद्ध या क्रूसेड की मांग की और सभी ईसाई लोगों को यह भी यकीन दिलाया कि इस कार्य के बदले में ईसाई ईश्वर उनके पापो को क्षमा कर देंगे और उन्हें स्वर्ग और अन्य सुविधाओं की प्राप्ति होगी। सभी ने क्लेरमोंट के आयोजित सभा में नारा लगाया दियुस वोल्ट (Deus vult) यानी की ईश्वर की यही इच्छा है और पूर्व और पश्चिम के गरीब और अमीर ईसाई इस तथाकथित “मजहबी युद्ध” में कूद पड़े।

238 D C. Munro

attractive. Men and women of all classes, even children, started on the crusade. Occasionally some were restrained by the wisdom of their clerical advisers.[1]

All who went on the crusade were to receive plenary indulgence or full remission of sins.[2] This is clear from the canon of the Council,[3] from the statement of Pope Eugene III.,[4] and from the letters of Urban to the princes of Flanders[5] and to the people of Bologna.[6] It was reported in various forms by the contemporaries. Flucher limits it to those who died on the expedition[7]; Robert applies it to all who went.[8] Baldric inserts a rather indefinite statement concerning it in Urban's address to the clergy.[9] Guibert does not mention it in his account of the speech. William applies it to all.[10] It is interesting to compare with these brief statements the very careful exposition of William of Tyre.[11]

हालांकि अगर हम सही से आकलन करे तो ईसाई गरीब लोगों की ये अंधी भीड़ सिर्फ अपनी गरीबी से निजात पाकर एक नकली स्वर्ग के लालच में कूदे थे। सालों से अपनी धन दौलत को ईसाइयत के नाम पर लुटा कर इन लोगों ने सिर्फ अन्य लोगों के ईसाईकरण और ईसाई पादरी पोपेस की ही जेबे भरी थी।
ईसाई अंधी भीड़ द्वारा येरूशलम की तरफ को कूच किया गया जिसमे कई अलग अलग नेता अलग अलग मोर्चो के नेता बने हुए थे।
ऐसे ही एक मोर्चे का नेता काउंट एमिचो (Count emicho) था जिसने राइनलैंड (Rhineland) समाज के ईसाई का नेतृत्व करना था। इन जर्मनी निवासी लोगों ने भी पोप के आवाहन का समर्थन किया लेकिन इन लोगों का मानना था कि जितने मुस्लिम उनके शत्रु है, यहूदी भी उनके मित्र नही है।
इस वजह से ईसाई भीड़ के लोगों ने राइनलैंड के आस पास के कई यहूदी लोगों से पैसे की मांग करना शुरू किया और मांग पूरी न होने पर उन्हें प्रताड़ित करना शुरू कर दिया।
काउंट एमिचो के नेतृत्व में गया मोर्चा मई 1096 में worms नामक स्थान पर 800 यहूदी लोगो की हत्या कर देता है। हालांकि इसमें इक्के दुक्के भले दिल के ईसाई बिशप ने उन्हें बचाने की कोशिश भी की लेकिन उनकी सारी कोशिश धरी की धरी रह गई। मैंज (mainz) नामक स्थान पर भी 1100 के करीब करीब यहूदी लोगो को मारा गया।

इसके बाद 4 बड़ी ईसाई मोर्चे बायजेंटिन सम्राट की निगहबानी में सेल्जुक तुर्की पर चढ़ाई करते है। हालांकि इस मोर्चे में भी बहुत उतार चढ़ाव देखने को मिलते है जिसमे कई जगह पर इन क्रूसेडर द्वारा अपने ही ईसाई भाईयो की हत्याएं और लूटपाट के किस्से भी मिलते है जिसमे अक्टूबर 1097 में किया गया एंटीक (Antioch) नाम के शहर की घेराबंदी मशहूर रही थी।

क्रूसेडर 7 जून 1099 को यरूशलेम पर पहुंच गए थे और फिर जेरूसलम पर घेराबंदी की गई और करीब करीब 6 दिन की घेराबंदी के बाद जेरूसलम का किला टूट गया और क्रूसेडर्स ने उसके बाद येरूशलम को मुस्लिमों और यहूदियों के खून से नहला दिया। उन्होंने कत्लेआम करना शुरू किया और ये काफी देर तक चलता रहा।

जेरूसलम पर कब्जे के बाद बहुत से क्रूसेडर्स वापस अपने घर को चले गए क्योंकि उनके लिए यह लड़ाई एक तीर्थयात्रा जैसी ही थी। एक बार ईसाई लोगों ने यरुशलम को कब्जे में ले लिया तो उसके बाद कई तीर्थ यात्री उस जगह के दर्शन के लिए दूर दूर से आने लगे जो की यीशु के जन्म स्थान के रूप में जानी जाती थी। लेकिन इन तीर्थयात्रियों को अभी भी उन लोकल डाकुओं या लुटेरों से डर लगा रहता था जो की उन्हें लूट लेते थे। इसीलिए कुछ फ्रेंच नाइट्स ने जेरूसलम के राजा बाल्डविन द्वितीय से दरख्वास्त की कि वो एक फ़ौज बनाने की उन्हें आज्ञा दे जो की इन तीर्थयात्रियों की रक्षा किया करेगी और जनवरी 1120 में राजा ने उन्हें आज्ञा देकर उनका मुख्यालय टेम्पल माउंट पर बनाने की सुविधा दे दी। क्योंकि यह योद्धा लोग सुलैमान के पुराने मंदिर के ऊपर था इसीलिए इस फ़ौज ने अपना नाम ईसा और सुलैमान के गरीब सिपाही (Poor Fellow-Soldiers of Christ and of the Temple of Solomon (Latin: Pauperes commilitones Christi Templique Salomonici)) या टेम्पलेर नाइट्स (Templar Knights) रख लिया। हालाँकि समय के साथ साथ ये फ़ौज न तो गरीब रही और न ही यह सिर्फ जेरुसलम तक ही सीमित रही। जल्द ही टेम्पलेर नाइट्स को पोप की तरफ से भारी दानराशि मिलनी शुरू हुई, जिसमे 1135 की कौंसिल ऑफ़ पिसा में पोप इनोसेंट द्वितीय द्वारा जारी किया गया था। 1139 में पोप इनोसेंट द्वितीय ने टेम्पलेर नाइट्स को टैक्स में छूट दे दी, उन्हें ईसाई राज्यों में घूमने की अनुमति दी गयी और उन्हें पोप के अलावा दूसरे किसी के भी आधिपत्य से आजाद कर दिया गया।
टेम्पलेर नाइट्स ने ईसाइयत की काफी सेवा भी की जैसे की सलाहुद्दीन की फ़ौज के खिलाफ लड़ा गया मोंतीसगार्ड का युद्ध (Battle of Montisgard) जिसमें उन्होंने कम संख्या में भी जीत हासिल की। नाइट्स टेम्प्लर ने बहुत कम समय में ही धन, शक्ति और जमीन इकट्ठी कर ली थी और उनकी तारीफ़ में बड़ी कवितायेँ गाई जाने लगी।
लेकिन साल 1300 तक आते आते, नाइट्स टेम्पलरटेम्पलर की शक्तियों से घबराकर फ्रांस के राजा फिलिप चतुर्थ और अन्य लोगों ने नाइट्स टेम्पलर को फंसा कर नष्ट करने की कोशिश की शुरुआत करी। इसके लिए उसने पोप क्लेमेंट को नाईट टेम्पलर के खिलाफ भड़काया और फिर 22 नवंबर 1307 को पोप क्लेमेंट ने एक पेपल बुल्ल[1] जारी किया जिसमे सारे यूरोप के सभी राजाओ को नाईट टेम्पलर के कैद करने और उनपर अभियोग चलाने के आदेश थे। यह आदेश इंग्लैंड, इबेरिअ, मिस्र और सायप्रस में गया और फल स्वरुप अनेको नाइट्स टेम्पलर के सदस्यों को पकड़ा जाने लगा। बहुत से नाईट टेम्पलर के सदस्यों पर जादू टोना, बूत परस्ती, ईसा मसीह के सलीब पर थूकने और अनादर करने, समलैंगिक सम्बन्ध बनाने और बेफोमेट (Baphomet) नाम के शैतान की पूजा करने का आरोप लगाए गए। हालाँकि बाद के समय के सभी दस्तावेज और सबूत इस बात की पुष्टि करते है की पकडे जाने के बाद नाइट्स टेम्पलर्स पर बहुत

---

[1] https://en.wikipedia.org/wiki/Pastoralis_praeeminentiae

अत्याचार और मार पिट की गयी थी, जिसके वजह से ही इन टेम्पलर नाईट ने ऐसे काम करने के लिए सहमति जताई थी। हालाँकि यह झूठे तौर पर मान लेने के बाद भी इन टेम्पलर्स की जान बक्शी नहीं गयी और कई टेम्पलर्स को जिन्दा आग में जला जला कर मार डाला गया। 12, मई ,1310 को 54 टेम्पलर्स को जिन्दा जला कर मारा गया।

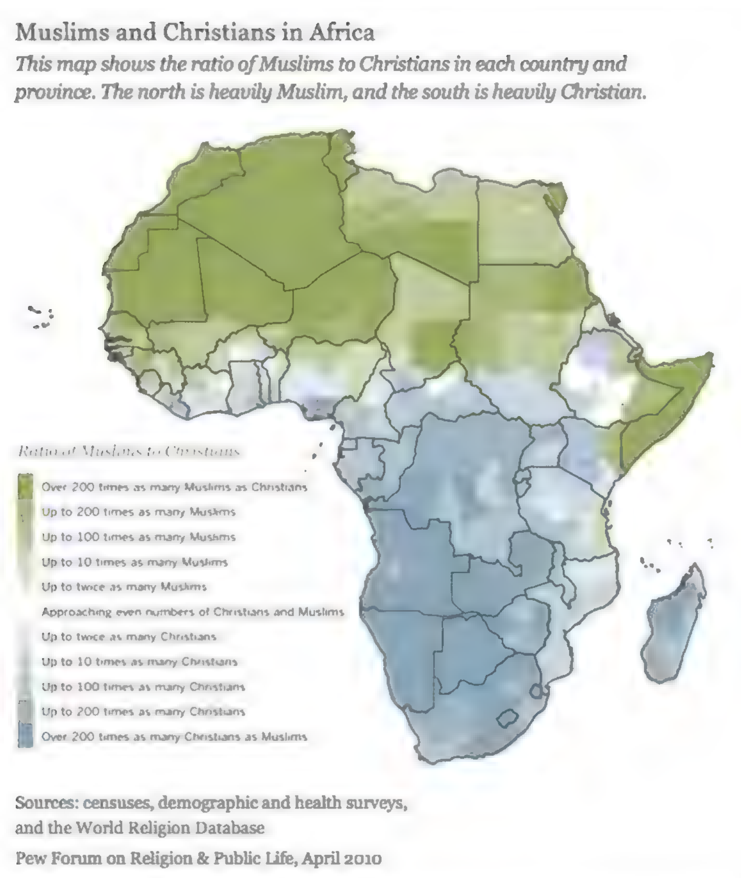


टेम्पलर्स के नेताओं के लिए, बुजुर्ग ग्रैंड मास्टर जैक्स डी मोले (Jacques De Molay), जिन्होंने यातना के तहत मजबूरी में कबूल किया था, उन्होंने बाद में अपना कबूलनामा वापस ले लिया था। नॉरमैंडी के प्रीसेप्टर (Preceptor) ज्योफ्रोई डी चर्नी (Geoffroi de Charney) ने भी अपने कबूलनामे को वापस ले लिया था और अपनी बेगुनाही पर जोर दिया। लेकिन फिर भी दोनों पुरुषों को विधर्मी होने का दोषी घोषित किया गया और 18 मार्च 1314 को पेरिस में सूली पर जिंदा जलाने की सजा सुनाई गई। किंवदंती के अनुसार, उन्होंने अपने हाथ प्रार्थना की मुद्रा में रखे थे और उन्होंने आग की लपटों से मरते हुए पुकारा था कि पोप क्लेमेंट और किंग फिलिप दोनों जल्द ही भगवान के सामने उनसे मिलेंगे। चर्मपत्र पर उनके वास्तविक शब्द इस प्रकार दर्ज किए गए थे: "Dieu sait qui a tort et a péché. Il va bientôt arriver malheur à ceux qui nous ont condamnés à mort" ("भगवान जानता है कि कौन गलत है और किसने पाप किया है। जल्द ही एक आपदा आएगी जो उन लोगों के साथ होगी जिन्होंने हमें मौत की सजा दी है")।
बड़ी मजेदार बात है की एक महीने बाद ही फतवा देने वाले पोप क्लेमेंट की मृत्यु हो गई थी, और राजा फिलिप की उसी वर्ष के भीतर शिकार करते हुए मृत्यु हो गई थी।
ईसाई जगत में इस प्रकार के क्रुसडेस कई बार हुए जिनमे ईसाई मुस्लिम और यहूदी लोग अपने प्राणो को गवाते रहे।

इस्लाम और ईसाइयत द्वारा अफ्रीकी सम्प्रदायों का दमन

इस्लाम और ईसाइयत के धर्मान्तरण के खेल में अगर किसी देश का सबसे ज्यादा नुकसान हुआ है और बल्कि कहे कि आज तक हो रहा है तो वह है अफ्रीका का महाद्वीप जिधर का असली

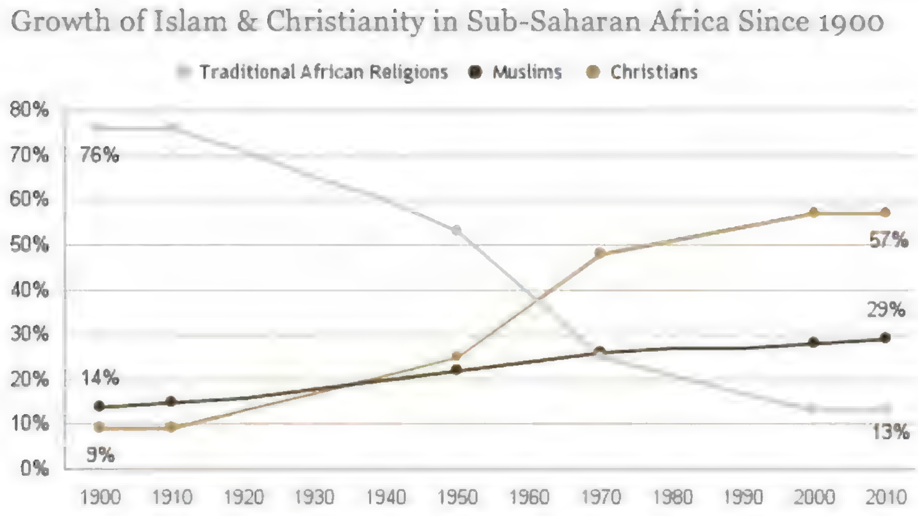
सम्प्रदाय और आस्था जो की अब न सिर्फ बुरी तरह से बदनाम किया जा चुका है बल्कि अपना वजूद ही खो चुके है।



अफ्रीकन महाद्वीप के लोग आदिकाल से ही गुलाम बना लिए जाते थे और गुलामो के बाजार में अकारण ही बेचे जाते थे। यह प्रथा मिस्र, मेसोपोटामिया, फारसी राज तक अविरल चलती, लेकिन बहुत ही हैरानी की बात है की खुद को परम दयालु ईश्वर के सेवक बताने वाले अब्राहमिक मत के लोगों ने भी इस कुप्रथा को बंद करने की कोई पहल नही की। ईसा को छोड़कर सभी अब्राहमिक पैगंबरों के पास गुलाम थे और मुहम्मद के पास भी गुलाम लौंडो और लौंडियों की कोई कमी नही थी और खुद को तथाकथित ईसाई कहने वाले रोमन साम्रज्य ने भी इसमे कोई दिलचस्पी नही दिखाई।

हालांकि शुरुआती समय में ईसायत अफ्रीका में बहुत दूर तक न जाकर सिर्फ उन्ही उत्तरी अफ्रीकी-मिस्री इलाको तक अपनी पैठ बना सकी थी जिधर रोमन साम्राज्य की जड़े गई थी। लेकिन राशिदुन खिलाफत के दिनों में ही अफ्रीकन कबीलो पर इस्लाम की परछाई पड़ चुकी थी जिसमें पूरा उत्तरी अफ्रीका के इलाके में इस्लाम छा गया और उनसे जिज्या लिया गया। हालांकि ईसाई प्रभावित नूबिया का राज्य जो की सूडान का भाग था उसने शानदार तरीके से राशिदून खिलाफत का विरोध किया जिस वजह से अरबी लोगों एक संधि करके नूबिया को छोड़ दिया। लेकिन बाद के कई सालो बाद उत्तरी अफ्रीकी नक्शे में से ईसाई लोग गायब हो गए।

रोमन ईसाई और अरबी मुसलमान ने अफ्रीका के दक्षिणी भाग तक जाने के ज्यादा प्रयास नहीं किए क्योंकि दक्षिण के भागों के बीच में सहारा रेगिस्तान पड़ता था इसीलिए अफ़्रीकी भूभाग का एक बड़ा हिस्सा, इन मजहबों की पहुंच से काफी समय तक दूर रहा था।



Source: World Religion Database. Historical data draw on government records, historical atlases and reports of religious organizations at the time. Later figures draw on U.N. population estimates, surveys and censuses.

Pew Forum on Religion & Public Life, April 2010

हालांकि अफ्रीकी पारंपरिक सम्प्रदायो का पतन होना तब ज्यादा शुरु हुआ जब 19वी सदी में उपनिवेशिक काल मे अनेको अनेक देश (जिनमे इंग्लैंड, फ्रांस, स्पेन , पुर्तगाल इत्यादि थे) अफ्रीका के खनीज भंडार और लोगों को गुलाम बनाने के लालच में अफ्रीका में घुस आए। उन्होंने जमकर अफ्रीकी लोगों का शोषण किया और उन्हें ईसाईयत के नाम पर मिठे सपने दिखाए। उन्हें यह बताया गया कि अगर वह ईसाइयों के मजहब अपना लेंगे तो वह शैतान और नरक की आग से बच जायेंगे।

ऐसे ही एक विवरण में जब अफ्रीकी ज़ुलु संप्रदाय के नेता भम्बाथा कमान्सिनज़ा (Bhambatha kaMancinza) से ऐसी बात कही गयी थी कि अगर अफ्रीकी लोग ईसाइयों के ईश्वर के सेवको को अपनी जमीने नही दोगे तो वह ईसाई नर्क की आग में जलेंगे। इसके जवाब में भम्बाथा ने कहा था कि अफ्रीका में तो हम लोग आग तक खा जाते है।

नाइजर इलाके में अंग्रेजी ईसाईयत के लोगो ने स्थानीय अफ्रीकी लोगों के पूजाघरों को ध्वस्त करना चालू किया और उनकी पवित्र माने जाने वाली मॉनिटर छिपकलियों का भी कत्लेआम किया ताकि वह उस इलाकों से चले जाएं।

अफ्रीकी महाद्वीप के शोषण की बात करते हुए ज़ोमो केन्याटा ने कहा था कि जब बाहरी लोग अफ्रीका में आये थे तो उनके हाथ मे बाइबिल थी और हमारे पर जमीनें और उन्होंने कहा था कि आओ मिल कर प्रार्थना करे, जब हमनें प्रार्थना करने के लिए आंख बंद करके खोली तो हमारे हाथ मे किताब थी और वो जमीनों के मालिक बन गए थे।

अफ्रीकन पारंपरिक संप्रदाय को भी अमरीकी, अंग्रेजी और बाकी प्रान्तों के उपनिवेशिक लोगों ने शैतानी रिवाज बना दिया था जिसका साफ साफ एक बहुत बड़ा कारण गुलाम हुए अफ्रीकी लोगों की चेतना में उत्साह भरते उनके अपने लोगों और रिवाजों का होना ही था। गोरे उपनिवेशिक लोग के अत्याचार के खिलाफ काले लोगों के अपने संप्रदाय और उपचार करने वाले साधु लोग ही अपने लोगों में उत्साह भरते थे जिससे उन्हें लगता था की वह अताताई गोरे उपनिवेशिक लोगो को उखाड़ कर आजाद हो सकते है।
इसके उदाहरण हम को वूडू चिकित्सकों द्वारा छेड़े गए दास विद्रोह में देखते है जो की हैती क्रांति (1791-1804) है, जो 14 अगस्त, 1791 से शुरू हुआ था। दुट्टी बोकमैन(Dutty bockman), एक प्रमुख गुलाम अफ्रीकी नेता और वोडू पुजारी ने बोइस काइमन(Bois caiman) में एक गुप्त समारोह का नेतृत्व किया, जिसमें अफ्रीकी दासों को फ्रेंच उपनिवेशवाद को उखाड़ फेंकने के लिए रैली की गई। इस क्रांति से हैती प्रथम आजाद अफ्रीकी देश की तरह उभर कर सामने आया जिसने वूडू के सकारात्मक प्रभाव को अफ्रीकी लोगों को दिखाया। लेकिन हार से खिन्न आज के ईसाई जैसे पैट रॉबर्टसन इसे हैती लोगों द्वारा शैतान के साथ किया गया समझौता बताते है।

दूसरे देशों में रहने वाले अफ्रीकियों ने भी अफ्रीकी आध्यात्मिकता का उपयोग कई उपनिवेश विरोधी संघर्षों को प्रेरित करने के लिए किया, जिससे उन्हें श्वेत उत्पीड़कों ने तिरस्कृत कर दिया था। रोडेशिया (वर्तमान जिम्बाब्वे) में पहले चिमुरेंगा विद्रोह (1896-1897) में, पैतृक भावना माध्यम म्बुया नेहंडा चार्वे न्याकासिकाना ने 1894 में एक शोषक "झोपड़ी कर" की शुरुआत के बाद अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह का सह-नेतृत्व किया। इसका एक और उदाहरण केन्या में मऊ माउ विद्रोह (1952-1960) सफेद-उपनिवेशवादी यूरोपीय बसने वालों के खिलाफ एक अफ्रीकी आध्यात्मिकता-प्रेरित विद्रोह था। मऊ मऊ विद्रोह के सदस्यों ने किकुयू परंपराओं के अनुसार खून की शपथ ली और उपनिवेशवादियों को बाहर निकालने या मौत का सामना करने की शपथ ली।

इन सभी कारणों की वजह से ही उपनिवेशिक और मजहबी मानसिकता ने वूडू और अफ्रीकी रिवाजों को बदनाम करने की साजिश शुरू की।

पहले तो वूडू की परंपरा को झूठे जादू मन्त्र की कहानियो के जरिये बदनाम किया गया और अफ्रीकी लोगों के सम्प्रदाय को जादूगरी का इल्जाम लगा कर खूब बदनाम किया गया। इसमें पूरा हाथ बटाया है nollywood यानी नाइजीरिया फिल्मों और हॉलीवुड की कहानियां ने जिसमे वूडू परंपरा को शैतानी बताया गया और वूडू रिवाजों को सिर्फ और सिर्फ बुरा बताया गया है।

इन फिल्मों में जीसस क्राइस्ट को अच्छा और बुराई का नाशक और वूडू करने वाले पुजारिओं को शैतान से जुड़े होने के इल्जाम और हमेशा बुरा दिखाया जाता है। इन सभी फिल्मों की कहानी एक जैसी ही होती है जिसमे एक जलनखोर रिश्तेदार एक वूडू ओझा की मदद से अपने रिश्तेदारों का बुरा करती है और आखिर में एक ईसाई पादरी आकर सब कुछ ठीक कर देता है।



वूडू को काले जादू और तंत्र मंत्र से जोड़कर इसके उपयोग करने वालों को दूसरो का बुरा करते ही फिल्मों में चित्रांकन किया गया जिनका साफ़ उदाहरण डिज्नी की फिल्म प्रिंसेस एंड फ्रॉग, अमेरिकन हॉरर स्टोरी और अनेको अनेको हॉलीवुड फिल्मे जिनमे वूडू की परंपरा को बदनाम करने में कोई कसर नहीं छोड़ी गयी। डिस्नी की एनिमेटेड पिक्चर प्रिंसेस एंड फ्रॉग में वूडू को काले जादू और बुराई के प्रतीक और इसके ओझा को विलन की तरह पेश किया गया।

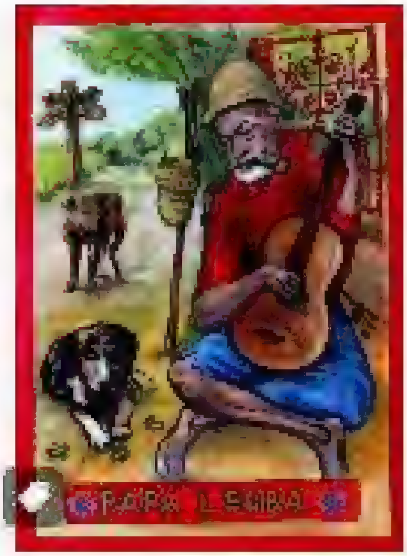


अमेरिकन हॉरर स्टोरी नाम के अमेरिकन वेब सीरीज के सीजन 3 में पापा लेगबा नाम के एक वूडू आयोवा (देवता) को शैतान जैसा वीभत्स रूप में दिखाया गया है जबकि पापा लेगबा बच्चो के साथ घूमने वाला आदर्श बुजुर्ग देवता होता था जो अक्सर कुत्तों के साथ दिखाई देते है।

Fake



Real



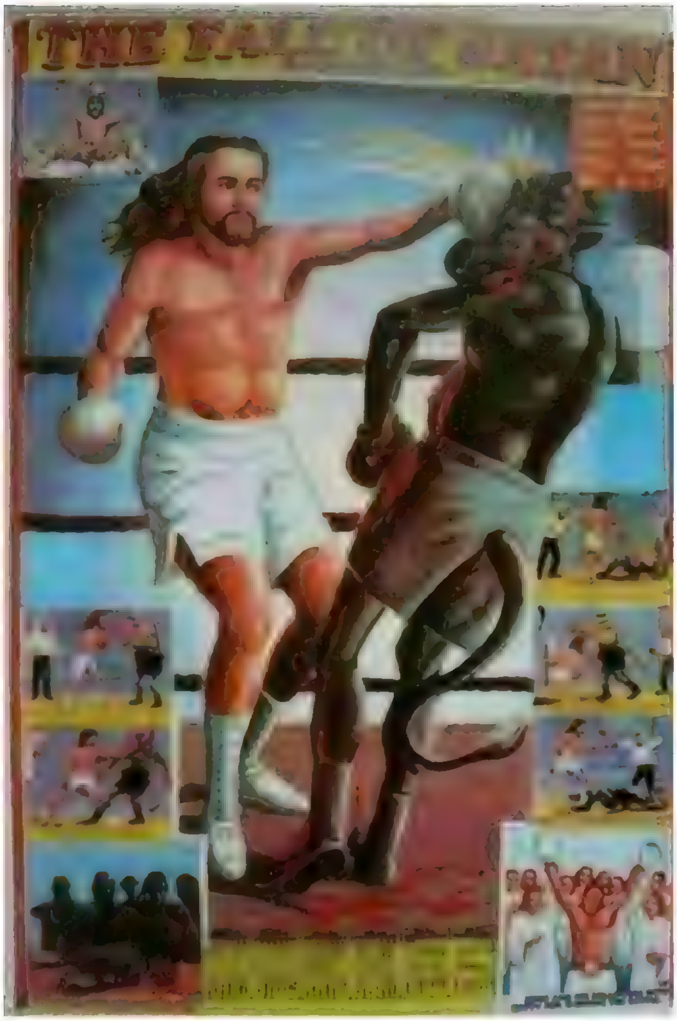
वूडू संप्रदाय के पापा लेगबा का चित्रांकन

आप अगर गहराई से वूडू की परंपरा के बारे में पढ़ेंगे तो उसमें शैतान जैसे किसी चरित्र के बारे में कुछ भी नही है।
वूडू के देवी देवता सीधे अफ्रीकी भगवान से शक्ति प्राप्त करते है, न की शैतान नाम के किसी चरित्र से।

इसके जिन देवी देवता जैसे की वूडू अदेती, वूदू सकपाता या एनुकपेप (Vodu Adeti, Vodu Sakapata, Enukpepe, etc) पर यह आरोप लगाया जाता है कि वह बुरे काम करते है, असल में वह अच्छे काम करते भी दिखाई देते है।

वूडू को इसके लोग अस्त्र की तरह मानते है जिसका काम रक्षा या विनाश दोनों होते है और यह इसके इस्तेमाल करने वाले पर निर्भर करता है की वह कौन सा कार्य इससे इस्तेमाल में लेगा, जैसे की आग की मदद से खाना बनता है लेकिन घर भी जल सकता है।

आप एक चित्र निचे देख सकते है जिसमे जीसस को शैतान के साथ मुक्केबाजी करते एक कैलेंडर का चित्र पश्चिमी अफ्रीका में स्पष्ट देखा जा सकता है, जिसमें शैतान एक अश्वेत व्यक्ति जैसा दिखाई देता है, उसके होंठ मोटे और शरीर बलिष्ट है जो की स्पष्ट तौर से अफ्रीकी पुरुष की भद्दी नकल है।

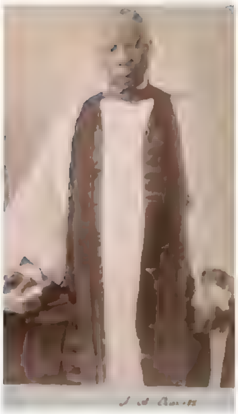


A picture of a White Jesus defeating a dark-skinned Satan. Such depictions, including the iconography in this calendar photo, are very common in contemporary West Africa.

नाइजीरिया के योरुबा जनजाति के लोगों के एक देवता ईशु एलेगबारा (Eshu Alegbara) को भी एक अफ्रीकी बिशप सैमुअल क्राउथर (Samuel Crowther) द्वारा बाइबल के योरुबा भाषा में अनुवाद के दौरान शैतान के ही समरूप बना दिया गया था, जबकि ईशु एलेगबारा बुराई का देवता नहीं था। ईशु को देवताओं के संदेशवाहक, मुसाफिरों, चौराहों का देवता के रूप के पूजा जाता था। वह मानव और आत्मा लोक के बीच में एक मध्यम की तरह माने जाते थे। लेकिन क्राउथर के इस छल में फंसे हुए आज भी कई योरुबा ईसाई आज भी ईशु और बाकी देवताओं को शैतान मानते है।

This is how Crowther translated Eshu in the Yoruba Bible:

> *Rev. 20:10*
> *And **the devil** that deceived them was cast into the lake of fire and brimstone, where the beast and the false prophet are, and shall be tormented day and night forever and ever (182).*
> *Ifihan 20:10*
> *A si wo **Esu** ti o tan won je losinu adagun ina ati sulfuru, nibiti eranko ati woli eke ni gbe wa, a o si ma da won loro t'osan-t'oru lai ati lailai (1062–63)*



Same, the, *adj.* **nah.**
Sand, *s.* **yiarin.**
Sandal, *s.* **batta.**
Sap, *s.* **oje.**
Satan, *s.* **Eshu, Bara, Ellegbara.**
Satisfy, *v.* **teh** *and* **lorrong, tori-ojuh.**
Sauce, *s.* **obbeh.**
Saucepan, *s.* **ikoko-obbeh.**

Samuel Ajayi Crowther (left), an Oxford-educated Nigerian evangelist who translated the Bible from English into Yoruba

क्राउथर का यह छल गूगल में सर्च करते समय भी दिखाई देता था जब पहले लोग ईशु एलेगबारा को ढूंढा करते थे तो वहां पर शैतान (satan) शब्द मिला करता था। साल 2019 में एक नाइजीरियन भाषाकार और लेखक कोला ट्यूबोसन(Kola tuboson) जो की गूगल में ही काम करते थे, उन्होंने इसपर आपत्ति जताई और इसे हटवाने के लिए काम किया।

डार्क एज एक ऐसा टर्म था जो रोमन सम्राज्य के अंत के बाद से लेकर पुनर्जागरण काल तक के समय को समेटता है। इस काल में यूरोप पर एक बदहवासी, और भय संशय का राज रहता था। गॉथिक, जर्मनिक, हून, नॉर्स कबीलों के हमलों और अब्राहमिक मजहबों के बीच मे चक्की में दाने की तरह पिस्ते हुए यूरोपीयन समाज अनिश्चतता में डूब चुका था।

इस प्रकार के यूरोपियन समाज मे अंधविश्वास और मजहबी उन्माद ने ऐसे मोड़ लिए जिससे कई ग़ैर मज़हबी लोगों पर इल्जाम लगा कर उन्हें जादूगरी या चुड़ैल के आरोप के अंतर्गत सजा दी

जाने लगी। हालांकि यह सभी आरोप बेबुनियाद और अंधविश्वास के ही चलते किए गए थे जिनका मकसद नए नए कन्वर्ट हुए लोगों को परखना ही होता था। जो लोग अपने पुराने देवी देवताओ की पूजा करते मिलते थे या उनके पुजारी होते थे, उन्हें यातना देने के लिए ही ऐसे प्रबंध किये जाते थे, जिन्हें इक्विशन (Inquisiton) कहते थे…
पोप इनोसेंट चतुर्थ (Pope Innocent IV) ने 15 मई 1252 में एक पैपल बुल (ईसाई फतवा या आदेश) एड एक्सटिरपांडा (Ad Extirpanda) जारी किया जिसमे हेरेटिकस (Heretics) या विधार्मियो के ऊपर इनक्विजन या मुकद्दमा चलाने के लिए आदेश थे जिसमे साफ़ तौर पर गैर ईसाई लोगों पर जुर्माना लगाने, उनकी जमीन छीनने और ज्यादा होने पर उनके प्राण लेने के भी आंशिक आदेश थे।

ईसाइयत के द्वारा कारीबाई टापू के आदिवासियों का दमन

साल 1492 में, स्पेन के कास्तिल्ले (Castille) की रानी इसाबेला और उसके पति अरगोर्न(Aragorn) राज्य का फर्डीनांड (Ferdinand) ने स्पेन के मुस्लिम इलाकों को जीतकर फिर से उसे इसाईकृत कर लिया था। इन्होने ने ही स्पेन में से उन यहूदियों के निष्कासन को करवा दिया था जिन्होंने भी ईसाई होने से मना कर दिया था।
क्यूंकि इस्लाम के उदय होने से यूरोपीय शक्तियों को भारत और पूर्व के देशो से जोड़ने वाले जमीनी रास्ते लगभग लगभग बंद से हो चुके थे और अगर खुले भी थे तो उन्हें भारी भरकम टैक्स देने पड़ते थे जिस वजह से यूरोपीय लोग बहुत समय से जल रास्तों की खोज कर रहे थे जो की उन्हें पूर्वी देशों और खासकर भारत से जोड़ देते। इसी रास्ते की खोज में क्रिस्टोफर कोलंबस नाम का एक जहाजी स्पेन से पश्चिम दिशा की ओर अपने जहाज को ले गया क्यूंकि उसे लगा की ऐसे करके वह पूर्वी देशों से मिल जायेगा लेकिन जब करीबियन टापू पर सन 12 अक्टूबर 1492 के आसपास पहुंचा तो पहली बार अमेरिका और उसके आस पास के टापूओं की खोज होने से यूरोपीय देशों को एक अनजान महाद्वीप के बारे में पता चला।
स्पेन के महाराज और महारानी ने जल्द ही इन जगहों को कब्जे में लेने के लिए अपने कुछ कंक्विस्टेडर या सिपाही लोगों को वापस इन टापू पर भेजा और साथ ही साथ इसके लिए पोप से आज्ञापत्र भी प्राप्त कर लिया जिसमे अनजान द्वीप वासियों पर कब्जे करके उन्हे लूटने और ईसाई करने का आदेश था।

जब स्पेनिश लोग वापस लौटकर इस जगह पर आये तो उन्होंने करीबीएन टापू के शांतिप्रिय टैनो (Taino) लोगों अपना दास बनाकर उनसे जबरदस्ती गुलामी और खदान में सोने और बहुमूल्य रत्नो की खुदाई शुरू करवाई।
क्योंकि टैनो लोग में से ज्यादातर हिंसात्मक नही थे इसीलिए वह बहुत जल्दी ही स्पेनिश हमलावरों के जाल में फंस गए।
टैनो लोगों के ज्यादातर आबादी में से एक तिहाई तो 1519 तक यूरोपीय लोगों द्वारा लाये गई बिमारियों और महामारियों ने ही कर दिया था और बाकी थोड़े जिन्होंने बगावत किया उन्हें भी मौत के घाट उतार दिया गया।



इसमें एनरिकिलो और हतय (Enriquillo and Hatuey) बड़े प्रमुख बागी टैनो नेता रहे थे। 1511 में, डिएगो वेलाज़क्वेज़ ने हिस्पानियोला से विजय प्राप्त करने के लिए जो अब क्यूबा के द्वीप के रूप में जाना जाता है और क्यूबा के स्वदेशी लोगों, तैनो को अधीन कर लिया है, जिसे पहले क्रिस्टोफर कोलंबस द्वारा ढूंढ लिया गया था। हालांकि, वेलाज़क्वेज़ से पहले हतय , जो चार सौ लोगों के दल के साथ अपनी पानी वाली डोंगी (Canoe) में हिस्पनियोला से भाग गए थे और उन्होंने पूर्वी क्यूबा के कुछ मूल निवासियों को चेतावनी दी थी की उनपर विदेशी स्पेनिश लोगो ने हमला कर दिया है।

बार्टोलोमे डी लास कसास,जो की एक सहृदय ईसाई पादरी ने उन्होंने अपनी पुस्तक इंडीज के उत्पीड़न का छोटा लेख में हतय को इस निम्नलिखित भाषण का श्रेय दिया जाता है जिसे ईसाई धर्म के खिलाफ संबोधित किया गया था। उसने काओबाना (Caobana) के टैनो लोगों को सोने और गहनों की एक टोकरी दिखाते हुए कहा था :

यह है वो खुदा जिसकी स्पेनवासी पूजा करते हैं। इन्हीं के लिये वे लड़ते और हम पर घात करते हैं; इनके लिए वे हमें सताते हैं और इसलिए हमें उन्हें समुद्र में फेंकना पड़ता है ... वे हमसे कहते हैं, वो अत्याचारी, शांति और समानता के खुदा की इबादत करते हैं, और फिर भी वे हमारी भूमि को हड़प लेते हैं और हमें अपना दास बना लेते हैं। वे हमें एक अमर आत्मा *(holy spirit)* और उनके शाश्वत पुरस्कार और दंड के बारे में बताते हैं, और फिर भी वे हमारा सामान लूटते हैं, हमारी महिलाओं पर गन्दी निगाह डालते हैं, हमारी बेटियों के मान से खेलते हैं। वीरता में हमारी बराबरी करने में असमर्थ, ये कायर अपने आप को लोहे के कवच से ढँक लेते हैं जिसे हमारे हथियार नहीं तोड़ सकते...

क्यूबा में टैनो प्रमुखों ने हतय के संदेश का जवाब नहीं दिया, और कुछ लोग उसके साथ लड़ने के लिए शामिल हुए। हतय ने स्पैनिश के खिलाफ गुरिल्ला रणनीति का सहारा लिया, और उन्हें एक समय के लिए रोकने में सफल हुआ था। आखिरकार, जानकारी के लिए शिकारी कुत्ते और दूसरे मूल निवासियों को यातनाये देकर , स्पैनिश लोगों ने उसे पकड़ने में सफलता प्राप्त की। 2 फरवरी 1512 को, आज के शहर बयामो के पास, यारा में एक सलीब से बांध कर हतय को जिंदा जला दिया गया था।

उसके जलने से पहले, एक पादरी ने हतय से पूछा था कि क्या वह मरते समय यीशु को स्वीकार करेगा और स्वर्ग जाना चाहेगा?? लास कसास (Bartolomé de las Casas) ने हतय की प्रतिक्रिया को याद करते हुए लिखा है:

[हतय], ने थोड़ा सोचकर, ईसाई व्यक्ति से पूछा कि क्या सभी स्पेनवासी स्वर्ग गए है? पादरी ने हां में जवाब दिया... हतय ने फिर बिना कुछ सोचे समझे कहा कि वह ऐसे स्वर्ग में नहीं जाना चाहता जिधर ऐसे क्रूर और अत्याचारी लोग होते हो, इसके बजाये तो वह ईसाई नर्क में चले जाना ज्यादा बेहतर समझता है.....

ईसाइयत के द्वारा माया-एज़्टेक के आदिवासियों का दमन

कारीबाई टापू के बाद स्पेनिश अतिक्रमण आज के मैक्सिको वाली जगह पर हुए जिनपर किसी समय में एम्टेक्स सभ्यता फली फूली थी। हरमन कोर्टेज (Herman Cortez) नाम का एक स्पैनिश सिपाही या कॉनकिस्टाडोर जो की स्पेन से आयी एक टुकड़ी के साथ वेस्ट इंडीज के पास पहुंचा था। उसने 1518 में क्यूबा के गवर्नर वेलाक्वेज से अनुमति मांगी की उसे मेक्सिको के आदिवासीओ पर गज़वा करने दिया जाये। हेर्नान कोर्टेज अपने लोगों के साथ यूकाटन इलाके के तटों पर उतरे और उनका सामना मायन (Mayan) लोगों की यूकाटन बस्ती के साथ हुआ और उसने आदिवासी कबीले के लोगों की हत्या करना और उनके देवी देवताओं की मूर्तिओं को तोडना और सलीब के निशान को वहां लगाना शुरू कर दिया। स्पैनिश लोगों को इन आदिवासियों के द्वारा हुए विरोध का भी सामना करना पड़ा था लेकिन स्पैनिश लोगों के आधुनिक अस्त्र शस्त्र, घोड़े और लोहे के कवच ढाल का मुकाबला आदिवासियों के तीर कमान और भाले ज्यादा देर नहीं

कर सके…कई मामलों में तो घोड़े देखकर आदिवासी डर जाते थे और डर के मारे घोड़ों के पैरों तले कुचले जाते थे। पकड़े गए आदिवासियों ने इन स्पैनिश आक्रमणकारियों को अनाज और औरतें देकर अपनी जान बचाई जिसमे से मलिनचे (Malinche) नाम की आदिवासी महिला भी थी, जो की बाद में कोर्टेज की पत्नी बनी। यह महिला मयान और एज़्टेक भाषाओ की जानकार थी और इसने स्पैनिश लोगों के साथ रहकर इस अतिक्रमण में अनजाने में ही बहुत मदद की।

हेर्नान कोर्टेज ने फुट डालो और राज करो की निति का उपयोग करते हुए एज़्टेक कबीलो की फुट का भरपूर इस्तेमाल किया। उसने बहुत से एज़्टेक कबीलों की फुट का सावधानी से निरिक्षण किया और टेनोचतितलान (Tenochtitlan) के शहर जो की एज़्टेक सभ्यता का केंद्र हुआ करता था। इस शहर पर मोक्टेज़ुमा नाम का राजा राज किया करता था, जिसके शहर में 4 लाख की आबादी में आदिवासी आबादी रहा करती थी। जब स्पैनिश लोगों ने जब मोक्टेज़ुमा के शहर को घेर लिया तो उसने स्पैनिश लोगों से मिलने के लिए दूत भेजे। स्पैनिश ने अपने धनुष और तोपों से गोलियां चलाईं, जिसमें मूल निवासी स्तब्ध रह गए और उन्हें डरा दिया।

कोर्टेस ने शहर में प्रवेश किया, और पहली बार दोनों नेताओं के बीच बैठक हुई, हालांकि तनावपूर्ण, लेकिन फिर भी शांतिपूर्ण थी। मोंटेज़ुमा ने कोर्टेज को सोने के उपहार दिए ताकि कोर्टेज उनके ऊपर उस त्यौहार के दिन हमला न करे जिस दिन टेनोचितितलान के लोग अपने देवताओं की पूजा कर रहे थे। लेकिन चीजें जल्दी बदल गईं, जैसे ही कोर्टेज ने इस शहर की लाचारी और हथियार के स्तर पर कमी परख ली, कोर्टेस ने मोंटेज़ुमा को धोखे से बंधक बना लिया और शहर को बर्बाद करने आदेश दे दिए।
स्पेनिश सेना ने शहर को बर्बाद करने में देरी नहीं लगाई, हालांकि कोर्टेस ने अधिकांश मूलनिवासी आबादी को गुलाम बना लिया था, उनमें बहुत से दुसरे एज़्टेक आदिवासी कबीलों ने ही इस काम में हेर्नान कोर्टेज की सहायता की थी , जिनमे त्लाक्सकला (Tlaxcala) के लोग भी शामिल थे, जिन्होंने उसे फिर से संगठित होने और टेनोचतितलान को हथियाने में मदद की। "एज़्टेक हमेशा अपने अधीन शहरों के बीच लोकप्रिय शासक नहीं थे। जब कोर्टेस को यह पता चला, तो वह अपने लाभ के लिए इसका इस्तेमाल करने में सक्षम था," कोस्मे ने कहा। "Xicotencatl, Tlaxcala शहर के एक शासक, ने कोर्टेस में एक सहयोगी और एज़्टेक साम्राज्य को नष्ट करने का एक अवसर देखा। उन्होंने कोर्टेज के साथ एक संधि बनाई, और कोर्टेस को अपने रैंकों में जोड़ने के लिए कई हजार योद्धा दिए गए। जबकि स्पेनियों के पास अभी भी बेहतर हथियार थे - तोपें, बंदूकें, तलवारें - एज़्टेक युद्ध शैलियों और ज़िकोटेंकैटल द्वारा दी गई सुरक्षा पर अतिरिक्त ज्ञान, साथ ही अतिरिक्त पुरुषों ने कोर्टेस को एक सहायक बढ़त दी।"
इन सभी में हालाँकि कई इतिहासकार चेचक जैसी महामारी को भी दोषी समझते है, जिसने एज़्टेक सभ्यता में गुपचुप सेंध लगाई और उन्हें भयंकर तरह से मारने लगी।
त्लाक्सकला के लोगों की मदद से, कोर्टेस की सेना फिर से संगठित हुई और 25 जून, 1520 को तेनोच्तितलान लौट आई। उन्होंने पाया कि अब तक शहर का समाज चरमरा गया था। बहरहाल, एज़्टेक योद्धाओं ने, अपने नए नेता कुउटेमोक के तहत, स्पेनिश का विरोध किया और एक लंबी घेराबंदी शुरू हो गई। वर्ल्ड हिस्ट्री एनसाइक्लोपीडिया के अनुसार, अंत में, 93 दिनों की घेराबंदी के

बाद, एज़्टेक, चेचक की बीमारी, भूख से कमजोर हो गए थे और कई घमासान युद्धों के बाद महत्वपूर्ण नुकसान के बाद , उन्होंने आत्मसमर्पण कर दिया। इस आत्मसमर्पण ने हिंसा, लूटपाट, बलात्कार और नरसंहार की आंधी को भड़का दिया जिसमे स्पष्ट रूप से स्पेनिश और उनके त्लाक्साकलां सहयोगी का हाथ था।
अभियान में योद्धाओं और नागरिकों सहित कुल मिलाकर 100,000 से 240,000 लोग मारे गए। लगभग 40,000 एज़्टेक शव नहरों में तैर रहे थे या घेराबंदी के बाद दफनाने की प्रतीक्षा कर रहे थे। लगभग सभी एज़्टेक कुलीन मर चुके थे, और शेष बचे ज्यादातर युवा महिलाएं और बहुत छोटे बच्चे थे। कम से कम 40,000 एज़्टेक नागरिक मारे गए और पकड़े गए।

तेनोच्तितलान के पतन के बाद शेष एज़्टेक योद्धा और नागरिक शहर से भाग गए क्योंकि स्पेनिश सहयोगी, मुख्य रूप से ट्लाक्सकलन्स ने आत्मसमर्पण के बाद भी हमला करना जारी रखा, शेष हजारों नागरिकों को मार डाला और शहर को लूट लिया। Tlaxcalans ने महिलाओं या बच्चों को नहीं बख्शा: उन्होंने घरों में प्रवेश किया, उन्हें मिली सभी कीमती चीजों को चुरा लिया, बलात्कार किया और फिर महिलाओं की हत्या कर दी, बच्चों को चाकू मार दिया।

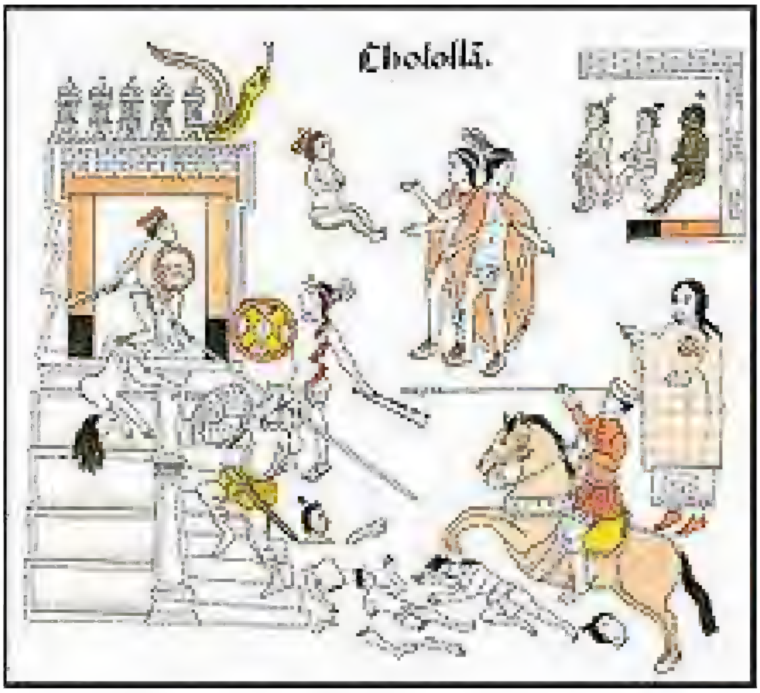
हालांकि कुछ रिपोर्टों ने संख्या को चालीस के रूप में कम रखा, लेकिन घेराबंदी में स्पेनिश ने 100 से अधिक सैनिकों को खो दिया, जबकि हजारों त्लाक्सकालन मारे गए। ऐसा अनुमान है कि वेराक्रूज़ से तेनोच्तितलान तक दो साल के अभियान के दौरान सभी कारणों से लगभग 1,800 स्पेनियों की मृत्यु हो गई। (थॉमस, पीपी। 528-29) शेष स्पेनिश सेना में 800-900 स्पेनवासी, अस्सी घोड़े, सोलह तोपें और कोर्टेस के तेरह ब्रिगेड शामिल थे। अन्य स्रोतों का अनुमान है कि 1519 से 1521 तक इस क्षेत्र में सभी लड़ाइयों के दौरान लगभग 860 स्पेनिश सैनिक और 20,000 त्लाक्सकलन योद्धा मारे गए थे।

एक बार जब शहर गिर गया, कोर्टेस ने उसके खंडहरों पर मेक्सिको का निर्माण शुरू किया। यह जल्दी से स्पेनिश उपनिवेशों में एक प्रमुख शहर बन गया, और कई यूरोपीय वहां रहने के लिए आए। उनकी सफलता को पुरस्कृत करने के लिए, स्पेन के राजा चार्ल्स प्रथम ने कोर्टेस को न्यू स्पेन का गवर्नर नियुक्त किया।

1518 के आसपास हरनान कोर्टेज द्वारा ऑटोमी कबीले के लोगों का नरसंहार किया गया जिसमे उनकी सम्पूर्ण आबादी का खात्मा हुआ जो टेकस (tecoac) के रहती थी। 1519 के पास में चोलुला के शहर पर कोर्टेज के आदमियों और उनके साथी लाक्चालन कबीले ने आक्रमण किया।

कोर्टेस और उसके लोगों ने सक्रिय प्रतिरोध के बिना चोलुला में प्रवेश किया। हालांकि, वे शहर के नेताओं से नहीं मिले थे और तीसरे दिन तक उन्हें खाना-पीना नहीं दिया गया था। केम्पोआलान्स ने बताया कि शहर के चारों ओर किलेबंदी का निर्माण किया जा रहा था और लाक्चालन स्पेनियों को चेतावनी दे रहे थे। अंत में, चोलुला के एक प्रधान की पत्नी से बात करने के बाद, ला मालिन्चे

ने कोर्टेस को सूचित किया कि स्थानीय लोगों ने नींद में स्पेनिश सिपहियों की हत्या करने की योजना बनाई थी। हालांकि उन्हें नहीं पता था कि ये अफवाह सच थी या नहीं, कोर्टेस ने पहले हमले का आदेश दिया, जिसमे चोलुलन के दुश्मनों, लाक्चालन द्वारा आग्रह किया गया। मुख्य मंदिर में कोर्टेस ने शहर के नेताओं का सामना किया और आरोप लगाया कि वे उसके आदमियों पर हमला करने की योजना बना रहे थे। उन्होंने स्वीकार किया कि उन्हें मोक्टेज़ुमा द्वारा विरोध करने का आदेश दिया गया था, लेकिन उन्होंने दावा किया कि उन्होंने उनके आदेशों का पालन नहीं किया। आदेश के बावजूद, स्पेनियों ने एक सबक के रूप में सेवा करने के लिए कई स्थानीय रईसों को जब्त कर लिया और मार डाला।



उन्होंने चोलुलान के नेताओं टालक्वियाच और टाल्चियाक पर कब्जा कर लिया और फिर शहर को आग लगाने का आदेश दिया। सैनिकों ने Xacayatzin के महल से आग लगाना शुरू किया, और फिर Chialinco और Yatzcoloc पर भी यह किया। अपने राजा को लिखे पत्रों में, कोर्टेस ने दावा किया कि तीन घंटे के समय में उसके सैनिकों (ट्लाक्सकालन द्वारा सहायता प्राप्त) ने 3,000 लोगों को मार डाला और शहर को जला दिया था। एक अन्य गवाह, वाज़क्वेज़ डी तापिया ने दावा किया कि मरने वालों की संख्या 30,000 से अधिक थी। हालांकि, चूंकि महिलाएं और बच्चे, और कई पुरुष पहले ही शहर से भाग गए थे, यह संभावना नहीं है कि इतने सारे लोग मारे गए थे। भले ही, चोलुला के नेताओं का नरसंहार मेक्सिको की विजय में एक कुख्यात अध्याय था।

ईसाइयत के द्वारा पेरू के आदिवासियों का दमन

सन 1528 के आस पास फ्रांसिस्को पिज़्ज़ारो नाम के एक स्पैनिश (conquistador) हमलावर को पेरू के शहर के बारे ज्ञात हुआ और उसने स्पेन की रानी से उस शहर पर ग़ज़वा करने की अनुमति उससे ले ली। पिज़्ज़ारो को पेरू के इन्का साम्राज्य (Inca empire) की कमजोरियों की भी धीरे धीरे जानकारी मिल गयी जैसे की इन्का राजकुमारों के आपसी झगडे और चेचक की बीमारी का पेरू तक पहुँच जाने की।

1532 तक, इंका साम्राज्य एक गृहयुद्ध में उलझा हुआ था जिसने जनसंख्या को नष्ट कर दिया था और लोगों की वफादारी को विभाजित कर दिया था। पूर्व इंकान शासक हुयना कैपैक के छोटे बेटे अथाहल्पा ने अभी-अभी अपने सौतेले भाई हुस्कर को अपदस्थ कर दिया था और अपने राज्य को फिर से जोड़ने के बीच में था जब 1531 में पिजारो आया, स्पेन के राजा चार्ल्स वी के समर्थन के साथ। इंकान के रास्ते में राजधानी, पिजारो को युद्ध के बारे में पता चला और हुस्कर के प्रति वफादार सैनिकों की भर्ती शुरू कर दी। पिजारो कजमार्का के ठीक बाहर अथाहल्पा से मिला, एक छोटा इंकान शहर एंडीज की घाटी में बसा हुआ है। अपने भाई हर्नान को एक दूत के रूप में भेजते हुए, पिजारो ने अथाहुल्पा को सिंहासन पर चढ़ने के सम्मान में एक दावत के लिए अथाहुल्पा को वापस कजामार्का में आमंत्रित किया।

जब इन्का मूल निवासियों द्वारा स्पैनिश लोगों को पहली बार देखा गया, पिजारो और उसके आदमियों को उन्होंने विराकोचा कुना या "देवता" मान लिया गया था। मूल निवासियों ने इंका को पिजारो के आदमियों का वर्णन किया। उन्होंने कहा कि कैपिटो पूरी दाढ़ी के साथ लंबा था और पूरी तरह से कपड़ों में लिपटा हुआ था। मूल निवासियों ने पुरुषों की तलवारों का वर्णन किया और बताया कि कैसे उन्होंने भेड़ों को उनके साथ मार डाला। पुरुषों ने रीति गत उनके देवताओं का मांस नहीं खाया, बल्कि भेड़, मेमने, बत्तख, कबूतर और हिरण का मांस खाया और मांस पकाया। इन्का लोगों ने अपने एक आदमी सिनक्विनचारा अथाहुल्पा को एक राजदूत बना कर भेजा। स्पैनिश लोगों के साथ यात्रा करने के बाद, सिनक्विनचारा अथाहुल्पा लौट आया; उन्होंने चर्चा की कि स्पेनिश पुरुष देवता थे या नहीं। Cinquinchara ने फैसला किया कि वे पुरुष थे क्योंकि उन्होंने उन्हें खाते, पीते, कपड़े पहनते और महिलाओं के साथ संबंध बनाते देखा। उसने देखा कि वे कोई चमत्कार नहीं करते। Cinquinchara ने Atahualpa को सूचित किया कि वे संख्या में छोटे थे, लगभग 170-180 पुरुष थे, और "लोहे की रस्सियों" के साथ दुसरे मूल निवासिओं को बंदी के रूप में बांध दिया था। जब अथाहल्पा ने पूछा कि अजनबियों के बारे में क्या करना है, तो सिनक्विनचारा ने सलाह दी कि उन्हें मार दिया जाए क्योंकि वे दुष्ट चोर थे जो वे चाहते थे ले लेंगे, और "सुपाई कुना" या "शैतान" थे। उसने सुझाव दिया कि इन यूरोपीय पुरुषों को उनके सोने के कमरे में फंसाकर जलाकर मार डाला जाए।

16 नवंबर 1532 को, स्पेनिश हमलावर, फ्रांसिस्को पिजारो, इंकान सम्राट, अथाहल्पा पर एक जाल बिछाता है। कई हजार के मुकाबले 200 से कम पुरुषों के साथ, पिजारो ने अताहुल्पा को सम्राट के सम्मान में एक दावत के लिए फुसलाया और फिर निहत्थे इंकानों पर गोलियां चला दीं। पिज़्ज़ारो के लोगों ने इंकानियों का नरसंहार किया और अथाहुल्पा को पकड़ लिया, जिससे उसे अंततः मारने से पहले ईसाई धर्म में परिवर्तित होने के लिए मजबूर होना पड़ा।

हालाँकि पहाड़ों में उनके साथ लगभग 80,000 सैनिक थे, अथाहल्पा ने केवल 5,000 निहत्थे पुरुषों के साथ दावत में शामिल होने की सहमति दी। उनकी मुलाकात पिजारो के साथ यात्रा करने वाले एक ईसाई पादरी विसेंट डे वाल्वरडे से हुई थी। जबकि पिजारो के आदमी प्रतीक्षा में थे, वाल्वरडे ने अथाहुल्पा से चार्ल्स पंचम को संप्रभु के रूप में परिवर्तित करने और स्वीकार करने का आग्रह किया। अथाहुल्पा ने गुस्से में इनकार कर दिया, जिससे वाल्वरडे ने पिजारो को गोलियां चलाने के लिए संकेत देने के लिए प्रेरित किया। तंग जगहों में फंसे, घबराए हुए इंकान सैनिकों को स्पेनिश हमलावरों के लिए आसान शिकार बनाया।

पिजारो के आदमियों ने सिर्फ एक घंटे में 5,000 इंकानों को मार डाला। पिजारो ही एकलौता ऐसा था जिसे इस दौरान चोट लगी थी: उसके हाथ पर एक कट लग गया था क्योंकि उसने अथाहुल्पा को मौत से बचाया था। शुरू में अताहुल्पा को मृत की तुलना में अधिक मूल्यवान जीवित मानते हुए, पिजारो ने सम्राट को कैद में रखा, जबकि उसने अपने साम्राज्य को संभालने की योजना बनाई। जवाब में, अथाहल्पा ने अपने क़ैदियों के लालच की अपील की, उन्हें अपनी मुक्ति के बदले सोने और चांदी से भरे एक कमरे की पेशकश की। पिजारो ने सहमति दी, लेकिन फिरौती प्राप्त करने के बाद भी, पिजारो ने अथाहुल्पा को विद्रोह भड़काने के आरोप में कैदी बनाये रखा।

उस समय तक, अथाहल्पा ने इंकान्स को शांत करने में अपनी भूमिका निभाई थी, जबकि पिजारो ने अपनी शक्ति हासिल कर ली थी, और पिजारो ने अब उसे बेकार खिलौना माना। अथाहुल्पा को एक सलीब पर जिन्दा जला दिया जाना था -   जो की एक ईसाई रिवाज था की एक बुतपरस्त के लिए जला कर मार दिया जाना एक उपयुक्त मौत है - लेकिन आखिरी समय में, पादरी वाल्वरडे ने सम्राट को क्षमादान की पेशकश की, अगर वह धर्मांतरित होगा। 29 अगस्त 1533 का दिन अथाहल्पा ने घुटने टेके, लेकिन उसे फिर भी गला घोंट कर मार डाला गया था। अथाहुल्पा की मृत्यु के बाद भी स्पेनिश और इंकास के बीच लड़ाई जारी रही लेकिन स्पेन ने अपनी जीत को मजबूत कर लिया था। कजामार्का में पिजारो की साहसिक जीत, हालांकि, प्रभावी रूप से इंका साम्राज्य के अंत और दक्षिण अमेरिका के यूरोपीय उपनिवेशीकरण की शुरुआत को चिह्नित करती है।

ईसाइयत के द्वारा उत्तरी अमेरिका के आदिवासियों का दमन

अफ्रीका के बाद किसी अन्य द्वीप के आदिवासी और मूलनिवासी लोगों का सबसे ज्यादा नुकसान अगर मजहबवाद और शैतान की अवधारणा ने किया है तो वह है उत्तरी अमेरिका का वो इलाका जिधर किसी समय में उत्तरी अमेरिका के कबीले निवास किया करते थे। इन लोगों को भी कोलंबस के उसी वहम के चलते इंडियंस या रेड इंडियंस कहा गया जिसमे उसे लगा था की वह भारत में पहुंचा है, जो की असल में अमेरिका का महाद्वीप था।



स्पेन के नाविकों और हमलावरों को राज्य और ईसाई मजहब कर द्वारा ये पहले ही मानित किया गया था की हर ढूंढी गई नई जमीनों पर आस्तिकों का कब्जा माना जाएगा और गैर ईसाई लोगों को इन्फिडेल या काफिर समझा जायेगा।

जब तक स्पेन का एक नाविक और हमलावर हेर्नान्दो दे सोटो (Hernando De soto) उत्तरी अमेरिका के इस इलाके पर नहीं पहुंचा था तब तक ये कबीले इन जगहों के असली मूलनिवासी थे। डी सोटो के अभियान ने एक और महीना टस्कालूसा (Tuskaloosa) के मेहमान के रूप में बिताया, जो आदिवासी प्रमुख था, माना जाता है कि वह बड़ी और जटिल मिसिसिपियन संस्कृति से जुड़ा था, जो मिसिसिपी घाटी और उसकी
सहायक नदियों के आसपास फैली हुई थी। डी सोटो ने उस मूलनिवासी प्रमुख से बाद में महिलाओं और नौकरों की मांग की, और जब टस्कालूसा ने मना कर दिया, तो यूरोपीय हमलावरों ने उसे बंधक बना लिया। टस्कालूसा ने डी सोटो की मांगों को आखिर में मान लिया था। उन्होंने डी सोटो को सूचित किया कि उन्हें महिलाओं को प्राप्त करने के लिए दक्षिणी अलबामा के एक गढ़ वाले शहर माबिला (या मौविला) शहर जाना होगा। डी सोटो ने प्रमुख को उनके सहयोग के लिए उन्हें पुरस्कृत करने के लिए जूते की एक जोड़ी और एक लाल कपडा दिया। लेकिन आजाद होते ही टस्कालूसा और मोबिलियन जनजाति के कबीले ने , डी सोटो की सेना पर हमला किया। स्पेनियों ने अपने बच निकलने का रास्ता निकाला, और मोबिला के शहर को जलाकर जवाबी कार्रवाई की। क्रॉसलर एल्वास के अनुसार, नौ घंटे की इस मुठभेड़ के दौरान, लगभग 200 स्पेनियों की मृत्यु हो

गई, और 150 से अधिक बुरी तरह से घायल हो गए। अगले कुछ हफ्तों के दौरान बीस और लोगों की मौत हो गई।

कई अमेरिकी मूल-निवासी कबीलों ने यूरोपीय मेहमानो के साथ उन सामानों के लिए व्यापार करने के अवसर को अपनाया जो उनके पास कभी नहीं थे, जिनमें चाकू, कुल्हाड़ी, कुदाल, बर्तन, बंदूकें और घोड़े शामिल थे। इन सामानों ने जनजातियों को अधिक कुशलता से शिकार करने और खेती करने के अवसर दिए और कई ने यूरोपीय नवाचारों का स्वागत किया। मूल अमेरिकियों के कुछ यूरोपीय शक्तियों के साथ अच्छे संबंध थे, विशेष रूप से फ्रांसीसी के साथ, जो 1530 के दशक में चमड़ा व्यापार में शामिल होने के लिए अमेरिका आए थे।

फ्रांसीसी अमरीकी मूलनिवासी क्षेत्रों का सम्मान करते थे, देशी भाषाओं और रीति-रिवाजों को सीखते थे और अमेरिकी मूल-निवासियों को विश्वसनीय मित्र मानते थे। अंग्रेजों द्वारा वर्जीनिया में जेम्सटाउन की स्थापना के एक साल बाद 1608 में फ्रेंच लोगों ने क्यूबेक में अपनी पहली बस्ती स्थापित की। फ्रांसीसी समझौते ने किसी भी अमेरिकी मूल-निवासी को उनकी जमीनों से विस्थापित नहीं किया, जिसके बदले में मूलनिवासी उन्हें चमड़ा व्यापार करने देते थे। अपने घनिष्ठ संबंधों के कारण, अमेरिकी मूल-निवासी कबीले अक्सर अंग्रेजों के साथ अपने संघर्षों में फ्रांसीसियों का साथ देते थे।

अंग्रेजी उपनिवेशवादियों और मूल अमेरिकियों के बीच प्रारंभिक संपर्क बहुत अलग था। जब जेम्सटाउन की स्थापना 1607 में हुई थी, तब बसने वाले अपने भोजन और संसाधनों के लिए अमेरिकी मूल-निवासियों की उदारता पर निर्भर थे। कप्तान जॉन स्मिथ द्वारा इस रिश्ते का फायदा उठाया गया, जिसने बलपूर्वक मूलनिवासियो से भोजन लेना शुरू कर दिया, जिससे उपनिवेशवादियों और अमरीकी मूल निवासियों के बीच हिंसक संघर्ष हुआ।

यूरोपीय लोगों के आगमन के साथ उन बीमारियों का आगमन हुआ जिनका सामना अमेरिकी मूल-निवासियों ने कभी नहीं किया था: चेचक, बुबोनिक प्लेग, खसरा, इन्फ्लूएंजा, डिप्थीरिया, और निमोनिया, आदि। यूरोपीय बीमारियों ने कई कबीलों को तबाह कर दिया, और यूरोपीय हमलावरों को अक्सर खाली गांव मिले जो कभी अमेरिकी मूल-निवासियों द्वारा बसाए गए थे। जब ईसाई तीर्थयात्री मिशनरीज 1620 में पहुंचे, तो उन्होंने ईसाई भगवन को धन्यवाद दिया कि उन्होंने मकई के साथ लगाए गए भूमि को खोजने में उनकी सहायता में उसकी लेकिन यह किसी ईसाई भगवान् का कार्य नहीं था। 1616 से 1619 तक, तटीय न्यू इंग्लैंड में लगभग 90% अमेरिकी मूल-निवासी व्यापार जहाजों पर चूहों द्वारा लाए गए रोगों से पहले ही मारे जा चुके थे। 1500 और 1900 के बीच पूरे उत्तरी अमेरिका में अनुमानित 11 मिलियन अमेरिकी मूल-निवासी मारे गए, ज्यादातर यूरोपीय लोगों द्वारा लाए गए रोगों के कारण। जो जमीने पहले से ही अपने किसानों द्वारा छोड़ दी गयी थी, उसपर ही यूरोपीय लोगों द्वारा धीरे धीरे कब्जे किये गए।

प्रारंभिक उपनिवेश वादियों ने अमेरिकी मूल-निवासियों के बीच बीमारी के फैलने और उन्हें अमेरिका के क्षेत्र में बसाने के लिए ईश्वर की योजना के रूप में या मूल अमेरिकियों के पापी जीवन के लिए ईश्वर के प्रकोप के रूप में देखा। मूल अमेरिकियों की बीमारी के प्रति संवेदनशीलता का भी उनके खिलाफ इस्तेमाल किया गया था। 1832 में, कांग्रेस ने अमेरिकी मूल-निवासियों को चेचक से बचाने के लिए 12,000 डॉलर का विनियोजन किया, जो देश की स्वदेशी आबादी के दो-तिहाई हिस्से का टीकाकरण करने के लिए पर्याप्त था। युद्ध के सचिव ने चुना कि किन जनजातियों ने टीकाकरण प्राप्त किया और जानबूझकर उत्तरी मैदानों के देशों को अमेरिकी सेना के साथ अपने संघर्षों में इन जनजातियों को कमजोर करने के तरीके के रूप में टीकाकरण नहीं किया।

कई अमेरिकी मूल-निवासी राष्ट्रों ने पश्चिम की ओर विस्तार के लिए उपनिवेशवादियों की इच्छा को उनके जीवन के लिए एक खतरे के रूप में देखा, और जनजातियों ने अमेरिकी क्रांति के दौरान ब्रिटिशों का भारी समर्थन किया। चेरोकी, क्रीक, और अधिकांश इरोक्विस राष्ट्रों ने ब्रिटिश युद्ध के प्रयासों को महत्वपूर्ण समर्थन प्रदान किया। हालांकि, 1783 में युद्ध समाप्त करने वाली संधि वार्ताओं में कोई मूल प्रतिनिधि मौजूद नहीं थे। ब्रिटिशों ने नए अमेरिकी गणराज्य को मिसिसिपी के पूर्व में सभी भूमि प्रदान की, जो उस समय ज्यादातर अमेरिकी मूल-निवासियों द्वारा बसाई गई थी।

तीन साल बाद, अमेरिकी सरकार और चेरोकी, चॉक्टाव और चिकसॉ राष्ट्रों ने होपवेल की संधि पर हस्ताक्षर किए। अमेरिकी सरकार द्वारा मूल अमेरिकी कबीलो पर कुछ आधिपत्य स्थापित करने का यह पहला प्रयास था। इस संधि ने सरकारी सुरक्षा के बदले में 69,000 एकड़ से अधिक भूमि और युद्ध के दौरान जब्त की गई संपत्ति की वापसी के लिए सौंप दिया। संधि ने मूल अमेरिकी राष्ट्रों की सीमाएं भी स्थापित कीं, जो मिसिसिपी के वर्तमान राज्य के लगभग दो-तिहाई हिस्से को कवर करती हैं।

1784 और 1871 के बीच, सरकार ने विभिन्न जनजातियों के साथ 377 संधियों पर बातचीत की। इनमें से कई संधियों ने यह सुनिश्चित किया कि मूल अमेरिकी राष्ट्रों को उनकी भूमि से नहीं हटाया जाएगा। हालांकि, 1800 में, थॉमस जेफरसन ने राष्ट्रीय रक्षा के लिए मिसिसिपी नदी की सीमा से लगी सभी भूमि को जब्त करने के लिए एक सैन्य आदेश जारी किया। जेफरसन जानते थे कि अंततः सरकार को जनजातियों को मिसिसिपी के पश्चिम में नई भूमि के लिए अपनी पैतृक भूमि का व्यापार करने के लिए प्रेरित करना होगा और संधियों का बार-बार उल्लंघन किया गया था।

चेरोकी, क्रीक, चॉक्टॉ, चिकसॉ और सेमिनोले कबीले को "श्वेत व्यक्ति के तरीकों" के लिए उनके त्वरित और कुशल अनुकूलन के कारण अमेरिका की पांच सभ्य जनजातियों के रूप में जाना जाता था। अमेरिकी सरकार ने इन जनजातियों से खतरा महसूस किया और उन्हें विस्तार के लिए एक बाधा के रूप में देखा। कई विद्वानों का सुझाव है कि चॉक्टॉ संघीय सरकार के लिए

पहला लक्ष्य बन गया, न केवल इसलिए कि उनके पास मूल्यवान भूमि थी जो सरकार चाहती थी, बल्कि इसलिए भी कि वे एक बड़े, प्रतिष्ठित और अत्यधिक-सफल राष्ट्र थे। आखिरकार, चॉक्टॉव ने अपनी सफलता के लिए कीमत चुकाई, और वे पहले अमेरिकी मूल-निवासी जनजाति थे जिन्हें सरकार ने अपनी मातृभूमि से भूमि के लिए अलग कर दिया था।

अंग्रेज कब्जागारों और इन गोरे लोगों ने असंख्य बार अपने शाशनकाल में अमेरिकी मूलनिवासियों का जनसंहार और मानवाधिकारों का हनन अमेरिका के विस्तार के नाम पर किया जिसमे वुंडेड कनी हत्याकांड (Wounded Knee Massacre, 29 दिसंबर 1890) जिसमे 300 लकोटा लोगों की हत्या की गयी, बेयर रिवर हत्याकांड (Bear River massacre 1863) जिसमे शोषोने कबीले के 350 लोगों की हत्या की गयी, कोलोराडो सैंड क्रीक (Colorado sand creek 1864) जिसमे 130 चेयेनेस कबीले के लोगों की हत्या की गयी। इसके अलावा अनेको-अनेक हत्याकांड के रिकॉर्ड आपको ऑनलाइन मिल जायेंगे जिसमे कई विभिन्न अमेरिकी मूलनिवासी कबीले के लोगों की हत्याओं के सबूत आपको मिल जायेंगे।

ईसाइयत के द्वारा ऑस्ट्रेलियाई आदिवासियों का दमन

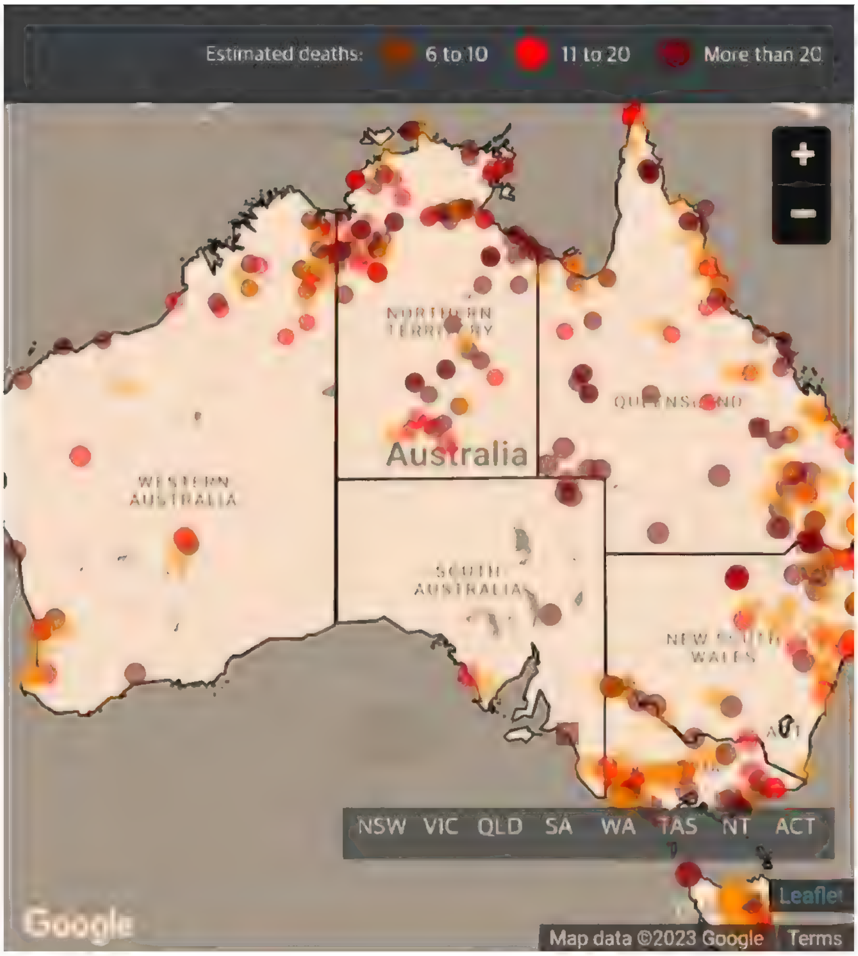
हमारी फेहरिस्त में तीसरा देश जिसके आदिवासी कबीलों की प्रताड़ना ईसाइयत और उपनिवेशी ताकतों द्वारा की गई थी, वह ऑस्ट्रेलिया है।



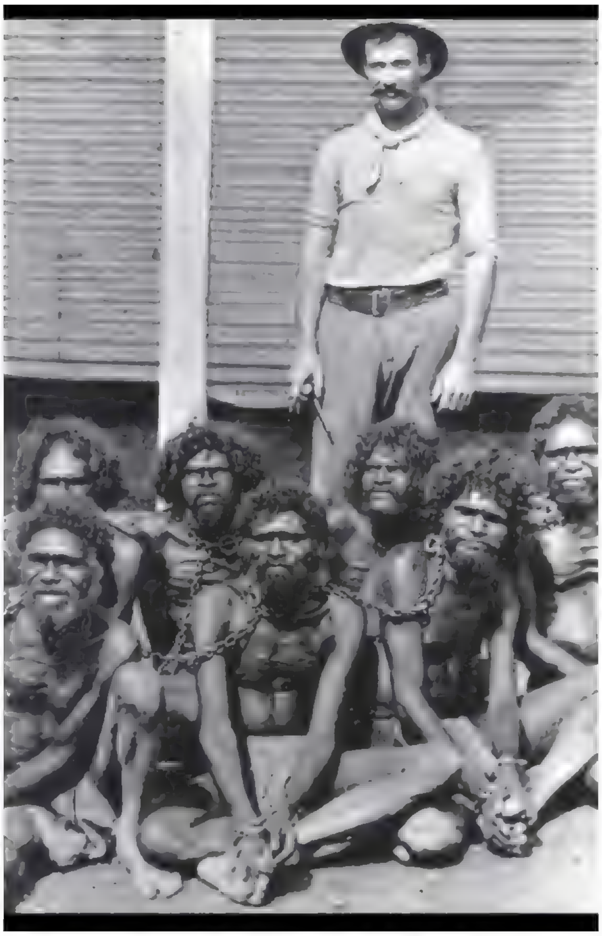
ऑस्ट्रेलियाई महाद्वीप पर किसी समय पर आदिम कबीलों रहा करते थे, जिनके अपने देवी देवता और विचार परंपराये हुआ करती थी।
साल 1606 के आसपास यूरपीय देश जैसे की डच, स्पेन इत्यादि ने अपने विस्तार के लिए इधर उधर घूमना शुरू किया और वह ऑस्ट्रेलिया के तट पर आ पहुंचे थे और इसी प्रकार 1783 के आसपास अंग्रेज भी ऑस्ट्रेलिया आ धमके थे। अंग्रेजी और बाकी लोगों की मानसिकता हमेशा से

ही गोरी ईसाई नस्ल को ही सर्वश्रेष्ठ मानती आई थी और उनका विश्वास था की जो लोग गोरे ईसाई नही है, वह मनुष्य ही नही वर्ण पशु के समान है, जिसके चलते उन्होंने पूरे अफ्रीका का दमन और दासता का कुचक्र चलाए रखा।
अब अंग्रेजो और बाकी उपनिवेशी लोगों ने आकर ऑस्ट्रेलिया की उपजाऊ जमीनों पर खेती और बाकी चीजें करनी शुरू कर दी जिससे आदिवासी लोगों की जमीनें और रहने की शैली बाधित रहने लगी।

साल 1794 से अंग्रेजी हुकूमत ने आदिवासी ऑस्ट्रेलियाई जनता पर फौजी, पुलिस और आम जनता के हाथ खोल दिए और उनकी हत्या के सारे प्रयास करने शुरू कर दिए।
अंग्रेजी गोरी सोच इतनी विकृत थी की उन्होंने इस आदिवासियों से किसी अदालत में पेश हो कर गवाही देने के मौलिक अधिकार भी छीन लिए और साथ ही जब तक कोई ऑस्ट्रेलियाई आदिवासी ईसाई नही बन जाता तो उसे बाइबल को छूकर उसकी कसम खाने पर भी पाबंदी थी।



एक नक्शे में ऑस्ट्रेलियाई आदिवासियों के कत्लेआम की जगह और रिकॉर्ड



आदिवासी ऑस्ट्रेलियन की कैद में तस्वीर

1794 में हॉकबेरी नदी के किनारे बसे अंग्रेजी लोगों ने 7 आदिवासी लोगों को मार दिया था क्योंकि वह कपड़ो की चोरी कर रहे थे। इसके बदले में उन्होंने कई आदिवासी बच्चों को पकड़ लिया और उनसे जबरन खेती मजदूरी करवाने लगे। एक दिन किसी आदिवासी बच्चे को जासूस होने के शक के चक्कर में उन्होंने जिंदा ही आग में डाल दिया और फिर गोली मार दी थी। इसके विरोध में बेडिगल लोगों ने दो उपनिवेषी गोरे लोगों को मार दिया तो अंग्रेजी अफसर विलियम पैटरसन ने आनन फानन में जितने भी बेडीगल लोग मारे जा सके का हुक्म सुनाया जिससे 8 आदिवासी मार दिए गए और कई औरते और बच्चे दास बना दिए गए।

1799 में हेनरी हैकिंग नाम के एक अफसर थे जिन्हे उनके गवर्नर साहिब जॉन हंटर ने कुछ खोए हुए नाविकों को ढूंढने का आदेश दिया। हेनरी ने आवाबकल आदिवासी कबीले में जाकर पूछताछ

की तो उन्होंने हेनरी को सूचित किया की नाविक लोग वहां से चले गए और आदिवासियों को उनकी कोई भनक नहीं है, हालांकि इतने से भी हेनरी का दिल नही माना और उसने उन बेकसूर अवाबक्ल आदिवासियों में से चार को मार दिया। बाद में वही नाविक जिसे हेनरी और उसके गवर्नर ढूंढ रहे थे, वह वापस लौट कर आए जिन्होंने आदिवासियों की बात की तस्दीक भी की।

साल 1816 में न्यू साउथ वेल्स के गवर्नर ने धारावाल कबीले के लोगों के संहार का ऑर्डर दिया जिसमे 17 आदिवासी मार दिए गए थे और कई निहत्थे आदिवासी मर्द, औरत, बच्चो को खाई में धकेल कर मार दिया गया था।
1826 में बिरपाई जनजाति के लोगों को घेरकर मारने की घटना का जिक्र आता है जिसमे हेनरी लेविस विल्सन की डायरी के अनुसार दो कैदियों को कुछ जनजाति के लोगों ने जब अपने इलाके में घूमने की वजह से मार दिया था तो इन सिपाहियों ने इन लोगो घेरकर गोलियों से भून दिया था, उनकी औरतों के साथ बलात्कार किया और फिर उन्हें भी गोली मार दी थी। इस घटना में 300 आदिवासियों के मारे जाने की बात की गई थी।

1827 में 12 गुंगाई जनजाति के लोगों को सिर्फ इस वजह से गोली मार दी गई थी क्योंकि उनके कैंप के किसी कैदी गोरे को आदिवासियों ने मारा था। उस कैदी ने आदिवासियों के कुत्ते को जान से मार दिया था जिसकी वजह से उन्होंने ऐसा किया था।

26 जनवरी 1838 को वाटरलू क्रीक का हत्याकांड का हादसा हुआ था जिसमे न्यू साउथ वेल्स की पुलिस ने कमीलारोई जनजाति के 40 से 200 लोगों को जान से मार दिया था।



साल 1824 से लेकर आज तक ऐसे 24 केस दर्ज हो चुके है जब अंग्रेजी गोरी नस्ल ने इन आदिवासियों को मारने के लिए नदियों के पानी तक में जहर मिलाने का गंभीर पाप किया था, जिनमे दर्जन से ज्यादा आदिवासी लोग आज तक मारे गए है। इसके अलावा 400 से भी ज्यादा ऐसे केस दर्ज किए जा चुके है जिनमे ऑस्ट्रेलियाई आदिवासियों के संहार करवाया गया और उन्हें बुरी तरह से मारा गया था।

ईसाइयत के द्वारा चुड़ैल होने के आधार पर स्त्रियों का दमन

डार्क एजेस के जमाने की चर्चा हम कई बार कर चुके है जब महामारी, अंधविश्वास और ईसाई कट्टरपंथी ताकतों ने कई औरतों और पुरुषों पर इल्जाम लगा कर उन्हें मरवा डाला था। इन औरतों या पुरुषों पर डायन या जादूगर का इल्जाम लगाया जाता था और उन्हें किसी आपदा या घटना का जानबूझकर दोषी बनाया जाता था। फिर उन पर इतने अत्याचार किए जाते थे की पीड़ा और मार से त्रस्त होकर ये लोग इन इनक्विस्टेडर (Inquistor) की हर उलजलूल आरोप को मान लेते थे जिसके बाद इन लोगों को फांसी देकर मार देते थे या फिर जिंदा जला देते थे।

साल 1400 के आसपास स्विट्जरलैंड में स्टेडलेन (Stedelen) नाम की एक महिला पर जादू से फसलें खराब करने और जानवरों को मारने का आरोप लगा कर जादूगरनी साबित किया गया था, जिसके बाद उसके साथ मारपीट की गई और उसने मारपीट के बाद डर के मारे कबूल लिया की उसका शैतान के साथ रिश्ता है। आखिर में स्टेडलैन को जिंदा जला कर मार दिया गया था। साल 1407 ने कोलग्रिम नाम के एक नॉर्वेजियन पर भी जादूगरी के झूठे आरोप लगा कर उसे भी जिंदा जला दिया था।

साल 1428 में मेट्यूशिया दे फ्रेंसेस्का (Matteuccia de Francesco) पर व्यभिचारी और डायन होने के ई लगाए गए क्योंकि वह एक लेस्बियन थी और वह कामोत्तेजक दवाई बेचती थी। हालांकि इस बात को चर्च के लोगों ने गलत बताकर उसे प्रताड़ित किया जिसके बाद उसने मार पीट के कारण डायन होने और उड़ने की बात कबूली जिसके बाद उसे जिंदा जला दिया गया।

जेंटाइल बुद्रिओली (Gentile Budrioli) सन 1498 के आसपास एक इटालियन ज्योतिष और वैद्य हुआ करती थी। अपने ज्ञान से उसने काफी लोगों को ठीक किया था लेकिन एक बार एक बच्चे की जान बचाने में जब वह असफल रही तो बोलोगना राज्य के सामंतो ने उस पर झूठे आरोप मढ़ कर उसे डायन होने और जानबूझकर बच्चे को मारने का दोषी बना दिया। जब उस पर ईसाई इनक्विशन बैठी तो उन्होंने उसके खिलाफ अनर्गल सबूत इक्कठे किए और कुछ झूठे गवाहों ने भी उसके खिलाफ गवाही दी। काफी दिनों तक किए गए अत्याचारों और अपने अंगों के काटे जाने के डर से बुद्रिओल्ली ने अपने ऊपर लगाए इल्जाम मान लिए और अपनी मौत को स्वीकार कर लिया था।

इटालियन इतिहासकार जिओवानी बतिस्ता सेजाने (Giovanni Battista Sezanne) के अनुसार ने बुद्रियोली के आखिर बयान को इस प्रकार बताया था –

"ईश्वर के लिए, मुझे इस दर्द भरी नर्क से बाहर निकालो...
जो भी तुम कहोगे मैं मानने और बोलने के लिए तैयार हूं....
जो मुझपर इल्जाम लगाए गए है, उन्हे मैं मान लूंगी।
बस आखिरी बार मुझे मेरे बच्चो और पति के गले लग देने दो, ए सज्जनों।
फिर मुझे मार देना..."



एक डायन का इल्जाम लगी महिला को दी जाने प्रताड़ना

14 जुलाई 1498 को बुद्रिओली को पहले फांसी देकर और फिर जिंदा जलाकर मार डाला गया था।
नरबोना डाकल (Narbona dacal) नाम की एक महिला को भी उसी साल अरागोन(Aragon) के शहर में डायन के इलजाम में जिंदा जला कर मार दिया गया था।

गाइड स्पैंडमेर (Gyde Spandemager) के नाम की महिला को साल 1543 को भी डेनमार्क, स्कैंडिनेविया में शाही पानी के जहाज को डुबोने के झूठे इल्जाम में तड़पा कर डायन होने के लिए राजी किया गया और फिर उसे मार दिया गया।

सबसे ज्यादा मशहूर रहने वाला डायन प्रकरण सालेम का डायन शिकार का कांड था जो की साल 1692–93 तक अमरीका के सालेम शहर हुआ था जिसमे तकरीबन 200 लोगों पर जादूगरी का इल्जाम लगाया गया और उनमें से 19 लोगों के फांसी की सजा हुई थी।

सालेम के शहर में साल 1692 को जब कुछ सभ्रांत पटनम (Putnam) कुल की कन्याओं को अचानक से मिर्गी के दौरे पड़ने लगे तो उनके घरवाले एक दम से डर गए थे, जिसकी वजह से लोगों में अंधविश्वास फैला की लड़कियों पर किसी ने जादू टोटका किया है। इसके एवज में तीन महिलाओं, सारा गुड, सराह ऑस्बॉर्न और टिटुबा पर इल्जाम लगाया गया की उन्होंने इन लड़कियों को जादू से प्रेतयुक्त कर दिया है। हालांकि आज के युग के कई इतिहासकार इसे पटनम परिवार की इन महिलाओं के साथ चली आई आपसी डाह को बदले में बदलना कहते है। उनके अनुसार पटनम परिवार ने अपनी लड़कियों के बीमार होने का सारा दोष अपने पड़ोसियों पर मढ़कर उनसे बदला लिया था। इन तीनों महिलाओं के अकेले रहने, चर्च की रविवार की बैठक में न आने या टिटूबा के गोरे न होने के चलते इन्हे डायन मान लिया गया और इन पर आरोप मढ़ दिए गए। 1 मार्च 1692 को एक अदालत ने इन्हे जेल में भेज दिया था और फिर बाद में इन्हे फांसी में चढ़ा दिया गया था।

ईप्सविच के शहर में लेकिन फिर से ऐसे ही इल्जाम कुछ और लड़कियों पर मढ़े गए जिनमे मार्था कोरी, डोरोथी गुड, रेबेका और रेचल क्लिंटन थी। इन लड़कियों की जांच के दौरान इनके शरीर में मस्से के निशान को ढूंढते थे जिनसे इनपर झूठा आरोप डाला जाता था की ये शैतान से मिली हुई है।

मार्था कोरी के पति गाइल्स कोरी को भी शैतान के पुजारी होने के शक में पत्थरों से कुचलकर अपनी गलती मानने को कहा गया था। हालांकि गाइल्स ने कुचल कर मरना तो स्वीकार किया लेकिन शैतान के पुजारी होने की बात नही मानी।



इस प्रकार के हत्याओं की संख्या लगभग 100 से पार जाती है जिसे आप नीचे दिए गए लिंक पर जाकर पूरी तरह से पढ़ सकते है। पूरी लिस्ट का लिंक

इस्लाम के द्वारा यज़ीदी लोगों का दमन

यजीदी लोगों का इस्लामी कट्टरपंथियों द्वारा अनेकों अनेक बार दमन किया गया है जिससे की इतिहास उनके खून से लाल हुआ पड़ा है। हाल ही के 2014 के आईएसआईएस (ISIS) के द्वारा किया गया उसका दमन इसकी 74 कड़ी है जिसकी शुरुआत 12 वीं शताब्दी में यजीदवाद के उदय के साथ हुआ। शेख आदि, जो की बगदाद में अध्ययन के बाद, जिन्होंने मध्ययुगीन अरबी स्रोतों में उल्लेख किए गए अपने स्वयं के एक मत की स्थापना की, जिसका उल्लेख मध्ययुगीन अरबी स्रोतों में अकरद 'अदाविया (अडविया कुर्द) के रूप में किया गया है। वह लालिश घाटी में बसे और अपने सिद्धांतों को कुर्दिश स्थानीय लोगों में पेश किया। उसके इस मत में अनेक मजहब या संप्रदाय जैसे जरथुस्थरावाद, सूफी और पुराण संप्रदाय की झलक मिलती थी जिसे कुर्द लोगों ने धीरे धीरे अपना लिया। बाद में इस्लाम के कट्टरपंथी लोगों ने इस मत के कुछ रिवाजों के उनके अपने इस्लामी रिवाज के उल्ट माना जिससे उन्होंने यजीदी लोगों को काफिर घोषित कर दिया और उन पर जिहादी हमले घोषित कर दिए थे। सबसे पहले जिन कुर्दिश कबीलो ने 10वी शताब्दी में इस्लाम को अपनाया तो उन्होंने अपने ही कुर्दिश यजीदी कबीलों पर हमले किए ताकि उन को भी इस्लामी किया जा सके। 1254 में बदरूदीन लुलु नाम के आर्मेनी मुस्लिम जनरल ने शेख आदि के पोते और उनके 200 शागिर्दो को मौत के घाट उतार दिया। उन्होंने लालिश के शेख आदि के मकबरे को भी बर्बाद कर दिया था। 1415 में एक शाफी मत का इस्लामी जनरल इज अल दिन हुलमानी ने फिर से शेख आदि के मकबरे को बर्बाद कर दिया जिसे बाद में फिर से यजीदी लोगों ने बनवाया था।
1832 में सुन्नी मुस्लिम कुर्दिश शहजादों बेदिर खान बेग और रवनदूज के मुहम्मद पाशा ने निनवेह, मोसुल की पहाड़ी पर 70 हजार यजीदी लोगों के गांवों पर हमले करवाए और उन्हें नष्ट कर दिया। 1831 में फिर से ऐसा हमला मुहम्मद पाशा ने किया जिसमे उन्हीं एक पूरी पहाड़ी के गांव उजाड़ दिए। 300 गांवों पर गजवे हुए जिसमे 10 हजार यजीदी लोग पकड़ में आए जिन्हे या तो इस्लाम कबूलने या मौत का घाट उतार दिया गया। यजीदी लोगों ने बमुश्किल अपनी जान बचाई और जंगलों में छुप गए। 1832 में बेदीर खान ने भी दुबारा ऐसा किया जिसमे कई यजीदी टिगिर्स नदी में डूब गए और 12 हजार यजीदी मारे गए।

उस्मानी सुल्तनत के अंदर आने के बाद फिर से साल 1891 में हमीदी फौज की टुकड़ी को यजीदी लोगों के सफाए के लिए भेजा गया जिसमे बाशिका और बक्शनी के गांवों को उजाड़ कर कई यजीदी लोगों को मारा गया। यजीदी ललिश मकबरे को एक मस्जिद बना दिया गया जहां कुरान की तालीम दी जाने लगी और कई साल बाद यजीदी लोग फिर से यहां पर अपने को स्थापित कर सके।

अरमेनी नरसंहार जिसमे उस्मानी सल्तनत की हमीदि फौज ने पूरे जोर से यजीदी लोगों का कत्लेआम किया, जिसकी संख्या 3 लाख तक बताई जाती है।



रूसी फौज द्वारा खींची गई एक मुश के एक गांव सेयखलन की नरसंहार की तस्वीर

आखिर में इराक जंग के दौरान आईएसआईएस यानी इस्लामिक लेवंत और इराक संगठन ने यजीदी लोगों का अप्रैल 2007 में कत्लेआम किया जिसमे 23 लोग मारे गए और 2007 की यजीदी लोगों की कम्युनिटी पर बॉम्ब गिराकर 796 लोगों की हत्या की गई। इस पूरे संघर्ष में लगभग 5000 लोगों के मारे जाने की घटनाएं सामने आई। अनेको मासूम यजीदी लड़कियों का अपहरण करके उन्हे हवस के लिए सेक्स गुलाम या लौंडी बनाया गया और उनके साथ कई जिहादी लोगों ने बलात्कार किया, बल्कि उन्हें गुलामों की तरह बेचकर पैसे भी बनाए गए। नोबेल पुरस्कार से सम्मानित नदिया मुराद ने अपनी और अपने जैसे अनेक यजीदी लड़कियों की आप बीती को पूरी दुनिया के सामने लाकर आईएसआईएस के घिनौने और गंदे चेहरे को बेनकाब कर दिया था। हालांकि हर यजीदी लड़की की किस्मत इतनी अच्छी नहीं रहे थी और उनका आज तक कुछ पता नहीं चला।



इस्लाम के द्वारा यूनानी ईसाई लोगों का दमन

स्टीफन इहरिग के अनुसार एडोल्फ हिटलर जिन्होंने लाखों यहूदियों को निर्दयता से कंसंट्रेशन कैंपस से यातनाएं दे देकर मारा था, उनका भी एक रोल मॉडल था जिसको वह केमाल मॉडल कहता था। हिटलर कहता था की वह कमाल का एक शागिर्द है और जैसा उसने तुर्की में किया, वैसे ही वह नाजी जर्मनी में नाजी लोगों के साथ करेगा!

आधिकारिक नाजी अखबार वोल्किस्चेर बेबाचटर ("Völkisch observer"), फरवरी 1921 के अंक में," द रोल मॉडल "शीर्षक वाले एक लेख में हिटलर ने तुर्की प्रशंसा के साथ जोर दिया गया था और कहा था जर्मन राइच (Reich) के पास एक दिन तुर्की जैसे तरीकों का सहारा लेने के अलावा और कोई विकल्प नहीं होगा।

लेकिन सवाल यह उठता है को आखिर हिटलर जैसे बुरे और दुष्ट व्यक्ति तक को प्रभावित करने वाला तुर्की व्यक्ति कौन था और उसने ऐसा क्या काम किया था जिससे वह इतना खुश था। दरअसल जिस कमाल मॉडल से नाजी जर्मनी का अगुआ इतना प्रभावित था, वह यूनानी, अरमेनी और असीरी ईसाई के ऊपर किए गए अत्याचारों का ही एक गठजोड़ था।
तुर्की उस्मानी सल्तनत जो की इस्लाम के घनघोर पैरोकार बनते थे और इनपर इस्लामी सुन्नी कट्टरपंथी का बहुत जायदा प्रभाव था। उनके हिसाब से हर वह व्यक्ति जो इस्लामी मिल्लत का हिस्सा नहीं है, वह जिम्मी या काफिर होता है और उसपर या तो मुस्लिमो की मिल्लत को छोड़ देना या जंग के लिए तैयार रहना ही दो रास्ते रहते है।



1910 का एक नक्शा जिसमे डेमोटिक यूनानी आबादी को पीले रंग से दर्शाया है,
पोंटिक यूनानी संतरी और कैपडोसिन यूनानी हरे रंग से दिखाए गए है।

उस्मानी सल्तनत के अनातोलिया प्रांत में किसी समय पर यूनानी ईसाई लोगों की काफी तादात हुआ करती थी, जिनमे अरमेनी, असीरी, चाल्डेकन और पॉन्टिक इत्यादि अन्य ईसाई लोग भी

हुआ करते थे। यह लोग ईसा के जन्म से भी पहले से सिकंदर के जमाने में इधर यूनानी फौज के साथ इधर बस गए थे और बाद में ईसायत के उदय के साथ ईसाई बन गए थे। तुर्की बोलने वाले उस्मानी सुल्तानत के अनुसार यूनानी भाषा बोलने वाले ईसाई एक अलग गुट की तरह समझते थे।
साल 1913, उस्मानी सल्तनत की CUP पार्टी ने धीमे धीमे यूनानी ईसाई को बेघर करवाना शुरू कर दिया था और इसके लिए मुकरना की नीति का इस्तेमाल किया जिसमे वह ऐसी किसी भी गतिविधि में शामिल होने से तो इंकार करते थे। जब यूनानी बड़े पोस्ट के लोगों ने इस बात का विरोध किया तो उस्मानी सरकार ने पूरी शिद्दत से यूनानी व्यापारियों के सामान का बहिष्कार की नीति शुरू कर दी थी।
12 जून 1914 में फोसिया (Phoecia) में रात के समय पर तुर्की की अंजान टुकड़ी ने हमला करके 50 से 100 लोगों को मार दिया गया।



1914 में ट्रैंजों (Trabzon) में तुर्की टुकड़ी ने कई ईसाई लोगों की हत्या और संपति को जब्त कर लिया था और यही हालात केमल मुस्तफा अतातुर्क के जमाने तक बदस्तूर चलता रहा।
1915 के आसपास इस्माइल अनवर जो की उस्मानी युद्ध मंत्री थे, उन्होंने ये दावा किया था की अब वह यूनानी समस्या से निजात पा लेंगे, जो उन्होंने कर भी दिया था।

विश्व युद्ध के प्रकोप के साथ, 21-45 वर्ष की आयु के सभी तुर्क ग्रीक पुरुषों को जबरन मजदूर बटालियनों (Amele Taburlari) में शामिल किया गया था। उनमें से अधिकांश भयावह परिस्थितियों में कम भोजन या पानी के साथ घड़ी के आसपास काम करने के लिए मजबूर हो रहे थे। 1915 में, जर्मन सैन्य कर्मियों की सलाह के तहत, CUP ने सैन्य आवश्यकता के बहाने Dardanelles और Gallipolli क्षेत्रों से ग्रीक समुदायों को निर्वासित कर दिया। इन यूनानियों को

उनके साथ कुछ भी लेने की अनुमति नहीं थी. उनकी दुकानों में सामान बाद में ओटोमन अधिकारियों द्वारा बेचा गया था। उन्हें आंतरिक और मुस्लिम गांवों में भेज दिया गया जहां उन्हें इस्लाम या मृत्यु के बीच चयन करने के लिए मजबूर किया गया था। ज्यादातर मामलों में, निर्वासन होने से पहले ओटोमन जेंडरर्म (पुलिस) और chetes (सशस्त्र अनियमित) ने समुदायों से धन और कीमती सामान जब्त किए, नरसंहार और जले हुए चर्च और स्कूल बनाए.

दिसंबर 1916 में, पोंटस क्षेत्र में यूनानियों का उत्पीड़न शुरू हुआ. 1917 तक, यह बताया गया कि 700,000 से अधिक यूनानी विनाश की एक पूर्वनिर्मित और अच्छी तरह से ऑर्केस्ट्रेटेड योजना के शिकार हो गए थे.

इकोनामिकल पैट्रियार्च द्वारा संकलित आंकड़ों के अनुसार, 1918 तक, 774,235 यूनानियों को उनके घरों से निकाल दिया गया था, उनमें से कई तुर्की के इंटीरियर में, फिर कभी नहीं देखे जाने के लिए. WW1 में ओटोमन साम्राज्य की हार के बाद, CUP के प्रमुख नेताओं को ओटोमन न्यायालयों में मौत की सजा दी गई थी-युद्ध के दौरान यूनानियों के नरसंहार के आयोजन में उनकी भूमिका के लिए मार्शल. लेकिन मुस्तफा केमल अतातुर्क के नेतृत्व में तुर्की राष्ट्रवादी आंदोलन के युद्ध के बाद के गठन ने अपराधियों को न्याय दिलाने के लिए कार्यवाही बाधित कर दी. केमलिस्ट राष्ट्रवादियों ने यूनानियों को सताने की CUP नीति को जारी रखा, जिसका समापन स्मिर्ना के महानगरीय शहर (के जलने से हुआ, आज इज़मिर) जमीन पर और शेष सभी यूनानियों के निष्कासन से तुर्की. सभी सक्षम ग्रीक पुरुषों को तुर्की से बाहर निकलने से मना कर दिया गया था और इसके बजाय उन्हें इंटीरियर में भेजा गया था, जहां अधिकांश दास श्रम शिविरों में मारे गए थे या उनका नरसंहार किया गया था.
1923 तक, विभिन्न स्रोतों में कहा गया है कि लगभग 1 मिलियन यूनानी नरसंहार में मारे गए।

इस्लाम के द्वारा आर्मेनिया के ईसाई लोगों का दमन

“हमने अजरबैजान के अर्मेनियाई और अश्शूरियों (काफिरों) का सफाया कर दिया है" - ये ओटोमन तुर्की में वान प्रांत के गवर्नर जेवडेट बे के शब्द थे, जिन्होंने 24 अप्रैल, 1915 को 20,000 तुर्की सैनिकों और 10,000 कुर्द अनियमितों का नेतृत्व किया था और असीरियन, अर्मेनियाई और यूनानियों के नरसंहार का प्रारंभिक कार्य किया था।
1915 और 1918 के बीच 750,000 असीरियन (75%), 1,000,000 यूनानी और 1,500,000 अर्मेनियाई लोगों को ओटोमन तुर्कों और कुर्दों द्वारा एक नरसंहार में मार दिया गया था, जिसका उद्देश्य ओटोमन साम्राज्य में ईसाई समुदायों को नष्ट करना था और जो लगभग सफल हो गया था।



आर्मेनिया के खेतों में पड़ी हुई लाशें

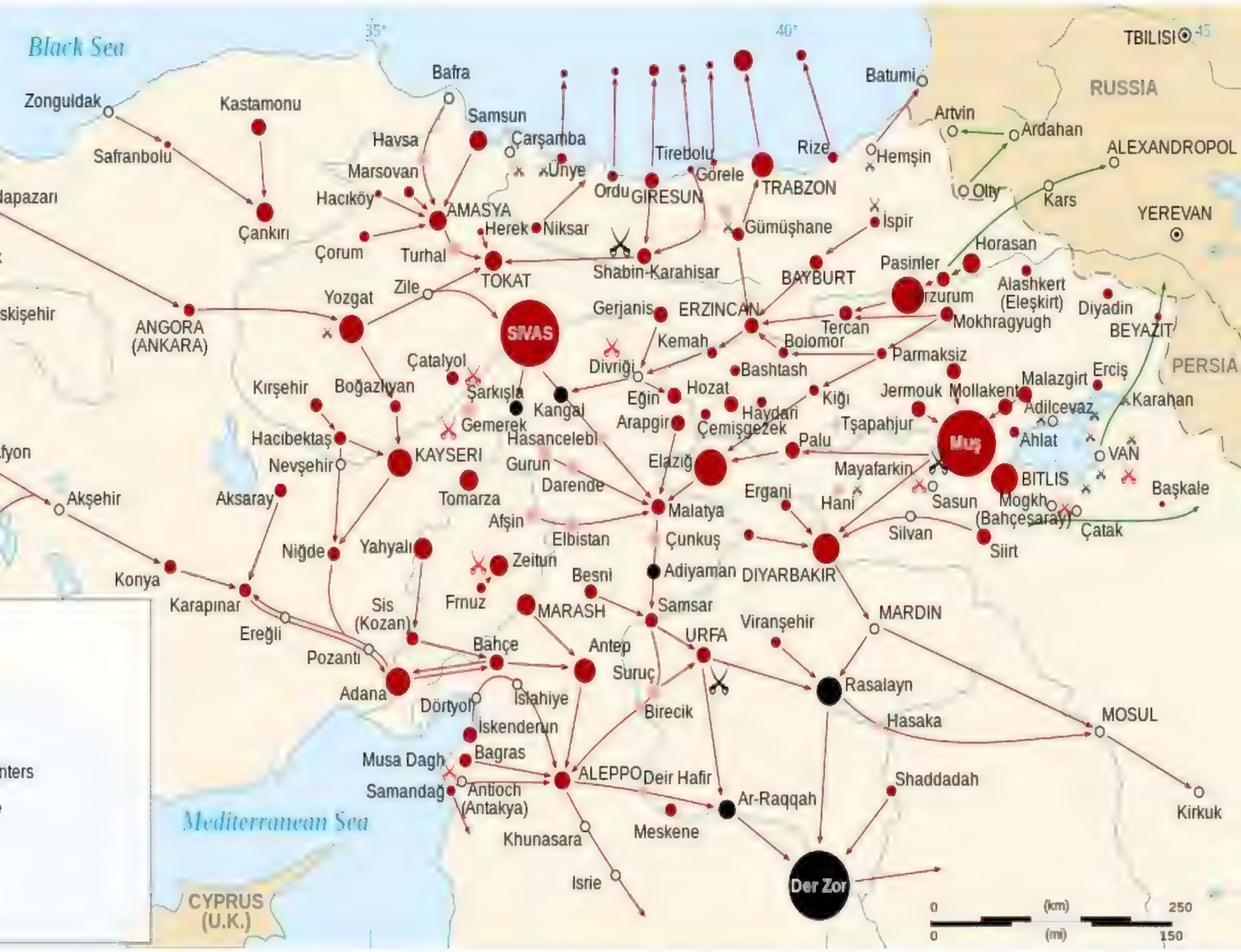
आर्मेनियन लोग जो की ईसाई रिलीजन से तालुक रखते थे कई सालों से अनातोलिया नाम के आज के तुर्की के प्रांत में रखा करते थे। उनकी रुतबा और ओहदा तुर्की लोगों में जिम्मी (कर देने वाला काफिर, जिसे जीने का हक मिल जाता है)। वही दूसरी ओर तुर्की के लोग मुस्लिम कौम या मिल्लत के सिद्धांत पर चलते थे, जहां पर गैर मुस्लिम सिर्फ जिम्मी बनकर रह सकता है।

पहले विश्व युद्ध के दौरान जब इस इलाके पर मुस्लिम आधिपत्य काफी बढ़ा तो उन्होंने आर्मेनिया के लोगों की जमीनों पर अवैध कब्जे करने शुरू कर दिए। अब्दुल हमीद द्वितीय के आने के बाद हामिदी फौजी टुकड़ी बनाई गई, जिनका इकलौता मकसद काफिरों को तंग करना और उनके ऊपर फौजी तरीके से गजवा करना था। इस फौज ने साल 1895–1896 में बड़ी क्रूरता से 1 लाख अरमेनाई ईसाइयों को मारा काटा, जिसमे उस्मानी सुलतान की फ्यूज के आदमी, पुलिस और गुंडे भी शामिल थे। कई आर्मेनी लोगों को जबरन मुस्लिम बनाया गया और कई घरों को लूटा गया, आगजनी की गई।
जब अब्दुल हमीद के बाद यंग तुर्क नाम की पार्टी का वजूद आय जो खुद को पंथनिरपेक्ष और सौम्य कहते थे, उस दौर में भी उस्मानी सुलतानत की फौजी लूटपाट जारी रही। अदाना (Adana) के शहर में साल 1909 में फिर से फौज ने बीस से पच्चीस हजार आर्मेनी लोगो को मौत के घाट उतार दिया।1890 के नरसंहारों के विपरीत,यह कत्लेआम तुर्की की केंद्र सरकार द्वारा आयोजित नहीं किए गए थे, लेकिन स्थानीय अधिकारियो और इस्लामी मुफ्ती मौलवियों द्वारा उकसाये गये थे, जिसमें अदाना में CUP समर्थक भी शामिल थे।

1912 तक आते आते यूनानी ईसाई लोगों का कत्लेआम बलकान युद्ध की वजह बना, जिसके परिणामस्वरूप साम्राज्य के यूरोपीय क्षेत्र के लगभग का नुकसान और बाल्कन से मुसलमानों का सामूहिक निष्कासन किया गया। ओटोमन मुस्लिम समाज ने बड़ी ही दोगली रणनीति से अपनी गलतियों पर पर्दा डाला और बाल्कन मुसलमानों के खिलाफ किए गए अत्याचारों को, ईसाई विरोधी भावना को तेज करने और बदला लेने की इच्छा को तेज करने में लगा दिया गया। इसके तहत युद्ध में नुकसान के लिए सारा दोष ईसाइयों के सर पर मढ दिया गया था, जिसमें ओटोमन

अर्मेनियाई ईसाई भी शामिल थे, जिनमें से कई ने ओटोमन की तरफ से लड़ाई लड़ी थी। दूसरे बलकान युद्ध के दौरान थ्रेस के इलाके में उस्मानी सुल्तान के सिपाहियों ने लूटपाट और आगजनी की जिससे 1 लाख के आसपास यहूदी ईसाई पलायन करके दुसरे शहरो में चले गए।

साल 1914 में जब अनवर पाशा के हाथ में उस्मानी सुल्तानत की बागडोर आई तो उन्होंने भी रूस और तुर्की की जंग में अपनी हार का ठीकरा अरमेनी लोगों के ऊपर फोड़ दिया और अरमेनी लोगो के ऊपर जिहाद लागू करके उनका बड़े दर्ज पर नरसंहार शुरू किया।





अरमेनाईं लोगो की मौत की रैली का एक दृश्य

जिन अरमेनी लोगों के घर जंग वाले इलाकों में थे, उन्हे सीधे सीधे गोलियां मार दी गई या तलवारों से काट दिया गया। औरतों के साथ बलात्कार और जबरन निकाह जैसी घटनाएं आम होने लगी थी। लोगों को इक्कठा करके चुनी हुई जगह पर ले जाया जाता और फिर उन्हें मार दिया जाता था। इस रैली को मौत की रैली (Death march) नाम दिया जाता था, जिसकी तस्वीर इंटरनेट पर आम है। इन जगहों में सबसे ज्यादा कुख्यात देर ए अज्जोर की जगह रही थी, जहां पर 1 लाख लोगों को मार दिया गया था। इस जगह पर कई हिस्सों से इन लोगों को इकट्ठा किया गया था जिन्हे खाने पीने के लिए भी कुछ नहीं दिया गया और उसके बाद मार दिया गया था। इसके अलावा रास–अल–एन भी ऐसी ही एक जगह थी जिधर कत्लेआम की वारदात को अंजाम दिया गया था। इस जगह पर लाई गई औरते नग्न अवस्था में जलील की जाती थी और उसके बाद उनके सामने ही उनके जानने वाले की गर्दन तलवार से उड़ा दी जाती थी।


पलायन से पूर्व इकठ्ठे किए गए अरमेनी लोग जिन्हे बाद में शहर के बाहर ले जाकर काट दिया गया।

हाल के आंकड़ों के अनुसार इस कत्लेआम में 6 लाख से डेढ़ करोड़ लोगों के मारे जाने का हिसाब लगाया गया था, बाकी के कई लोग को मुसलमान बनने पर छोड़ दिया गया। अनेकों अनेक अरमेनी लड़कियों को लौंडी या सेक्स गुलाम बनाकर बेच दिया गया। अरमेनी औरतों के ब्लातकार, यौन उत्पीडन और खरीद फरौख्त एक बात थी। डमैस्कस (Damascus) में इन ईसाई लड़कियों की मंडी लगाई गई और इन्हे बेच दिया गया था। लगभग सभी अरमेनी लोगों के संपत्ति को लूट कर मुस्लिमों में बांट दिया गया था।

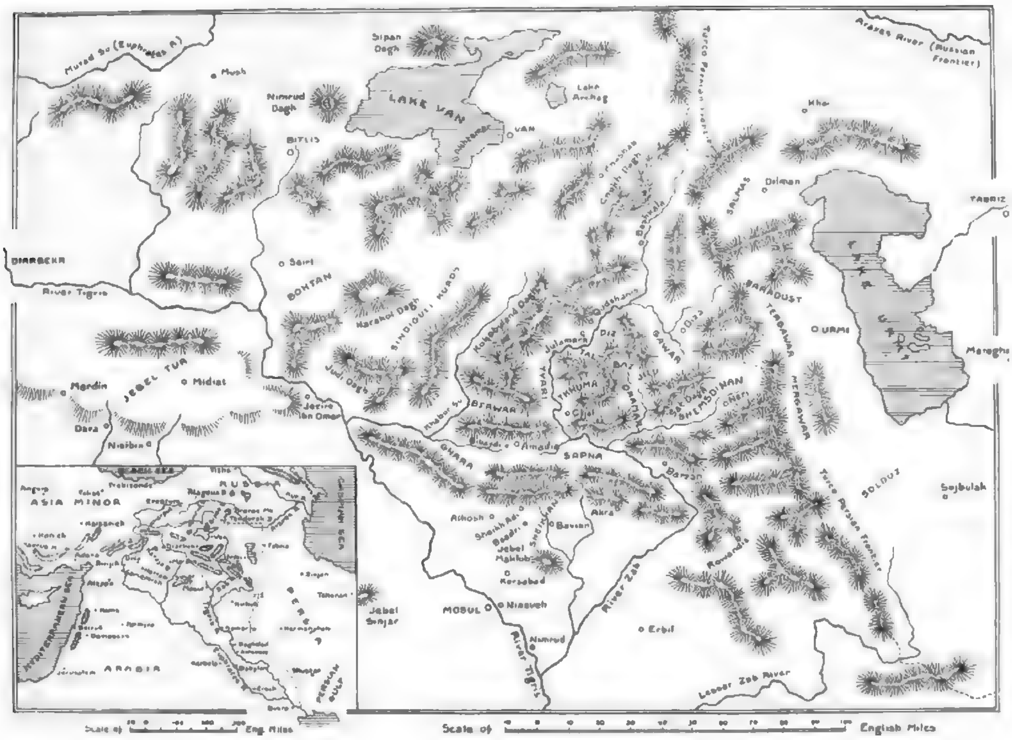
इस्लाम के द्वारा एसाइरिया के ईसाई लोगों का दमन

उस्मानी सुल्तानात ने सिर्फ काफिर यजीदी लोगों पर ही अत्याचार किए हो, ऐसा कोई बात नही थी, उनकी निगाह में हर वो आदमी जो इस्लाम को नही मानता था काफिर था और उसपर इस्लाम नाजिल करना ही उनका फर्ज था। इसीलिए एसाइरियाई (Assyria) इलाके में रहने वाले ईसाई लोग भी इस आग से बच नहीं सके। एसेरियन इसे तलवार का साल कहते थे जब आर्मीनियाई लोगों के साथ साथ उन्हे भी ईसाई होने के चलते पीस कर रख दिया गया।



साल *1919* के अनुसार अशहुरी ईसाई लोगों का अनुपात

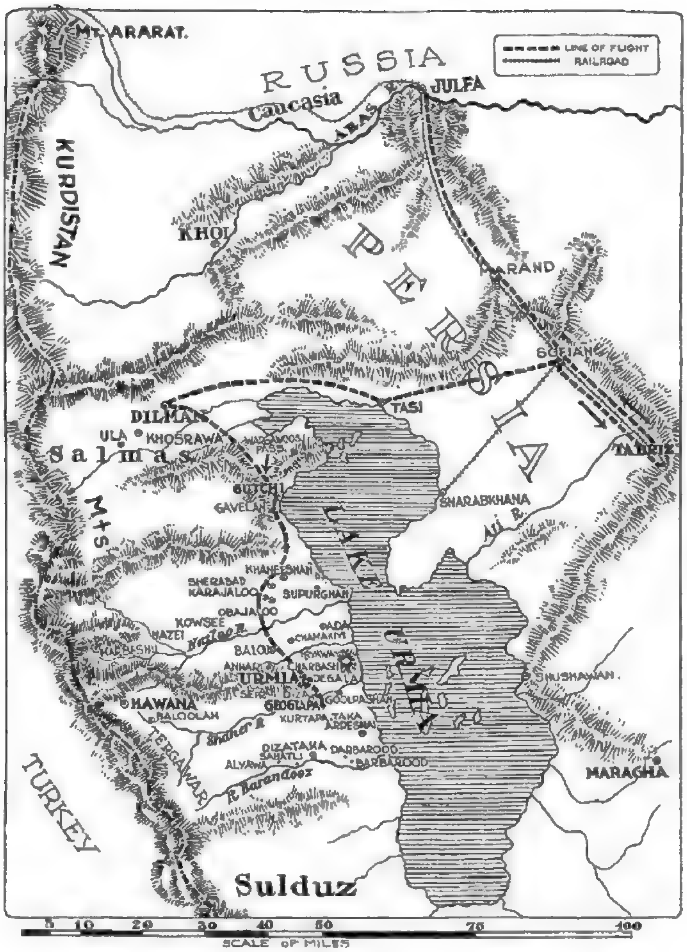
जब उस्मानी सुल्तानत की मिल्लत की आग एसिरिया के इलाके में फैलने लगी तो कुर्दिश मुस्लिम कबीले भी इस मौके की राह देख रहे थे। 1846 में बेदीर खान जो की एक कुर्दिश सिपहसालार था, उसने हकारी और तूर आब्दीन की पहाड़ियों को घेरकर वहां पर कई ईसाई लोगों को मार डाला। 1908, में एक कुर्दिश मुस्लिम अमीर ने 12000 असीरी ईसाइयों को उनके घरों से बेदखल करके भाग जाने एक आदेश दिया।



हक्कारी की पहाड़ियों का एक नक्शा

साल 1914 ने कई असीरी गांवों को खाली करवा कर उनके बाशिंदों को भगा दिया गया जिसका आदेश उस्मानी मंत्री तलत पाशा द्वारा दिया गया था। बशकाले और गवार के शहर में उस्मानी टुकड़ी ने असीरी ईसाइयों को रूसी हार के लिए दोषी बनाया और फिर यह उस्मानी फौजी टुकड़ी जिसमे कुर्दिश कबाइली, पुराने हामिदी टुकड़ी, गेंदरमरी थे, उन्होंने पहाड़ों के इलाके छोड़कर समतल जमीन वाले इलाकों से असीरी ईसाइयों का कत्लेआम शुरू कर दिया, जिसमे बश्कल और गवार शहर के तकरीबन तकरीबन सारे मर्द मारे जा चुके थे और इस शहर के औरते और बच्चे इन दंगाई जिहादियों के हाथ में पड़ चुके थे।
साल 1915 में उस्मानी फौजी टुकड़ी ने ऊपरी पहाड़ों की तरफ को रुख किया, जहां पर उनका सामना उन असीरी लड़ाकों से हुआ जिन्होंने अपने बीवी बच्चों को किसी महफूज जगह पर भेज दिया था। इन लोगों ने लड़ने की खूब कोशिश की लेकिन फौजी टुकड़ी के सामने ये जायदा दिन टिक न सके और एक एक करके उनके कई गांव तबाह कर दिए गए जिससे उनका वर्चस्व हक्करी के पहाड़ों से गायब हो गया।

आंकड़ों के अनुसार 1903 तक 31 हजार असीरी लोग फारस में रखा करते थे। 1914 ने रूसी सरकार के खिलाफ जंग का ऐलान करते हुए तुर्की उस्मानी सल्तनत ने फारस के कई ईसाई गांवो पर हमले शुरू किए, जिसमे उन्होंने कुर्दिश कबाइली की भरपूर मदद की थी।



अज़रबैजान में से ईसाई लोगों के भागने का नक्शा

उर्मिया के आसपास कई ईसाई लोगों की बस्तियां किसी समय में रहा करती थी, जो की अजरबैजान का हिस्सा था। उस्मानी फौजी ने इधर भी कत्लेआम, लूटपाट का काम किया। उस्मानी फौज ने बड़ी चालाकी से जनगणना करने के नाम पर हफ्तेवान(Haftewan) पर लोकल ईसाइयों को आने के निर्देश दिए और जब ये बेखबर लोग वहां पर पहुंचे तो 700 से ज्यादा मर्द लोगों को भी वहां कत्ल कर दिया गया था।



वादी वावेला घाटी में चाल्डेकन ईसाइयों के कत्लेआम की पेंटिंग्स

बिटलिस की पहाड़ियों से भी कई ईसाई लोग डर के मारे अपनी जान बचा कर दूसरे इलाकों में पलायन कर गए थे। एक ईसाई पादरी के अनुसार सिर्ट (संजान) (Siirt, Sanjan) के इलाके में उस समय पर साठ हजार ईसाई रहा करते थे। लेकिन जब 8000 का फौजी दस्ता इस इलाके में घुस गया तो यहां खून खराबा होते देर नहीं लगी जो की पूरे महीने तक चली। अनेकों ईसाई पुस्तकालयों को आग लगा दी गई, लूटपाट आगजनी की घटनाएं हुई। बिटलीस के गवर्नर अब्दुलहलिक रेंदा ने इन सब घटनाओं में पूरा साथ फौज का दिया। सात हजार लोगों को मोसुल और मार्दिन की और पलायन करवाया गया जिनमे से सिर्फ पचास–सौ लोग ही उधर सही सलामत पहुंचे, बाकियों को रास्ते में ही कुर्दिश जिहादियों ने लूट लिया। लड़कियों को लौंडी या गुलाम बनाने के लिए इस्तेमाल किया गया, या उनके साथ बलात्कार किए गए।

पेरिस कॉन्फ्रेंस 1919 के अनुसार फारस में से 40 हजार ईसाई, वान और हककारी की पहाड़ी में से 80 हजार, दियारबेकिर में से 63 हजार, हरपुट में से 15 हजार, बिटलिस में से 38 हजार और उर्फा में 9 हजार ईसाई चाल्डेक्न लोग मारे जा चुके थे।

इस्लाम के द्वारा बहाई लोगों का दमन

बहाई संप्रदाय का दमन इतिहास के पन्नों में वो मुकाम रखता है जो की इस्लामिक विचारधारा और उसके मेजोरिटी में आने के बाद माइनोरिटी के लोगों के साथ उसके बर्ताव को अच्छी तरह से जाहिर कर के रख देता है। बहाई संप्रदाय या बहाई आस्था , 19वीं शताब्दी के मध्य में मिर्ज़ा ओसैन अली नूरी द्वारा इराक में स्थापित हुआ था, जिसे इस नाम से जाना जाता है। बहाई विश्वास की आधारशिला यह विश्वास है कि अब्दुल बहा और उनके अग्रदूत, जिन्हें बाब कहते थे, ईश्वर की अभिव्यक्ति थीं। प्रमुख बहाई सिद्धांत सभी धर्मों की आवश्यक एकता और मानवता की एकता हैं। बहाईयों का मानना है कि दुनिया के सभी महान धर्मों के संस्थापक ईश्वर की अभिव्यक्ति और मानव जाति की शिक्षा के लिए एक प्रगतिशील दिव्य योजना के एजेंट रहे हैं । अपने स्पष्ट मतभेदों के बावजूद, बहाइयों के अनुसार, दुनिया के महान धर्म एक समान सत्य सिखाते हैं। बहाअल्लाह का विशिष्ट कार्य धर्मों की असमानता को दूर करना और एक

सार्वभौमिक विश्वास स्थापित करना था । बहाई मानवता की एकता में विश्वास करते हैं और खुद को नस्लीय, वर्ग और धार्मिक पूर्वाग्रहों के उन्मूलन के लिए समर्पित करते हैं । बहाई शिक्षाओं का बड़ा हिस्सा सामाजिक नैतिकता से संबंधित है । इस आस्था में कोई पुरोहिताई नहीं है और यह अपनी पूजा में अनुष्ठानों का पालन नहीं करता है ।
ईरान के उस समय में शिया इस्लाम का राज्य था और वह इस्लाम से उल्ट किसी भी विचारधारा को काफिरी या इस्लाम छोड़ने वाले को मुर्ताद कहते है, जिसकी सजा मौत या कैद होती है। मिर्जा मोअम्मद ने पहली बार 1844 में अपनी मान्यताओं की घोषणा की और बाब की उपाधि धारण की जिससे जल्द ही पूरे ईरान में बाब की शिक्षाएँ फैल गईं, जिसका शिया मुस्लिम मौलवी और सरकार दोनों के द्वारा कड़ा विरोध हुआ। बाब को जल्द ही मुर्तद होने के जुर्म में गिरफ्तार किया गया और कई वर्षों के बाद, 1850 में उसे मार दिया गया था। बड़े पैमाने पर उनके मत बहाई को मानने वाले लोगों का बहिष्कार या खात्मा शुरू हो गया था, जिसमें करीब करीब बीस हजार बहाई लोगों को कतल किया गया। बीसवीं शताब्दी में शुरू हुआ, दमन के अलावा, जिसने व्यक्तिगत बहाई को प्रभावित किया, केंद्र-निर्देशित अभियान जिन्होंने पूरे बहाई समुदाय और संस्थानों को लक्षित किया। एक मामले में यजद में 1903 में 100 से अधिक बहाई मारे गए। बाद में बहाई स्कूलों पर, जैसे कि तारबीत लड़कों और तेहरान में लड़कियों के स्कूल, 1930 और 40 के दशक में बंद हो गए, बहाई विवाह को मान्यता नहीं दी गई और बहाई साहित्य सेंसर किया गया था।

1955 में एक शेख मुहम्मद ताकी फलसफी ने रमजान के महीने में सबसे बड़ा बहाई विरोधी मुद्दा छेड़ा और उसने जहरीले और जिहादी भाषणों की ऐसी तर्ज छेड़ी की हर ईरानी मुस्लिम बहाई लोगों को काफिर मान कर उनका कत्ल करने को उठ खड़ा हुआ। दंगे भड़क उठे, जिसमे बहाई लोगों की संपत्ति को लूटा गया, लड़कियां महिलाए उठवा कर मुस्लिमों को बांट दी गई, बहाई लोगों का कत्ल किया गया। उनके कब्रगाहों को आग लगा दी गई और उन्हें नौकरी या मदरसों से बेदखल कर दिया गया। इस भाषण और दंगे के तीसरे हफ्ते में ईरानी फौज में बहाई सेंटर पर कब्जा कर लिया और उनके पूजा स्थल को तबाह कर दिया था। हालांकि बाद में ईरानी मुस्लिम सरकार ने लीपापोती करते हुए इसका ठीकरा फलसाफी पर फोड़ दिया लेकिन उन्होंने कभी भी उसके खिलाफ कोई कार्यवाही नहीं की।

1970 के दशक के उत्तरार्ध में, शाह के शासन ने आलोचना के कारण कि वह पश्चिमी समर्थक था, लगातार वैधता खो दिया. जैसा कि शाह विरोधी आंदोलन ने जमीन और समर्थन प्राप्त किया, क्रांतिकारी प्रचार फैल गया कि शाह के कुछ सलाहकार बहाई थे। बहाई लोगों को आर्थिक खतरों, इजरायल और पश्चिम के समर्थकों के रूप में चित्रित किया गया था,और बहाई लोगों के लिए लोकप्रिय नफरत बढ़ गई थी।
जैसे ही पहलवी शाह के खिलाफ अयातोल्लाह खोमैनी की तख्ता पलट शुरू हुई, उसी के बाद से बहाई लोगों के ईरान में बुरे दिनों की उल्टी घड़ी चलने लग पड़ी। दिसंबर 1978 में सर्वेस्तान नाम जगह पर बहाई लोगों पर हमला करके उनके घरों में आग लगा दी गई और कई हजारों बहाई लोग

बेघर कर दिए गए। यहां तक कि उनके कब्रिस्तानों को भी नष्ट भ्रष्ट कर दिया गया जो की इस्लामी विचारधारा की नफरत को दिखा देती है।



यज्द की बर्बाद हुई एक बहाई कब्रिस्तान

तख्ता पलट के बाद नई ईरानी सरकार ने न सिर्फ बहाई लोगों को माइनोरिटी मानने से इंकार कर दिया, बल्कि उन्हें यहूदी लोगों का एजेंट बोलकर उनके खिलाफ खुलेआम नफरत फैलाई गई। 1979 में ईरानी सरकार ने बहाई लोगों के चुने हुए प्रतिनिधि को खुलेआम बिना किसी अपराध के उठवा लिया, बिना किसी मुकदमे के उन्हे मरवा दिया गया। इस प्रकार करीब करीब 20 लोग इस साल और अगले साल तक मरवा दिया गए। शिराज में 1978 और 1981 के बीच, बहाई मत के पहले पुरोधा बाब के पवित्र स्थान, नष्ट कर दिया गया। पांच प्रमुख बहाई लोगों को मार दिया गया, और 85 से अधिक बहाई लोगों को पूछताछ के लिए गिरफ्तार किया गया; फिर 1983 में सोलह और बहाई को मार दिया गया।



बाब का समाधि स्थल जो की साल *1979* में नष्ट कर दिया गया था।

ईरानी तख्तापल्ट से लेकर अब तक 200 बहाई मारे जा चुके है और अनेकों अनेक खौफ और अत्याचार के साए में ईरान छोड़ कर दूर देशों में जा बसे है। ईरान में अभी भी बहाई लोगों का खामोश उत्पीड़न जारी है, जिसमे उन्हे सरकारी नौकरियों से निकाला जाता है और अन्य प्रकार का बहिष्कार झेलना पड़ता है। बहाई लोगों के बच्चों को उच्च शिक्षा के लिए अनुमति नहीं मिलती है। बहाई लोगों के खिलाफ आज भी खुलेआम ईरानी अखबारों में बुरा लिखा जाता है और उन्हें यहूदी या रसियनस का गुलाम कहा जाता है और उन्हें आज भी चैन से मरने का भी हक ईरान में नही है।

एक बहुत ही अजीब या कहे की गुप्त रूप का प्रोपेगंडा बहुत वक्त पहले से चला आ रहा एक घिसा पिटा इल्जाम जो ये लोग गैर इब्राहमिक लोगों पर हमेशा से लगाते आए है, वो यह की गैर इब्राहमिक लोग बच्चों की बलि दिया करते थे। लेकिन यह बात कहने वाले भी ज्यादातर इन्ही कल्ट के लोग है जिनका इकलौता मकसद सिर्फ अपने किए गए नरसंहार को जायज ठहराना और गैर अब्राहमिक मत को जंगली दिखाना होता था।

भाग 8: हिन्दू धर्म और शैतान

हिंदू धर्म की अब्राहमिक विचारधारा के लोगों से मुलाकात यहूदी लोगों के जमाने के व्यापारियों से ही शुरू हो गई थी, धीरे धीरे अरबी मुस्लिम व्यापारी और फिर मुस्लिम आक्रांताओं की भीड़ ने भारत पर कई हमले किए। उन्होंने अनेकों बार कई मंदिरों को तोड़ा, हिंदुओ को शैतान के पुजारी कहकर अपने अल्लाह को महान बताया, फिर हिंदुओ की आस्था को भ्रष्ट किया और लूटपाट की। फिर ईसाई अंग्रेज भी भारत में आए और अपने साथ ईसाई मिशनरी भी ले आए जिन्होंने शैतान की अवधारणा को और प्रबल करके हिंदुओ को यह जताने की कोशिश की वह किसी शैतान की पूजा कर रहे है और सच्चा खुदा या ईश्वर जीसस क्राइस्ट है।

अभी तक हमनें शैतान की अवधारणा के सभी पक्ष और साक्ष्य पर निगाह डाल ली है जिससे यह बात साबित होती है कि शैतान की अवधारणा संपूर्णतः मानवीय दुर्गणो की बेहद मजहबी कॉपी के अलावा और कुछ नहीं है। शैतान बुराई का तमगा डाले हुए सिर्फ अब्राहम मजहबी कल्ट्स की एक कठपुतली की तरह दुश्मनों के खिलाफ एक इल्जाम लगाकर उन्हें प्रताड़ित करने के ही काम आया है।
हमने इसी पुस्तक के एक भाग में यह भी देख लिया कि कैसे मजहब के मानने वालों ने गैर मजहबी लोगों और कई बार मजहब के लोगों पर भी अत्याचार और प्रताड़ना करी है।
इस सभी साक्ष्यों से यह बात साबित होती है कि मजहब के शैतान नाम के नकली पात्र को अब्राहमिक मजहबों ने सिर्फ और सिर्फ अपने एक हथियार की तरह इस्तेमाल किया ताकि वह गैर मजहब के लोगों को प्रताड़ित कर सके।

अभी तक के सभी साक्ष्य काफी है की हम आसानी से यह कह सके की सनातन धर्म का किसी भी शैतान या उसकी तरह के किसी जीव से कोई वास्ता नही है....लेकिन हम यह भी जानते है की अपने प्रोपगंडा को फैलाने वाले यह मजहबी लोग कभी भी हमारे इन तथ्यों को सच नही मानेंगे।

इसीलिए हम शैतान की अवधारणा को सनातन धर्म से शाश्त्र अनुसार विवेचना करके आपको साबित करके दिखाएंगे की क्या हिन्दू धर्म और इब्राहिमक शैतान का कोई लेना देना है की नही??

इसके लिए हम इन आक्षेपों को देखेंगे जो की अक्सर अब्राहमिक मजहब के लोगों द्वारा सनातन धर्म पर लगाए जाते है:-
1. हिन्दू धर्म का प्रमुख देव-देवता दरअसल में शैतान ही है, और इसलिए यह एक नकली धर्म है.....
2. हिन्दू धर्म के कुछ देवता देवी जैसे की शिव, काली, भैरव इत्यादि शैतान के दूत (demon) है....
3. क्योंकि हिन्दू मूर्ति पूजा करते है, इसीलिए उनके धर्म में कोई दम नही है और वह नकली है या वह नफरत के लायक है.....

सबसे पहले हम नंबर 1 आक्षेप के ऊपर निगाह डालते है की क्या हिन्दू या सनातन धर्म का प्रमुख देव-देवता क्या शैतान है…

सनातन धर्म के आस्था का प्रमुख केंद्र बिंदु ईश्वर है और ओम शब्द उसका सार है, जिसकी पुष्टि यजुर्वेद के दूसरे खण्ड के 13 श्लोक और 40वे खंड के 15 और 17वे भाग करते है।
इसके अलावा वैदिक पुस्तकें ही ईश्वर का दिया हुआ ज्ञान है इसकी पुष्टि भी वेद स्वयं ही करवा देते है। ईश्वर के अनेकों नाम है जिसका संपूर्ण विवरण आपको स्वामी दयानन्द रचित ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम समुल्लास में से आपको मिल जाएगी।

अब हमें यह देखना चाहिए की अब्राहमिक मजहब में ईश्वर के संदेश क्या है? हालांकि हर अब्राहमिक मजहब अपनी अपनी किताबों के अनुसार अलग अलग बातें करती है जो कि भिन्नता का प्रमाण है। लेकिन आज तक सभी अब्राहमिक पुस्तक यही मानती आई है कि जो कि उनके मजहब के कानून है तो शैतान हमेशा उससे उलट करता है।

सबसे पहले हमें यहूदी कानून देखने चाहिए जो कि पैगम्बर मूसा (मोशे) के द्वारा प्रचारित, और यहूदी ईश्वर यहोवा के द्वारा 10 आज्ञा के रूप में दिए गए थे। एक्सोडस (Exodus) के 20: 1-15 में इसका विवरण दिया गया और यह निम्नलिखित है।

1. अन्य देवता नहीं बनाओगे।
2. मूर्तिपूजा नही करना।
3. यहोवाह के नाम को व्यर्थ नही लेना है।
4. सब्बाथ के दिन को छुटटी रखनी है, प्रार्थना करनी है।
5. माता पिता की इज्जत करनी है।
6. हत्या नही करनी है।
7. व्यभिचार नही करना है।
8. चोरी नही करनी है।
9. झूठ नहीं बोलना है।
10. किसी से जलन नहीं करनी है।

इन सभी नियमों में से 3, 5, 6, 7, 8, 9, 10 के साथ हिन्दू धर्म ग्रंथ भी साम्य रखते है।

5वां नियम यानी माता पिता का सम्मान या सेवा इसके लिए भी आप वेदों में ऋग्वेद के 1:110:8, 4:33:3, 4:36:3, 5:77:2, 6:20:11, 7:7:3, 4:6:7, 8:19:27, 8:31:9; अथर्ववेद के 8:10:3-4 और यजुर्वेद के 2:32, 19:1 में निर्देश और उपदेश पढ़ सकते है। यजुर्वेद के 23:2५ में निर्देश है कि माता पिता से व्यर्थ बात (बकवास) नही करनी चाहिए। इसके अलावा ऋग्वेद-1:59:3, 3:3:11, 4:6:7, 8:19:27, 8:31:9 और अथर्वेद-3:30:2 में भी इस नियम के प्रमाण आपको मिल जाएंगे।

6वा नियम जिसे अकारण किसी भी जीव के साथ हिँसा नही करनी है, जिससे उसे पीड़ा पहुंचे, इसका आदेश भी आपको अथर्वेद के 8.4.15 में साफ मिल जाता है।
ऋग्वेद के 8वे मण्डल, 11 सूक्त 2 श्लोक में भी ईश्वर को अहिंसक कर्मो वाला बताया गया है।
ऋग्वेद 8.11.10 में भी ईश्वर के प्रभाव से हिंसा का अंत होना बताया गया है।

इसके अलावा दुष्ट प्राणियों के नाश का भी आदेश दिया है जो कि सारगर्भित है कि अच्छे लोगों को बचाना और दुष्टों का विनाश होना चाहिए ताकि देश धर्म और संस्कृति बचे। इसमे कोई पाप नही है क्योंकि अगर सामर्थ्यवान व्यक्ति दुष्टो को छोड़ देता है तो इससे सदैव सज्जनों को हानि पहुंचती है।

7वा नियम जिसमे व्यभिचार का आदेश है, अथर्वेद के 20वे कांड के 96 सूक्त के 15-16 श्लोक में स्प्ष्ट तौर से काम लूलोप व्यभिचारी (जारः) जो कि दूसरे के साथ उपद्रव करे, ऐसे दुर्मति के नाश का आदेश दिया गया है।

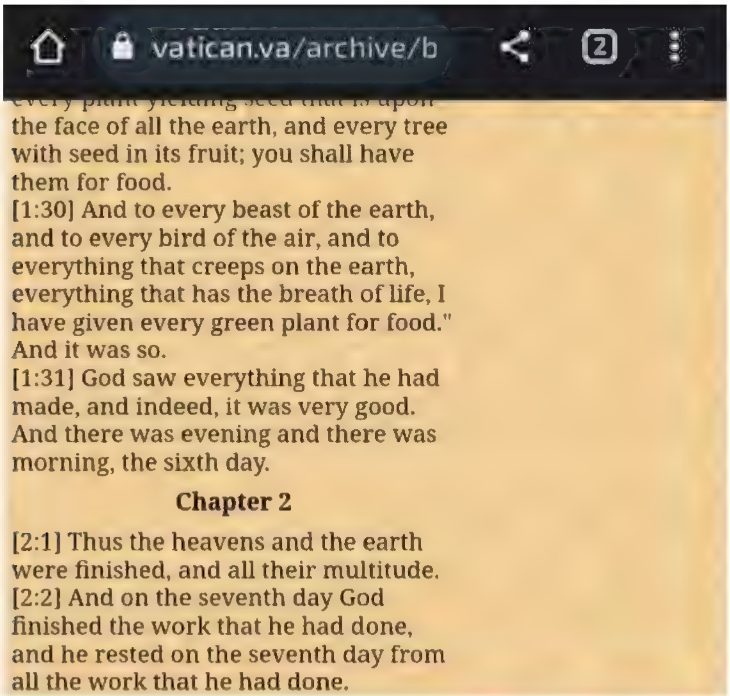
8वा नियम यानी कि चोरी करने के ऊपर अथर्वेद के 19वे कांड के 50 सूक्त के 5 श्लोक में चोरों को देश से बाहर निकाल देने का आदेश हुआ है।

9वा और 3सरा नियम यानी कि झूठ नही बोलना है और यहोवा का नाम व्यर्थ में नहीं लेना है इसके कई अन्य मतलब निकाले गए है। इसका एक अर्थ है कि यहोवा के नाम की झूठी शपथ नहीं खानी है।
झूठ नही बोलने के लिए अथर्व वेद के 12:3:52, 19:44:8, 19:44:9 में निर्देश दिए गए है की ऐसा नही करना है। पद्म पुराण के ब्रह्म खंड के 26 में भी ऐसी ही बात कही गई है जिसमे स्पष्ट तौर पर ईश्वर के नाम से भीं झुठ बोलने वाला, जिसका मकसद किसी को नुकसान पहुंचाना हो, ऐसा व्यक्ति बुरा होता है।

10वा नियम यानी ईर्ष्या या जलन से बचने के लिए अथर्ववेद के अंदर 6:18:1-3 और 7:45:1-2 में आदेश हुआ है।

<u>दूसरे और पहले नियम पर हम चर्चा आगे वाले आक्षेप में करेंगे क्योंकि वह सम्पूर्ण भाग ही मूर्तिपूजा और अन्य देवतावाद पर है।</u>

चौथा नियम जो कि सबाथ के दिन छुट्टी या उपवास रखने का नियम है ,इसका कोई वर्णन सनातन धर्म मे नही मिलता है क्योंकि यह नियम पूर्णतः एक मजहब विशेष का रिवाज है, न कि ईश्वर का दिया हुआ कोई प्राकृतिक गुण।
ईसाई बाइबिल और यहूदी पुस्तक में उत्पत्ति के 2सरे भाग के 2री पक्ति में स्पष्ट तौर पर यह दर्शाया गया है कि यहूदी ईश्वर को थकान हुई तो उसने 7वे दिन विश्राम किया जो की प्रश्नात्मक है की सर्वशक्तिशाली यहूदी ईश्वर को थकान कैसे हुई?



vatican.va/archive/b

every plant yielding seed that is upon
the face of all the earth, and every tree
with seed in its fruit; you shall have
them for food.
[1:30] And to every beast of the earth,
and to every bird of the air, and to
everything that creeps on the earth,
everything that has the breath of life, I
have given every green plant for food."
And it was so.
[1:31] God saw everything that he had
made, and indeed, it was very good.
And there was evening and there was
morning, the sixth day.

Chapter 2

[2:1] Thus the heavens and the earth
were finished, and all their multitude.
[2:2] And on the seventh day God
finished the work that he had done,
and he rested on the seventh day from
all the work that he had done.

इस बात का जिक्र हम पहले भी इस पुस्तक में कर चुके है कि कैसे हर अब्राहमिक मजहब ने छुट्टी के दिन को अलग अलग माना और अपने हिसाब और दूसरे से द्वंद के चलते इसे बदल दिया।
भारत मे भी 1844 को भारत के अंग्रेजी गवर्नर जनरल ने स्कूल जाने वाले अंग्रेजी बच्चो और अंग्रेजी आफिस को रविवार (Sunday) की छुटी करवाई, क्योंकि अंग्रेज ईसाई थे और उनके अनुसार सब्बाथ का दिन रविवार होता है। ईसाई हर रविवार को जाकर गिरजाघर में प्रार्थना करते है ,यह सर्वविदित है। इससे पहले इस्लामिक मुग़ल भारत काल में भी सब्बाथ को जुम्मे के दिन यानी शुक्रवार को मनाया जाता था जिसकी वजह से आकर्षण का दिन शुक्रवार(friday) को था।

इस बात में क्योंकि सनातन धर्म मे ऐसी कोई विचारधारा नही है कि ईश्वर को किसी प्रकार से आराम की जरूरत पड़ती है या उसमे कोई मानवीय गुण होते है। इसीलिए भारतीय परिवेश या हिन्दू मान्यताओं में सबाथ जैसे किसी छुट्टी या उपवास की कोई खास जरूरत नही रही है।

इस प्रकार हमने पाया कि है की हिंदू धर्म का ईश्वर जो की ओम स्वरूप में है, वह यहूदी यहोवा के बताए 7 नियमों के ही नियमों का आवाहन करने को सनातनी लोगों को कहते है।
इसके अलावा बाकी का एक नियम(सब्बाथ) की छुट्टी का नियम यूरोपीय कल्ट प्रभावित एक स्थान विशेष का रिवाज है।
बचे 2 नियमों पर हम अभी टीका टिप्पणी कहेंगे तो उन पर हमारी शंका समझी जाए।

इस प्रकार से हम ये कह सकते है की यहूदी ईश्वर और सनातनी ईश्वर में 7 बिंदुओ पर बड़ी समानता है। इससे हम यह समझ सके की यहूदी ईश्वर और सनातनी ईश्वर की विचारधारा एक समान है।
हमे यह भी ज्ञात ही है की शैतान की विचारधारा तो यहूदी ईश्वर से बिलकुल उल्ट है।
इस अनुसार हम यह निष्कर्ष निकाल सकते है:–

1. यहूदी यहोवा और सनातनी ईश्वर एक जैसे ही नैतिक आदेश दे रहे है।
2. यहूदी यहोवा और शैतान एक नही है और अलग अलग सोचते है।

इन बातों से हम यह तो कह सकते है की यहूदी ईश्वर और सनातनी ईश्वर, शैतान से अलग है। इस प्रकार से कुप्रचार और आक्षेप लगाने वालों को हम ने गलत साबित कर दिया है।

अब हम दूसरे आक्षेप पर निगाह मारते है जिसमे कल्ट के लोग यह कहते हैं कि हिंदू धर्म के लोगों के कुछ देवी देवता जैसे की शिव, भैरव, काली, गंगा इत्यादि शैतान के ही रूप है।

इस बात के प्रमाण ज्यादातर हमें उसी समय से ही मिलते है जब इस्लामी और ईसाई लोगों का सनातन धर्म के लोगों के साथ मिलना शुरू हो गया था। सबसे पहले तो इन लोगों ने जब हिंदुओ के देवी देवताओं के रूप और आकार को देखा तो उन्हें यह विकृत लगा और उन्होंने इसको शैतानी रूप बनाने की वही कोशिश की जो उन्होंने सींग, बकरा और वीनस के चिन्ह के साथ की थी। उन्होंने कहा की हिदू देवी देवताओं के एक से ज्यादा हाथ है और वह खोपड़ी इत्यादि जैसे चिन्हों के साथ दिखते है, इस वजह से वह डीमन है। लेकिन अगर विकृति ही किसी के डीमन होने का कारण होता है तो यकीन मानिए की ईसाइयत, इस्लाम के फरिश्ते भी इसी प्रकार के दिखाई देते है।

अब्रहामी मजहबों में फरिश्ते वह जीव है जो की यहोवा या अल्लाह के खिदमतगार या सेवक है। आमतौर पर फरिश्तों को एक दिव्य गोरे मर्द के रूप में दर्शाया जाता है जिसके पंख होते है। जैसे की ये देखिए।



लेकिन क्या रूप ही फरिश्तों का असली रूप है जो की अब्रहमी किताब में दिखाया गया है??
फरिश्तों में 9 प्रकार बताए गए है जिसमे चेरुबिम सबसे ऊपर के फरिश्ते माने गए है, जो की दिन रात यहूदी ईश्वर यहोवा का नाम जपते रहते है।



ईसाई पुस्तक एजेकियल के 1:15 के अनुसार ये चेरुबीम चार चेहरे वाले है जिनमे से एक चेहरा शेर, बैल, चील और इंसान का है।उनके पास सीधे पैर, चार पंख और पैरों के लिए बैल खुर हैं जो पॉलिश पीतल की तरह चमकते हैं. पंखों का एक सेट उनके शरीर को कवर करता है, और दूसरे का उपयोग उड़ान के लिए किया जाता है।



यशायाह 6: 2-3 भविष्यवक्ता यशायाह की ईश्वर के साथ स्वर्ग में पंखों वाले सेराफिम स्वर्गदूतों की दृष्टि का वर्णन करता है: “ उसके ऊपर सेराफिम थे, प्रत्येक के पास छह पंख थे: दो पंखों के साथ उन्होंने अपने चेहरे को ढँक लिया, दो के साथ उन्होंने अपने पैरों को कवर किया, और दो के साथ वे उड़ रहे थे. और वे एक दूसरे को बुला रहे थे: ‘ पवित्र, पवित्र, सर्वशक्तिमान सर्वशक्तिमान है; पूरी पृथ्वी उसकी महिमा से भरी है।



इसके अलावा दानियाल की किताब के सिंहासन' या thrones नाम के फरिश्ते जिन्हे 'ophanim' (offanim) और 'galgallin' के रूप में भी जाना जाता है, ऐसे जीव हैं जो चेरुब फरिश्तों द्वारा संचालित भगवान के वास्तविक रथ के रूप में कार्य करते हैं. उन्हें शांति और अधीनता की विशेषता है; थ्रोंस को कई आंखों वाले महान पहियों के रूप में दर्शाया गया है, और ब्रह्मांड के क्षेत्र में रहते हैं जहां भौतिक रूप आकार लेना शुरू होता है.



तो यह उपरोक्त जितने भी फरिश्ते हमने बताए यह सभी सबसे बड़े वाले दर्जे के यहूदी और ईसाई फरिश्ते है जिनका ओहदा बाकी फरिश्तों से ऊपर है। अगर हम इनके रूप और आकार को देखे तो यह भी कोई ज्यादा खूबसूरत नही दिखते बल्कि विकृत और अजीब ही दिखाई देते है। तो भला जिस मजहब में खुद के ईश्वर के सेवक ऐसे दिखाई देते है उन्हे दूसरे धर्म के देवताओं के रंग रूप में शैतान कैसे दिखता है???
अगर गणेश जी का सर हाथी का होने की वजह से वह शैतान दिखते है, तो चेरुबो के तो तीन सर जानवरों के है??
अगर ब्रह्मा के 4 चार सर की वजह से वह राक्षस है तो सेराफिम फरिश्तों का तो सर ही नही दिखता है और थ्रोंज के तो शरीर भी किसी चक्के जैसे दिख रहे है वो भी अनेकों आंखों के साथ???
अगर हिंदू देवता मनुष्य जैसे न दिखने की वजह से शैतान के दूत है तो यहूदी ईश्वर के दूत खुद भी कौनसे खूबसूरती की मिसाल है???

डिक्शंटेयर इंफरनल नाम की 1863 में छपी फ्रेंच भाषा की पुस्तक में इसके लेखक ने भारतीय देवी देवता भैरव,ब्रह्मा,दुर्गा, काली, गंगा, गरुड़ को न सिर्फ असुर (Demon) बना दिया बल्कि

उनके बारे में उल जलूल बातें भी लिखी। यह बात गौर तलब है की इस पुस्तक के लेखक कभी भी भारत नही आए थे और न ही उन्हें हिंदुओं की पवित्र पुस्तकों का अध्ययन किया था। उनके ज्ञान का सारा आधार वह फ्रांसीसी ईसाई मिशनरी थे जो की भारत में ईसाई मजहब फैलाने के मकसद से घूमते रहे और यहां के बारे में मनमाने हिसाब किताब लिखते रहे।

हम एक एक करके इस पुस्तक में लिखी गई बातें बताएंगे और फिर उनका शास्त्रों से मिलान करके देखेंगे।

- भैरव: इस पुस्तक के पेज 97 के अनुसार बेयरेवा (भैरव का बिगड़ा हुआ अंग्रेजी स्वरूप) को इस पुस्तक में एक राक्षस के रूप में बताया गया है जिसका युद्ध एक बार ब्रह्मा जी से हुआ था जिन्होंने किसी बड़े देवता की बेइज्जती कर दी थी जिससे भैरव ने उनका शीश काट दिया। भैरव के लंबे लंबे नाखून है, जिससे उसने ब्रह्मा का शीश काटा था। उनका रूप भयंकर बताया गया है।
    - त्रुटि विचार: भैरव जिन्हे शिव जी के गण के रूप में मान्यता प्राप्त है, वह शिवजी के बालों से उत्पन्न हुए माने जाते है। शिव पुराण के सतरुद्र संहिता खंड *8* भाग *3* के अनुसार यह कथा जिसमे ब्रह्मा के शीश काटने की कथा तो सत्य है लेकिन इसमें भैरव के नाखून से शीश नही कटा था, न हो भैरव कोई राक्षस है, बल्कि शिव जी के एक गण के रूप में हर देवी मंदिर के बाहर विराजमान रहते है। अब उनके रूप की चर्चा अनेक बार हिंदुओ और बौद्धों दोनों ने ही को थी लेकिन जहां हिंदू मूर्तियों में भैरव थोड़े सौम्य दिखते है, बुद्धिस्ट मूर्तियों में उन्हे क्रूर और भयानक दिखाया है, जिससे बाहरी ईसाई मिशनरियों ने उन्हे उनके रूप की वजह से राक्षसी बना दिया।



भैरव की बंगाल में मिली मूर्ति बनाम इंडोनेशिया में मिली बुद्धिस्ट भैरव की मूर्ति

- ब्रह्मा: पुस्तक का पेज 117 ब्रह्मा को ब्राह्मणों का देवता बताता है, जिसकी पूजा ब्राह्मण करते है। इसी पुस्तक में यह इलजाम है की ब्रह्मणो का एक संप्रदाय जल समाधि ले लेता है तो शैतान आकर उसे ले जाता है और ब्राह्मण भूल में यह सोचते है की वह ब्रह्मा के पास चले गए है। इसी पुस्तक में आगे यह भी बताया है की फ्रेंच लोगों के अनुसार ब्रह्मण जादूगर होते है और शैतान द्वारा प्रेरित होते है।
    - त्रुटि विचार: ब्रह्मा त्रिदेवो में से एक है और पुराणों में वर्णित एक देव है लेकिन यह बात को सभी ब्राह्मण ब्रह्मा की पूजा करते है, सरासर झूठी बात है। ब्रह्मा के तो पूरी दुनिया में सिर्फ एक ही मंदिर है और उनकी पूजा तो ज्यादातर पौराणिक पंडितो में वर्जित है, सिर्फ विष्णु और शिव ही ज्यादातर पूजे जाते है। इसी से साबित होता है की लेखक का ज्ञान हिंदू धर्म को लेकर कितना अल्प है। फ्रेंच लोगों के पादरी क्योंकि हिंदुओ को इन्फिडेल (गैर ईसाई) मानते थे, इसीलिए उन्हें बड़ी सुविधा हुई है की वह हिंदुओ को जादूगर और शक्तिशाली बताते है। अगर हिंदू ब्रह्मण इतने ही शक्तिशाली जादूगर होते तो उन्होंने अपना और अपने मंदिरों का बचाव इस्लामी या ईसाई अक्रांतो से क्यों नही किया??

- काली: Cali जिसे पुस्तक के पेज 131 पर राक्शो की रानी, और नर्क की सुल्ताना कहा गया है। उसे पूरे काले रंग के साथ, और सुनहरी खोपड़ियों की माला के साथ दर्शाया गया है जिसे मानव बलि दी जाती थी।
    - त्रुटि विचार: देवी काली का प्रथम बार संदर्भ एक देवी संप्रदाय के ग्रंथ देवी महात्म्य में मिलता है। यह ध्यान देने योग्य है की यह ग्रंथ एक संप्रदाय विशेष का ग्रंथ है न की कोई वेद पुराण की तरह कोई विशेष ग्रंथ। इस ग्रंथ के अनुसार देवी काली को देवताओं ने मधु कैटभ नाम के दो असुर को मारने के लिए देवी माता से सहायता हेतु प्राप्त किया था। इसके अलावा उन्होंने चंड मुंड नाम के दो राक्षस भी मारे थे जिस वजह से उनका नाम चंडी पड़ा था और रंग क्रोध के मारे काला पड़ गया था। उन्होंने एक बार रक्तबीज नाम के राक्षस को मारने के लिए अनेकों बार रक्तबीज की गर्दन काटी क्योंकि उसे वरदान था की उसका खून जितनी बार भी धरती पर गिरेगा, उसका एक रूप बन जायेगा। इन्ही सर या खोपड़ियों की माला देवी के गले में है। देवी काली का यही स्वरूप हर जगह विराजमान है, लेकिन काल अंतर में तंत्र और कुछ संप्रदायों ने देवी के इस स्वरूप को विकृत कर दिया था और देवी के नाम पर अवैध बलि देनी शुरू कर दी थी। करपुर्रआदि स्रोत में एक जगह पर देवी काली को राक्षशो की विनाशक कहा गया है, फिर किस हिसाब से लेखक ने काली को राक्षसों की रानी बना दिया?? अगर वह राक्षसों की रानी थी, तो उन्होंने इतने राक्षसों का विनाश करके मानवता को क्यों बचाया??? क्या यहां पर बाइबल के मैथ्यू 12:22-30,मार्क 3:20-27 जीसस का वही उदाहरण नही लगता जब जीसस ने यह कहा था की अगर शैतान अपने ही लोगों को मारेगा तो उसका राज्य का विस्तार कैसे करेगा??

- दुर्गा: Duemos या Dourga जिसे पुस्तक कई हाथों वाली राक्षसी के नाम से बोलती है, जिसकी पूजा कालीकट के मालाबार के इलाके में लोग पूजते है।
    - त्रुटि विचार: फिर से देवी दुर्गा जिन्हे माता का एक स्वरूप माना गया है उन्हे लेखक बिना किसी वजह के ही राक्षस बना दिया है। देवी दुर्गा के चार हाथ को ही राक्षस होने की वजह बताया गया है जो की अनर्गल विचार लगता है, जिसका हम ऊपर ही समाधान दे चुके है। अगर दुर्गा के चार हाथ बुरे लगते है तो फरिश्तों की उट्पटांग बनावट कौनसा इंसानी दिखती है?

- गंगा: Ganga या Gamma को राक्षशी बताया गया है। पुस्तक बताती है की उसके 1 सर और चार हाथ है और एक हाथ में कटोरा और एक हाथ में 3 कांटे वाला भाला है। गंगा के घाट पर उसकी बड़ी मूर्ति की पूजा की जाती है। गंगा की रथ यात्रा का जिक्र यहां पर किया गया है जिसमे उनके भक्त कुचल कर मारे जाते है। पुस्तक के अनुसार गंगा को बलि दी जाती है जहां उसके घाट पर लोगो को आग लगा दी जाती है।
    - त्रुटि विचार: गंगा भारत की नदी है जिसे पुराणिक काल में देवी के समान पूजा जाने लगा था। इससे पहले इसके पानी को दिव्य माना जाता था और इसके घाटों

पर पुरोहितो और पांडे जो की श्राद्ध, वंशावली का काम करते थे और है। लेकिन लेखक ने यह बड़ी भूल से लिखा है की गंगा की बड़ी मूर्ति की पूजा की जाती है जिसके पास नर बलि दी जाती है। गंगा की किसी भी घाट पर आज तक कभी भी गंगा की मूर्ति रूप में पूजा नही की जाती क्योंकि गंगा की उसके प्राकृतिक नदी के रूप में ही पूजा का विधान रहा है। इस पुस्तक में एक बड़ा ही अजीबो गरीब इल्जाम लगाया गया था की गंगा के घाट पर लोगों को जला दिया जाता था बलि के तौर पर जो की फिर से लेखक के आधे अधूरे ज्ञान और उसके ज्ञान के स्त्रोत ईसाई मिशनरी की धूर्तता को दर्शाता है। दरअसल गंगा के घाट पर अनेक हिंदुओ के मृत लोगों का अंतिम संस्कार का रिवाज अनेकों वर्षो से रहा है जिसके उदाहरण के तौर पर काशी के घाट दाह संस्कार के लिए मशहूर रहे है। यह घाट पर अनेकों मृत हिंदुओं की लाशों की अग्नि कितने ही बरसो से दी जा रही है, जिसका ईसाई मिशनरी ने बड़ी धूर्तता से अपने लेखों में जिंदा बलि के रूप में जिक्र किया और जैक्स प्लांसी ने भी अपनी पुस्तक में बिना कन्फर्म किए उसे लिख दिया। इसके अलावा गंगा के साथ रथ यात्रा की बात कहकर तो उसने अपनी अल्पज्ञता और साबित कर दी क्योंकि गंगा की किसी भी मशहूर रथ यात्रा का जिक्र आज तक की हिंदू ने नही सुना होगा।

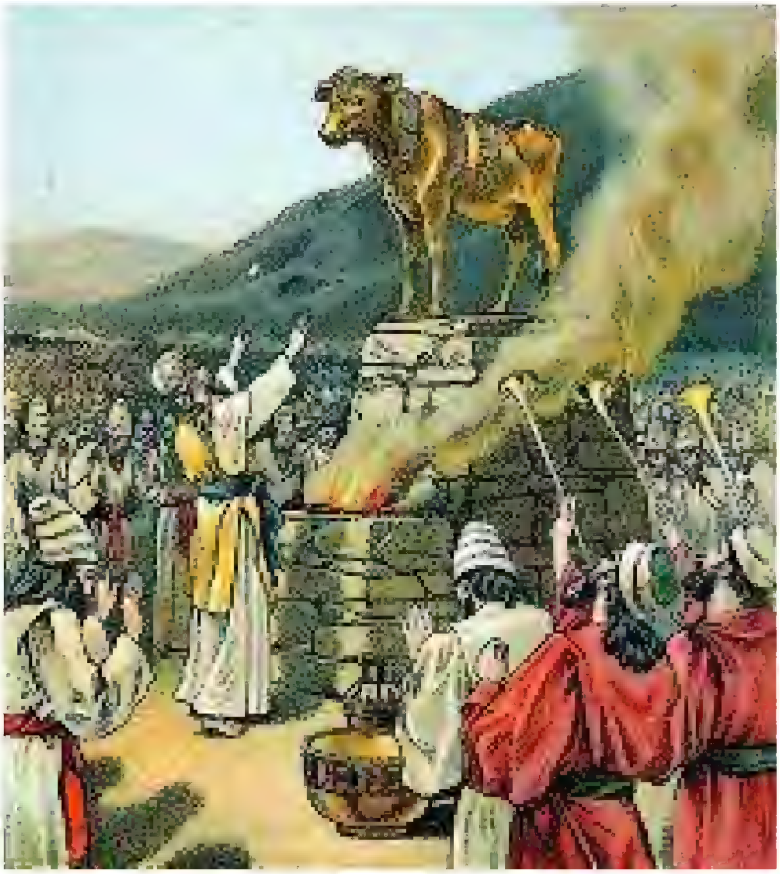
डिक्शनेयर इंफरनल के अलावा सतानिस्ट कॉल्ट के संस्थापक एंटोन लावे ने अपनी पुस्तक सैटेनिक बाइबल में हिंद देवी काली और शिव के नाम को कई दुष्ट नामो में से एक के रूप में जोड़ा था। बड़ी ही रोचक बात है की फिर से एंटोन लावे भी कभी भी भारत नही आए थे और न ही उन्हें शिव या काली के बारे में कुछ पढ़ा था। उन्होंने सिर्फ ईसाई मिशनरी की सुनी सुनाई बातों के आधार पर शिव - काली को शैतान मान लिया और अपनी नकली और कल्ट की किताब में लिख दिया था। इस बात का सबसे बड़ा प्रमाण इस बात से लगाया जा सकता है की उन्होंने इसी पुस्तक में एक जगह पर देवी काली को भगवान शिव की बेटी लिख दिया है जो की इस धोखेबाज कल्ट की मूर्खता और अल्पज्ञान को दिखाता है। यह बात तो किसी भी हिंदू धर्म के बारे में जानने वाले को मालूम होगा की देवी काली माता शक्ति का एक रूप है और शिव उनके पुरुष रूप है। अतैव काली किसी भी प्रकार से और किसी भी ग्रंथ के हिसाब से शिव की पुत्री नहीं है। देवी काली को ठगी संप्रदाय से जोड़कर देखने का रिवाज भी अंग्रेजी सरकार द्वारा ही शुरू किया गया था। जब भारत में अंग्रेजी राज के द्वारा ठगी संप्रदाय के लोग हाथ में आने लगे तो सबसे जायदा गिनती में वो मुस्लिम थे जो की इबादत तो अल्लाह की करते थे लेकिन दिखावटी रूप से काली का नाम लेते थे और हत्याएं करते थे।

वही एंटोन की पुस्तक में शिव का अर्थ दिया हुआ है विनाशक जबकि सस्कृत भाषा में शिव का अर्थ होता है शुभकारी (Auspicious)। क्योंकि हिंदू त्रिदेव में शिव का कार्य श्रृष्टि के बिगड़ जाने के बाद में इसके अंत से जुड़ा है इसीलिए उन्हें विनाशक भी कहते है लेकिन यह तो श्रृष्टि कर्म का

हिस्सा है और इस किसी भी दृष्टि से गलत मानना उसी प्रकार से गलत होगा जैसे की कोई व्यक्ति रोग से पीड़ित व्यक्ति का इलाज करने से मना कर दे और वैद्य को ही रोग को मिटाने के लिए गलत कहने लगे। एंटोन लावे और उनके कल्ट ने ईसाई मिशनरियों की ही तरह न तो हिंदुओ के इतिहास को समझा और न ही उनके दर्शन को समझने की कोशिश की।

इस तरह से हमने आक्षेप नंबर 2 पर भी चर्चा कर ली है और निष्कर्ष से यही कह सकते है की हिंदू धर्म के देवी देवता के रूप गुण से यह निष्कर्ष नही निकाला जा सकता है की वो किसी शैतान के दूत है क्योंकि ज्यादातर हिंदू देवी देवताओं ने बुराई के प्रतीक राक्षसों और असुरों का नाश और खात्मा ही किया है, ना की उनकी रक्षा की है।

अब हम आक्षेप नंबर 3 यानी मूर्ति पूजा पर चर्चा करेंगे। मूर्ति पूजा के खिलाफ अब्राहमई कल्ट में से अगर कोई सबसे ज्यादा मुखर हो कर विरोध करता दिखाई देता है तो वह मुसलमान है। उसके बाद ईसाई इसके खिलाफ हल्की फुल्की बाते करते है और मूर्ति पूजक के हाथ से कोई प्रसाद वगैरा न खाना जैसी बाते करते है। सबसे कम लेकिन आवश्यक बात यहूदी करते है जो की मूर्ति पूजा को गलत कहते है लेकिन उन्होंने इसके आधार पर लोगों का संहार या उत्पीड़न कम ही किया था। इतिहास साक्षी है की अब्राहमिक कल्ट ने मूर्तिपूजा का विरोध इस वजह से भी किया ताकि दूसरे देवी देवताओं का अस्तित्व खत्म हो जाए और सिर्फ उनके देवता एल या जेहोवाह की ही इबादत होती रहे।



हालांकि इस नफरत की वजह यह भी रही थी की अपने प्रयासों के बावजूद भी मूर्ति पूजक समाज जैसे की बेबीलोनी, अस्शुरी, मिश्रवासी, रोमन, यूनान इत्यादि ने यहूदी मजहब को हमेशा दबाया और कुचला था। अपने कब्जागरो के खिलाफ की यह नफरत का यह जहर उनकी मूर्तियों तक भी जा पहुंचा जिस वजह से मूर्तियों को शैतान से जोड़ा गया।

मूर्ति पूजा को अगर हम थोड़े आधार पर समझे तो इसके जरिए एक पूजा करने वाला अपने आराध्य को आसानी से अपने मन में उसकी आकृति मूर्ति के अनुसार बना कर उसकी आराधना कर पाता है। यानी की हम मूर्ति को चिन्ह या प्रतीक भी मान सकते है।

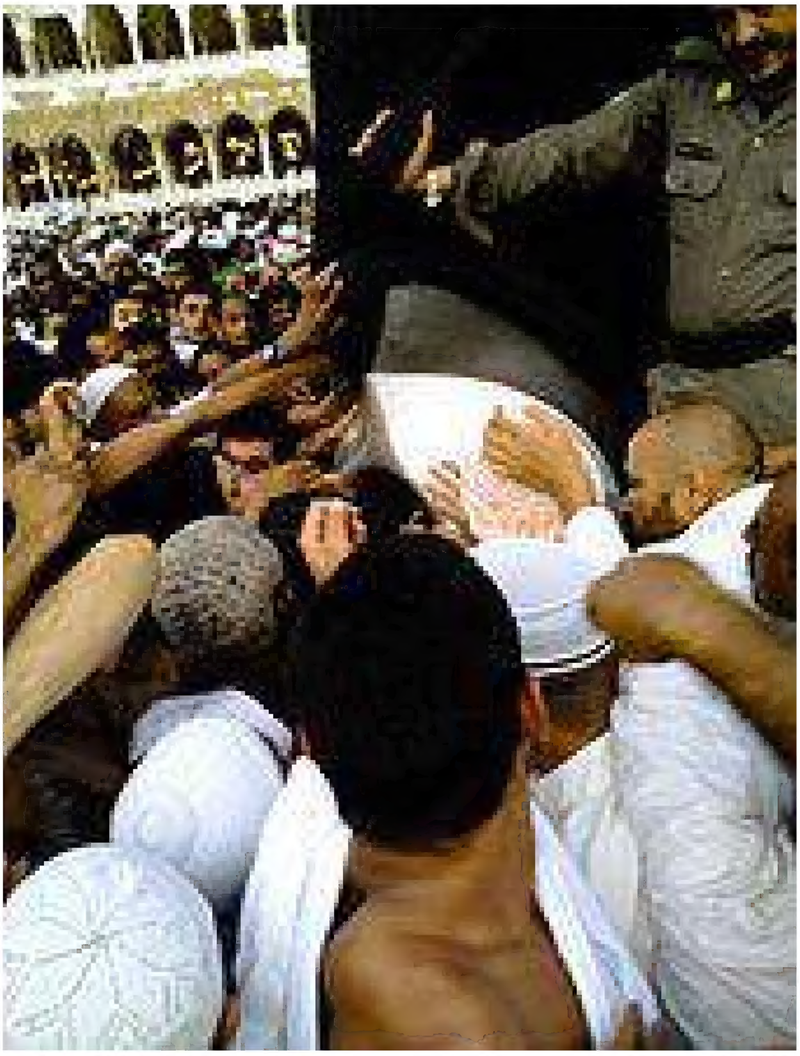
अब्राहमिक मजहब मूर्ति पूजा के विरोध में एक चाशनी में डूबा जवाब देते है की मूर्ति या बुत की इबादत करने से व्यक्ति पत्थर की मूर्ति या उस प्रतीक की ही पूजा या इबादत में लगा रहता है और असली खुदा को भूल जाता है। इस प्रकार के बात करके वह अपनी बात साबित करते है।

लेकिन इस तर्क के अनुसार अगर हम गूढता से देखे तो इस्लाम और ईसाइयत दोनो भी इस प्रकार के चिन्ह की पूजा में लिप्त हुए दिखाई देते है।

इस्लाम में हज करना और काबा के दर्शन का रिवाज इस्लाम के 5 कामों में से जरूरी काम है जो की हर मुस्लिम को करना पड़ता है। मुस्लिम जब भी काबा के पास जाते है तो उसके इर्द गिर्द

सफेद कपड़ों में चक्कर काटते है, और हज़र ए अस्वद नाम के काले पत्थर को चूमते है, जिसके प्रमाण इंटरनेट पर मौजूद है। अगर मुस्लिम एक पत्थर के इर्द गिर्द घूमकर और उसे चूमकर अल्लाह को भूल नहीं जाते है या शीर्क नही करते है तो फिर दूसरे मूर्तिपूजक पर ये पाबंदी किसलिए?

अगर मुस्लिम का खुदा अल्लाह इसे गलत नही समझता है तो फिर उसे मूर्ति पूजा से एतराज क्या इसलिए है की वे लोग उसकी इबादत न करके किसी और की इबादत कर रहे है, तो यह तो मानवीय भावना जलन जैसा प्रतीत होता है।



मुसलमानों के कई फिरके तो कब्र में पीर फकीर की मजार पर भी माथा टेकते है क्या यह भी मूर्तिपूजा की तरह चिन्ह पूजन नही है??

दूसरी ओर ईसाई लोग भी काफी धड़ले से यीशु मसीह और माता मरियम की मूर्तियां अपने चर्च में लगाते है। वह बपतिस्मा देते हुए शर्बत से बने हुए रस को यीशु के लहू के रूप में लोगों को देते है और लोगों को यीशु और मरियम की मूर्तियों के आगे झुकने को भी मना नहीं करते है?? क्या

यह काम मूर्तिपूजा जैसा नही है?? अगर नहीं तो फिर इसमें और मूर्तिपूजा के प्रतीकवाद में अलग क्या है?? ईसाई मत के लोग भी तो यीशु की मूर्ति देखकर यीशु को याद करते है और उनकी बातों को करने के लिए प्रेरित करते है, इसमें तो ईसाई ईश्वर का कोई गुणगान नही हो रहा है, उल्टे यीशु को ही ईश्वर बना दिया गया है। क्या इसाइओ का सलीब की पूजा करना या पोप का मूर्ति का चुम्बन लेनाभी एक प्रकार का चिन्ह पूजन नही है??? भला सलीब के निशान में और एक मूर्ति में क्या अंतर है???



अगर मूर्ति का पूजन इतना ही गलत कार्य होता तो अधिकतर ईसाई या अधिकतर मुस्लिम खुद मूर्ति या पत्थर के साथ आलिंगन या चुम्बन करके स्वयं को धन्य कैसे मान लेते है और दूसरे मूर्ति पूजक को शैतान का दास क्यों कहते है?? और आजतक उन्होंने यह काम रोका क्यों नही??

इस प्रकरण से तीसरा आक्षेप भी एक प्रकार का दोगला कार्य साबित होता है जिस मकसद सिर्फ मूर्तिपूजको को यह साबित करना होता है की वह मूर्ति या चिन्ह का ध्यान करके कुछ गलत करते है, और बाद में उन्हें भी अपनी तरह मजहबी बनाना होता है।

भाग 9 : उपसंहार

इस पुस्तक के अंत में हम सबसे पहले आपकोआपको कुछ महत्वपूर्ण लिंक्स देंगे जहाँ से आप इन टॉपिक्स पर ज्यादा से ज्यादा पढ़ कर रिसर्च कर सके। अंत में हम यही कहेंगे की शैतान के होने की अवधारणा उसी प्रकार से नकली और मनघडंत है जैसे की घूप अँधेरे में रस्सी को भूल वश सांप मान लेने वाली घटना का होना है। एक आम मनुष्य जिसके मन में मृत्यु और अनदेखे का डर समाया रहता है, वह शैतान नाम के काल्पनिक जीव की बातों को जब लोगों के जरिये, फिल्मों, टीवी या अन्य माध्यम से सुनता, देखता है तो जाने अनजाने में इस जीव का विचार उसके दिल में घर जाता है। शैतान के नाम पर आज तक अब्राहमिक कल्ट और संप्रदाय ने भोले भाले और मासूम लोगों को डराया धमकाया और यहाँ तक की उनपर तोहमत और इल्जाम लगा कर सजाये भी दी है, जो की मानवता, इंसानियत की निगाह में सबसे बड़ा जुर्म और पाप है। अतैव हम सभी लोगों से यही प्रार्थना करेंगे की वह ऐसे किसी भी झूठे अफवाहों में फसने से पहले एक बार अपने विवेक और अकल का इस्तेमाल करे ताकि वह शैतान की असलियत को समझ सके और किसी भूल में गलती न करे।

1. यहूदियत में मसीहवाद
2. Azazel का सन्दर्भ
3. शैतान शब्द के सभी कुरान में आये हुए जिक्र
4. मुहमद साहब की आत्मकथा
5. शैतानी आयतों पर अन्य वीडियोस
    a. Concept of Shaitan in Islam by Neeraj Atri and Shankar Sharan
    b. एक्स मूसलीम जफर की एक वीडियो
6. सांप (न की शैतना) के हवा को बहकाने का सबूत
7. यशायाह की किताब में लूसिफ़ेर शब्द का उल्लेख
8. Case of Eric Klaussen
9. https://en.wikipedia.org/wiki/Malin_Matsdotter
10. https://en.wikipedia.org/wiki/Botulf_Botulfsson
11. 1915 https://en.m.wikipedia.org/wiki/Sayfo
12. https://en.m.wikipedia.org/wiki/Armenian_genocide
13. अफ्रीकी देवता येशु ेलगभरा शैतान नहीं है
14. यज़ीदी लोगो का उत्पीड़न .
15. डायन या शैतान के पुजारी होने के शक में मरने वाली सूची

16. https://en.wikipedia.org/wiki/List_of_Indian_massacres_in_North_America
17. https://en.m.wikipedia.org/wiki/Alhambra_Decree